धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अघ	१	गत्याक्षेपे (अथवा) गतिनिन्दारभजवेपु	अंघतेमृगः	इ—ङ
अच	१	पूजने	अञ्चति (वा) अचते	ञ—इ
अच	१	गतिपूजनयोः	अञ्चतिकृष्णम्	उ इ
अञ्च	१०	व्यक्तायां वाचि	अञ्चयति	क
अञ्च	१	श्लेष्टोक्तौ	अञ्चति	उ
अञ्च	१	गतिपूजनयोः	अञ्चति (वा) अञ्चते	ञ उ
अञ्च	१०	विशेषणे	अञ्चयति	उ क
अछ	१	आयामे	अच्छति	इ
अज	१	गतौ (त) क्षेपे	अजति अजः	
अज	१०	भासि	अञ्जयति	क इ
अज	७	म्रक्षणकान्तिगतिषु	व्यनक्तिविद्यांसाधुः—अ-भ्यनक्तितैलेनागं.	ध उ जि
अट	१	गतौ	अटति पर्य्यटनं	
अट्ट	१	अतिक्रमे	अट्टते विप्रं यवन.	ङ
अट्ट	१०	अनादरे	अट्टयति अट्टः	क
अठ	१	गतौ	अठति	
अठ	१	गतौ	अण्ठते	इ ङ
अड	५	व्यापने	अड्नोति	न र
अड	१	उद्यमे	अडति धनाय	
अड्ड	१	अभियोगे	अड्डति ज्ञानं मुनिः	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अण	१	शब्दे	अणति	-
अण	४	प्राणने	अण्यते	य ङ
अत	१	सातत्यगमने	अतति लोकं हरिः आत्मन् आत्मा	
अत	१	बन्धने	अन्तति दुष्टं राजा	इ
अद	२	भक्षणे	अत्ति (वा अदति १) मोदकं कृष्णः	ल औ
अद	१	बन्धने	अन्दति दुष्टं राजा	इ
अन	४	प्राणने	अन्यते क्लेशेन भिक्षुः	य ङ
अन	२	प्राणने	आनिति प्राणः	ल घ
अन्ध	१०	दृक्क्षये	अन्धयति-अन्धः धा-धं.	क त
अब	१	शब्दे	अंबते शिशुः	ङ इ
अम्बर	११	संभरणे	अंबरयतियोपितंप्रियः	ट
अभ	१	शब्दे	अम्भते अम्भः	ङ इ
अभ्र	१	गतौ	अभ्रति अभ्रं	
अम	१	गतिभजनशब्देषु.	अमति	
अम	१०	रोगे	अमयति	
अम्भ्र	१	गतौ	अम्भ्रति	
अय	१	गतौ	अयते—अयस्	ङ
अरर	११	आराकर्मणि	अरर्यति रथकारो रथाय	ट
अर्क	१०	स्तवने	अर्कयति अर्कः	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अर्घ	१	हिंसायां (अथवा) मूल्ये	अर्घति अर्घः	
अर्च	१०	पूजायां	अर्चयते (तथा) अर्चयति	क ङ
अर्च	१	पूजायां	अर्चते (तथा) अर्चति	ङ
अर्ज	१०	प्रयत्ने (त) संस्कारे	अर्जयति धनं उपार्जनं	क
अर्ज	१	अर्जने	अर्जति धनं उपार्जनं	
अर्थ	१०	याचने	अर्थयते याचकोऽर्थअर्थना अर्थः	क त ङ
अर्द	१	हिंसायां	अर्दति (वा) अर्दते अर्दयति अर्दते	ञ
अर्द	१	पीडागतियाचनेषु	रक्षःसहस्राणिचतुर्दशार्दीत् अर्दति तीर्थयतिःशरद्घनं नार्दति चातकोपि	
अर्द	१०	हिंसायां	अर्दयति (वा) अर्दयते	क ञ
अर्ब्ब	१	हिंसायां गतौ च	अर्ब्बति	
अर्व्व	१	हिंसायां	अर्व्वति	
अर्ह	१	योग्यत्वपूजनयोः	अर्हति	
अर्ह	१०	पूजायां	अर्हयति—अर्हणा	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अल	१	भूषणपर्य्याप्तिवारणेषु	अलति (वा, अलते) केशं माल्येन अलति कंसाय कृष्णःअलतिचोरं राजा	ञ
अव	१	पालने (त) प्रीणने	अवति	
अवधीर	१०	अवज्ञायां	अवधीरयति	क त
अश	५	व्याप्तौ (त) संहतौ	अश्नुते विश्वं हरिः	न ङ ऊ
अश	९	भोजने	अश्नाति	ग
अंशः	१०	समाघाते	अंशयति द्रव्यं भ्रातृवर्गः अंशः	क त
अप	१	दीप्तिगतिग्रहेषु	अपाति	
अस	१	दीप्त्यादानयोः	वासुदेवं परित्यज्य योऽन्यदेवमुपासति (वा) उपासते	ञ
असू	११	उपतापे	असूयति	ट
असु	११	उपतापे	अस्यति	ट
असू	११	उपतापे	असूयति (वा) असूयते	ञ ट
अस	२	भुवि	अस्ति हरिः	ल
अस	४	क्षेपणे	अस्यति शरं शूरः अस्त्रं न्यासः	य ऊ इ र

1 Mss. संततिः for संनतिः.

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अंस	१०	समाघाते	(यथांश: प्रथमागतः)	क त
अह	१०	भासे	अंहयति	क इ
अह	१	गतौ	अंहते	ड इ
आछ	१	आयामे	आछति चरणं वामनः	इ
आंदोल	१०	आंदोलने	आंदोलयति	क त
आप	१	लंभने	आपति	ळ
आप	१०	लंभने	आपयति धनं जनः	क ळ
आप	५	व्याप्तौ	आप्नोति भुवनं विष्णुः	न ळ
आम	१०	रोगे	आमयति	क
आशास	२	इछायां	मोक्षमाशास्ते मुनिः	ड
आस	२	उपवेशने	आस्तेगृहे	ल ड नि
इ	२	गतौ	एति पथिक: आय	ल
इ	२	अध्ययने	वेदमधीते शिशु.	ल ड
इ	२	अधिउपसर्गे स्मरणे	अध्येति गोकुलं कृष्ण	ल
इ	१०	अधिउपसर्गेस्मृत्यां	अध्यापयति	क
इख	१	गतौ	एखति	
इख	१	गतौ	इंखति	इ
इग	१	गतौ	एगति	
इग	१	गतौ	इंगति	इ
इट	१	गतौ	एटति	
इद	१	परमैश्वर्ये	इन्दति इंदः इन्दुः	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
इध	७	दीप्तौ	इंधे वन्हिरिंधनेन	ञ ङ ई ञि
इभ	१	संघाते	इंभयते	क ङ इ
इर	११	इर्ष्यायां	ईर्य्यति (वा) ईर्य्यते	ञ ढ इ
इरज	११	इर्ष्यायां	इरजयति	ट
इरस्	११	ईर्ष्यायां	इरस्यति	ट
इल	१०	प्रेरणे	प्रेलयति इला	क
इल	६	गतौ (त) क्षये क्षेपे	इलति पांथः एलिष्यति इला एला	श
इला	११	विलासे	इलायति	ट
इव	१	व्याप्तौ	इन्वति विश्वं विष्णुः	इ
इष	४.	गतौ	इष्यति	
इष	६	वांछायां	हरिभक्तिमिच्छतिविप्रः इच्छा	श
इष	९	आभिक्ष्ण्ये	इष्णात्यन्नं शिशुः अन्वेषणं	ग
ई	४	गतौ	ईयते	ङ
ई	२	कान्ति गतिव्याप्ति क्षेपप्रजनखादनेषु	इति (इत्यादि)	ल.
ईक्ष	१	दर्शने	न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते निरीक्षणं निरीक्षिष्यामि	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ईक्ष्य	१	ईर्ष्यायां	ईक्ष्यति	
ईख	१	गतौ	ईखति	इ
ईज	१	गतौ	ईजते ईजांचक्रे	ह
ईज	१	गतौ (तथा) कुत्सायां	ईजति (वा) ईजते	ई ञ
ईड	१०	स्तवने	ईडयति	क
ईड	२	स्तुतौ	ईट्टेहरिंविप्रः	ल
ईत	१	बन्धने	इन्तति	इ
ईर	२	गतौ कंपनेच	ईर्त्ते समीर.	ल
ईर	१०	प्रेरणे क्षेपेच	ईरयति गजं यन्ता	क
ईर	१	प्रेरणे	ईरति	
ईर्ष्य	१	ईर्ष्यार्थे	ईर्ष्यति साधुं पापी ईर्षा	
ईश	२	ऐश्वर्ये	ईष्टेराजा ईशः ईश्वर. ऐश्वर्यं	ल ह
ईप	१	उञ्छे	ईपति	उ
ईप	१	गतिदर्शनहिंसादानेषु	ईषते पांथः	
ईह	१	चेष्टायां	समीहते धर्माय साधुः	ह
उ	१	शब्दे	अवते अविः	ह
उक्ष	१	सेचने	उक्षति उक्षा (उक्षन्)	
उख	१	शोषणालमर्थयोः	ओखति हिमेन वृक्षः	ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
उख	१	गतौ	ओखति उखा	
उख	१	गतौ	उंखति	इ
उच	४	समवाये	उच्यति वंधुना वंधुः ओक	य
उछ	६	उंछे	उंछति धान्यं	श इ
उछ	६	निवासे (अथवा) वर्जने वन्धने-समापनेअतिक्रमे	उछति	श ई
उज्झ	६	त्यागे	उज्झति त्वचं सर्पः	श
उठ	१	उपघाते	ओठति	
उन्द्	७	क्लेदने	उनत्ति गंगाजलेन गात्रं यतिःउदकः	ध ई
उद्ग	६	उत्सर्गे	उद्गति त्वचंसर्पः उद्गांचकार उद्गः	
उध्रस्	१०	उञ्छे	उध्रासयति कणान्भिक्षुः	क
उब्ज	६	आर्जवे	उब्जति कुब्जां कृष्णः	श
उभ	६	पूरणे	उभति धनेनार्थिनं कर्णः उभयं	श
उंभ	६	पूरणे	उंभति	श प
उरी	६	उद्यमने	उरते	ङ ई श
उरस्	११	बलार्थे	उरस्यति	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबंध.
उर्णु	२	आच्छादने	उर्णोति (वा) उर्णुते	ल इ
उर्द	१	मानै (तथा) क्रीडायां आस्वादे	उर्दतेस्वर्णं स्वर्णकारः	
उर्व	१	हिंसार्थां	उर्वति	इ
उष	१	दाहे (तथा) वधे	ओषति	
उषस्	११	प्रभातीभावे	उषस्यति	ट
उह	१	अर्दे	उंहति	इ
ऊठ	१	उपघाते	ऊठति	
ऊन	१०	परिहाणे	ऊनयति घृतं भोक्ता	क त
ऊय	१	तंतुसंताने (अथवा सेवने	ऊयते वस्त्रं तंतुवाय. ऊनं	इ ई
ऊर्ज	१०	बलप्राणधारणयोः	ऊर्जयतिधार्मिकः	क
ऊर्णु	२	आछादने	ऊर्णोति (तथा) ऊर्णुते गगनं मेघः	अ ल
ऊष	१	रुजायां	ऊषति रोगो देहं ऊषः ऊषरः	
ऊह	१	वितर्के	ऊहते शास्त्रे बुधः समूह अमुक्तमप्यूहति पंडितो जनः	ड
ऋ	१	प्रापणे	अरति यातिर्विष्णुं आर	
ऋ	३	गतौ	इयर्त्ति	लि र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ऋ	९	हिंसायां	ऋणोति	न र
ऋक्ष	९	जिघांसायां	ऋक्ष्णोति	न र
ऋच	६	संवरणेनुत्यां	ऋचति हरिं त्रुवःऋक् (वा)ऋच्	श
ऋछ	६	गतीन्द्रियप्रलयमूर्त्तिभावेषु	ऋच्छतिवृद्धःऋच्छतिशीतेनघृतं	श
ऋच्छ	१	गतौ	ऋच्छति	
ऋज	१	गतौ (अथवा) स्थैर्ये-उर्जने अर्जने	अर्जते	ङ
ऋज	१	अर्जे	ऋंजते	इ ङ
ऋण	८	गतौ	ऋणोति (वा) ऋणुते ऋतं	द ञ उ
ऋत	१	स्पर्द्धैनैश्वर्य्यघृणागतिषु	अर्त्तति	
ऋत	२	जुगुप्सायांकृपायांच	ऋतीयते दुर्बले धनी तीव्रः	ल
ऋध	९	वृद्धौ	ऋध्नोति धर्मेण त्रिमः ऋद्धः धा धं	न उ
ऋध	४	वृद्धौ.	ऋध्यति अर्धिध्यति ऋद्धः धा-धं	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ऋफ	६	हिंसायां (अथवा) दानश्लाघायांनिदायां युद्धे	ऋफति	श
ऋंफ	६	हिंसायां	ऋंफति	श
ऋप	१	आदानसंवरणयो॰	अर्पति (वा) अर्पते ऋपभ	
ऋप	६	गतौ	ऋपति ऋपि	श ई
ऋ	९	गतौ	ऋणाति	ग गि
एज	१	कम्पे	एजति	ऋ
एज	१	दीप्तौ	एजते	ऋ ङ
एठ	१	बाधने	एठते	ङ
एध	१	वृद्धौ	एधतेधर्मेणसाधु॰ एधः ऐधस्	ङ
एला	११	विलासे	एलायति	ट
एप	१	गतौ	एषते	ऋ ङ
ओख	१	शोषणालर्मथयो॰	ओखति	ऋ
ओज	१०	बलतेजसोः	ओजयति	क त
ओण	१	अपनयने	ओणाति धनं चौरः	
ओलड	१	उत्क्षेपे	ओलण्डति	इ
ओलड	१०	उत्क्षेपे	ओलण्डयति	क इ
कक	१	लौल्ये (अथवा) इछागर्वचापले	ककते काकः	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कक	१	गतौ	कङ्कते	इ ङ
कक्क	१	हसने	कक्कति	
कक्ख	१	हसने	कक्खति	ए
कक	१	हसने	कक्कति	
कख	१	हसने	कखति काखिः	
कग	१	संवरणे	कगति	ए
कच	१	बन्धने	कचते केशं नारी कचः विकचः	
कच	१	रवे	कचति	
कच	१	दीप्तौ	कञ्चते	इ
कट	१	गत्यां	कटति	इ
कट	१	गतौ	कटति	
कट	१	कृच्छ्रजीवने	कटति	
कट	१	वर्षावरणे	कटति कटेन गात्रं गोरक्षकः कटः	ए
कट	१	गतौ	कटति कण्टकं	
कठ	१	तंकने	कण्ठति	
कठ	१	शोके	कण्ठते	ङ इ
कठ	१	शोके	कण्ठति	इ
कट	१०	शोके	कंव्याति कण्ठः कण्ठं कण्ठा कण्ठी	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कड	१	मदे	कडति धनेन	
कड	१०	भेदे (तथा) रक्षणे	कण्डयति	क इ
कड	६	मदे (तथा) अदने	कडति धनेन मूर्खः	श
कड	१	मदे	कण्डते धनेन मूर्ख	ङ इ
कड	१	तुषापकरणे	कण्डते तंदुलं स्त्री	ङ इ
कड्ड	१	कार्कश्ये	कड्डतिकृपणा	
कण्डू	११	गात्रविघर्षणे	कण्डूयति (वा) कण्डूयते गात्रं	ञ ट
कण	१	गतौ	कणति काण कण	म
कण	१	शब्दे	कणति	ऋ
कण	१०	निमीलने	कणयति नेत्रं	क
कत्थ	१	श्लाघायां	कत्थते हरिकथां कवि	ङ
कत्र	१०	शैथिल्ये	कत्रयति	क त
कथ	१	श्लाघाया	कथते हरिकथां कवि	ङ
कथ	१०	वाक्यप्रबन्धे	कथयति काव्यं कथकः कथा	क त
कद	१	वैक्लव्ये	कदते	ङ
कद	१	वैक्लव्ये	कन्दते	ङ इ
कद	१	आह्वानरोदनयोः	कन्दति	इ
कन	१	दीप्तौ (त०) प्रीतिगत्योः	कनति दीपः	इ जि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबंध.
कप	१	चलने	कंपते	इ ङ
कत्र		वर्णे	(इतिकत्र	
कम	१	कान्तौ	कमते काम:	उ ङ
क्रम	१–१०	कान्तौ	कामयते	उ ङ
कम्व	१	गतौ	कम्वति	
कर्व	१	गत्यां	कर्वति	
कर्ज	१	व्यथने	कर्जति केशिनं कृष्ण:	
कर्ण	१०	भेदे	कर्णयति कर्ण:	क त
(आउप-सर्गे)		श्रवणे	आकर्णयति	
कर्त्त	१०	शैथिल्ये	कर्त्तयति	क त
कर्त्र	१०	शैथिल्ये	कर्त्रयति हृदयग्रन्थिं ज्ञानी	क त
कर्द		कुत्सिते शब्दे	कर्दति काक:	
कर्व	१	....	इतिकर्व	
कर्व	१	दर्पे-गतौच	कर्वति मूर्ख:	
कल	१०	संख्याने (त०)रुतौ	कलते धनं धनी काल:	ङ
कल	१०	संख्याने-गतौच	कलयति	क त
कल	१	क्षेपे	कलयति	क
कल्ह	१	अव्यक्तेशब्दे	कल्हतेस्वर;	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कव	१	वर्णे	कवतेकविःकाव्येन हरिं कवतेचित्रकारः	ऋ ङ
कश	१	हिंसायां	कशति (वा) कशते काशः कशाः	ञ
कष	१	हिंसायां	कषति समूलकाषं कष्टः टा टं	
कष	१०	हिंसायां	कषयति कष्टः टा टं	क
कस	१	गतौ	कसति विकस्वरः	ञ
कस	२	गतिशासनयोः	कंस्ते कंसं हरिः	ल ई ङ
कांक्ष	१	कांक्षायां	कांक्षति कांक्षा	इ
काच	१	दीप्तिबन्धनयोः	काञ्चते विभावसुः	इ ङ
काल	१०	कालोपदेशे	कालयति	क त
काश	१	दीप्तौ	काशते	ऋ ङ
काश	४	दीप्तौ	काश्यते	य उ ऋ ङ
कास	१	दीप्तौ	प्रकासते	ऋ ङ
कास	१	शब्दकुत्सायां	कासतेरोगी कासः (वा) काशः	ऋ ङ
कि	३	ज्ञाने	चिकेति	लि र
किट	१	गतौ (त०) भयभीपयोः	केटति किट्टं	लि र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कित	१	रोगापनयने	चिकित्सति रोगिणं वैद्यः चिकित्सा	
कित	३	ज्ञाने-निवासेच	चिकेत्ति	लि र
किल	६	शैत्यक्रीडनयोः	किलति देहं चन्दनेन-किलन केलिः	श
किल	१०	क्षेपे	केलयति	क
कीट	१०	बन्धने (त) वर्णे	कीटयति	क
कील	१	बन्धे	कीलति कृष्णं माता कीलः—कील्ला	
कु	१	शब्दे	कवते	ङ
कु	२	शब्दे	कौति	ल दु
कु	६	आर्त्तस्वरे	कुवते	श ङ शि
कु	९	शब्दे	कुनाति	ग
कुक	१	आदाने	कोकते	ए ङ
कुच	१	रोधसंपर्ककौटिल्यविलेखनेषु	कोचति	न
कुच	१	तारशब्दे	कोचति काशी	
कुच	१	संकोचने	संकोचति चन्द्रातपं-संकोचम्	
कुच	६	संकोचने	संकुचति पत्नी शालभयात्	श शि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुञ्च	१	कौटिल्याल्पीभाव योः	कुञ्चति खल--कुञ्चति मनो योगी	उ
कुज	१	स्तेयकरणे	कोजति नवनीतं कृष्ण.-	उ
कुज	१	अव्यक्तेशब्दे	कुञ्जति कुञ्जः (वा) निकुञ्जः	इ
कुट	१	वैकल्ये	कुण्टति	इ
कुट	६	कौटिल्ये	कुटति खलः कोटः	श शि
कुट	१०	प्रतापने छेदनेच	कोटयते	क ङ
कुट्ट	१	प्रतापने	कुट्टति कुट्टयति	
कुट्ट	१०	छेदने (त०) कुत्सायां	कुट्टयति कुट्टनी	क
कुटुम्ब	१०	भृत्यां पूरणे	कुटुम्बयते	क ङ
कुठ	१	आलस्ये प्रतिघातेच	कुण्ठति कुण्ठः कुण्ठता ठं	इ
कुड	६	बाल्ये (त०) अदने	कुडति ज्ञानी	श शि
कुड	१०	रक्षणे अनृतपरिभाषणेवेष्टनेच.	कुण्डयति	क इ
कुड	१	वैकल्ये	कुण्डति कुण्डं कुण्डं कुण्डी	इ
कुड	१	दाहे	कुडते कुंडं कुंभकारः कुंण्डं	इ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुण	१०	आमन्त्रणे	कुणयति	क त
कुण	६	शब्दोपकरणयोः	कुणति काकः	श
कुत्स	१०	अवक्षेपणे	कुत्सयते कुत्स्यं साधुः	क ङ
कुथ	४	पूतीभावे	कुथ्यति मृतकः	य
कुथ	१	हिंसासंक्लेशयोः	कुन्थति रावणं रामः रावणशरेण रामो न कुन्थति	इ
कुद्र	१०	अनृतभाषणे	कुन्द्रयति	क इ
कुन्थ कुथ	९	संक्लेशने (त.) श्लिपि	कुन्थाति रोगी	ग
कुप	१-१०	स्तुतौ (अथवा) स्मृते	कुंपति (वा) कुंपयति	कि
कुप	४	रोषे	कुप्यति (अथवा) कुप्यते कोपः	य इ र
कुप	१०	भाषार्थे द्युतौ	कोपयति	क
कुब	१	छादने	कुम्बति तृणेन गृहं कुंबा	इ
कुब	१०	छादने	कुंबयति	क इ
कुंभ	१०	छादने	कुंभयति	इ क
कुमार	१०	क्रीडायां	कुमारयति गोकुले कृष्णः कुमारः	क त

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
कुमाल	१०	कलौ	कुमालयति	क त
कुर	६	शब्दे	कुरति चुकोर	श
कुर्द	१	क्रीडायां	कूर्दते	ङ
कुल	१	बन्धुसहतौ	कोलति चुकोल	
कुश	४	श्लिषि	कुश्यति	य इ र
कुश	१–१०	द्युतौ	कुशति (वा) कुशयति	क कि इ
कुष	९	निष्कर्षे	कुष्णाति स्वर्णं स्वर्णकार कोष	ग
कुषुभ	११	क्षेपे	कुषुभ्यति कन्दुक विलासी	ट
कुस	४	श्लेषणे	कुस्यति कामिनीं कान्त	य इ र
कुस	१०	भाषार्थे (अथवा) भासने	कुसयति क इ	इ कि
कुह	१०	विस्मारणे विस्मापने	कुहयते कुहको मायया विश्व	क त ङ
कू	६	शब्दे (तथा) आर्तस्वरे	कुवते काक	श शि ङ
कूज	१	अव्यक्तेशब्दे(त०) हिक्कने	कूजति पक्षी	
कूट	१०	अप्रसादे परितापेच	कूटयते खल	क ङ
कूट	१०	दाहे	कूटयति	क त
कूट	१०	दाहमाने	कूटयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कूड	६	वसने	कूडति वासं नृपः कूडः	श शि
कूण	१०	संकोचे	कूणयते नेत्रं रोगी कूणः	क त ङ
कून	१०	संकोचे	कूनयते नेत्रं रोगी कूनीं	क त ङ
कूण				
कूप	१०	दौर्बल्ये	कूपयति	क त
कूर्द	१	क्रीडायां	कूर्दते	ङ
कूल	१	आवरणे	कूलति धर्मं साधुः कूलं	
कृ	५	हिंसायां	कृणोति (वा) कृणुते कृतं युगं	न ञ
कृ	८	करणे	करोति (वा) कुरुते कटकं कारुकः	द ञ डु
कृज	१	भर्जने	कृञ्जयते धान्यं	इ ङ
कृड	६	घनत्वे	कृडति	श
कृत	६	छेदने	कृन्तति वृक्षं	श प ई
कृत	७	वेष्टने	कृणत्ति तरुं कंटकेन मालाकारः कृत्तिः	ध ई
कृप	१	दयायां	कृपते हरिर्भक्तं	प म ङ
कृप	१०	दौर्बल्ये	कृपयति	क त
कृप-कृप	१	अवकल्कने	कल्पति	

धातु	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कृप-कॢप	१	सामर्थ्ये	कल्पते मोक्षाय	इ ऊ व ऌ
कृप-कॢप	१०	अवकल्कने	कल्पयति कल्पना	क
कृव	५	कृतिहिंसयोः	कृणोति	
कृवि	५	जिघांसायां	कृविणोति	न
कृश	४	तनूकरणे	कृश्यति देहं रोगः कृशः शा–शं	या इ र
कृष	१	आकर्षणे	कृषति	औ
कृष	६	विलेखने	कृषति (वा) कृषते क्षेत्रं कृषकः	श ञ औ
कॄ	६	विक्षेपे	किरति कुसुमं वायुः संकीर्णः र्णा–र्णं	श
कॄ	९	हिंसायां	कृणाति कीर्णः र्णा र्णं	ग ञ गि
कॄत	१०	संशब्दने	कीर्त्तयति परगुणं साधुः कीर्त्तिः	क
केत	१०	आमन्त्रणे श्रावणेच	केतयति श्राद्धाय मुनिं गृही–केतनं	क त
केप	१	गत्यां कंपनेच	केपते	ऋ ङ
केल	१	गतौ	केलति केलिः	ऊ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
केल	११	विलासे	केलयति विलासी कामात्	ट
केव	१	सेवने	केवते	ऋ ङ
कै	१	शब्दे	कायति	
क्नथ	१	हिंसायां	क्नथति	
क्नथ	१०	प्रतिहर्षे	क्नथयति	क म
क्नथ	१०	हिंसायां	क्नाथयति	क म
क्नद	१	वैक्लव्ये	क्नन्दते	ङ इ
क्नद	१	आव्हानरोदनयोः	क्नन्दति अक्रन्दीद्दशग्रीवः	इ
क्रन्द	१०	आग्रत्यये आक्रंदमातत्यरोदने	आक्रन्दयति शोकार्त्तः	क
क्रम	१	पादविक्षेपे	क्रमति	उ
क्रम	४	पादविक्षेपे	क्राम्यति (वा) क्राम्यते वामनोमहीं	च उ
क्रस	१	शब्दे	क्रसति	
क्री	९	द्रव्यविनिमये	क्रीणाति (वा) क्रीणीते तिलं यवैर्जनः क्रीतः तातं-क्रयः—क्रयविक्रयौ	ग ञ डु
क्रीड	१	विहारे	क्रीडति	ऋ
क्नूय	१	शब्दे उन्देच	क्नूयते नरः	ङ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुञ्च	१	कौटिल्याल्पी भावयोः	क्रुञ्चति खलः क्रुञ्चति मनो योगी	.
क्रुड	६	निमज्जने	क्रुडते	ङ श
क्रुध	४	रोपे	क्रुध्यति क्रोधः क्रुद्धः धा धं	य ऌ औ
क्रुन्थ	९	श्लिषि—क्लिषि	क्रुथ्नाति	ग
क्रुश	१	आह्वाने	क्रोशति क्रोष्टा	ञ औ
क्रु	६	गतौ	क्रुवते पान्थः	ङ श
क्रुय	१	शब्दे (अथवा) दुर्गन्धार्द्रत्वयोः	क्रुयते वायुना वृक्षः	इ ङ
क्नथ	१०	हिंसायां	क्नथयति	क
क्नथ	१	हिंसायां	क्नथति	
क्मर	१	हूर्छने	क्मरति खलः	
क्नश	१	दृतिभासनयोः	क्नशयति	उ म
क्नश	१०	भासने	क्नशति (वा) क्नशयति	इ कि
क्नू	९	शब्दे	क्नुणाति (वा) क्नूणाति	अ ग
क्रथ	१०	हिंसायां	क्रथयति	क म
क्रथ	१	हिंसायां	क्रथति	म
क्रद	१	वैक्लव्ये	क्रन्दते	ञि ङ इ
क्रद	१	आव्हानरोदनयोः	क्रन्दति	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्लिद	४	आर्द्रीभावे	क्लिद्यति पयसा पटः-क्लिन्नः-ना-नं क्लेदः	य ऊ इ र
क्लिद	१	परिदेवने	क्लिन्दति (वा) क्लिन्दते कामशोकेन रतिः	इ अ ञि
क्लप	१०	व्यक्तायांवाचि	क्लापयति अक्लपत्	क
क्लिव			(इति क्लिव)	
क्लम	४	ग्लानौ	क्लाम्यति पान्थः क्लान्तः ता-तं-क्लान्तिः	य उ भ ञि इ र
क्लव	१	भये	क्लवते	प म ङ
क्लीव(वा) क्लीब	१	अधार्ष्ट्ये	शोकेन क्लीबते नरः क्लीबः क्लीबं	ऋ ङ
क्लिश	४	उपतापे	क्लिश्यते पापी	य ङ उ
क्लिश	९	विबाधने	क्लिश्नाति धनिकं चोरः क्लेशः	ग ऊ
क्लु	६	गतौ	क्लुवते पान्थः	ङ श
क्लेश	१	बाधने (त.) वेबे-अव्यक्तायांवाचि	क्लेशते पापिनं रोगः क्लेशः	
क्वण	१	शब्दे	क्वणति क्वणः क्वाणः	
क्वथ	१	निष्पाके	क्वथतिवैद्यः क्वाथं	ए ज
क्मर	१	गतौ	क्मरति	ऊ
क्षज	१०	तंके कृच्छ्रजीवने	क्षञ्जयति	क इ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षज	१	दाने गतौ	क्षञ्जते	ई प म ङ
क्षज	१	दानगत्योः	क्षजते	प म ङ
क्षण	८	हिंसायां	क्षणोति (वा) क्षणुते वि प्रं खलः क्षतं क्षतजं	द ञ उ
क्षप	१०	कांतौ (अथवा) शाकौ (वा) क्षांतौ	क्षपयति चन्द्रः	क इ
क्षप	१०.	प्रेरणे	क्षपयति	क इ
क्षम	१	सहने	क्षमतेऽपराधं क्षमा	ङ जि प ऊ
क्षम	४	सहने	क्षाम्यति पुत्रापराधंपि ता-क्षमा	य उ इ र भ
क्षर	१	संचलने	क्षरति नदी क्षारः	ञ
क्षल	१	चलने	क्षलति	ञ
क्षल	१०	शौचे	क्षालयति गङ्गाजलेन गात्रं	क
क्षि	१	क्षये (तथा) ऐश्वर्ये	क्षयति (वा) क्षयते	ञ
क्षि	५	हिंसायां	क्षिणोति	न
क्षि	६	निवासे (त०) गतौ	क्षियति	श
क्षि	९	हिंसायां	क्षिणाति	ग प
क्षिण	८	हिंसायां	क्षिणोति (वा) क्षिणुते	द ञ उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षिद्	४	मोचने (तथा) स्नेहे	क्षिद्यति गां वन्याद्गोपः	य जि आ
क्षिद्(वा) क्ष्विद्	१	मोक्षे स्नेहे	क्षेदते	ऋ आ ङ जि
क्षिद्(वा) क्ष्विद्	१	अव्यक्ते शब्दे	क्षेदति क्षेदः	जा जि
क्षिप	४	प्रेरणे	क्षिप्यति बाणं वीरः क्षिप्रं	य औं
क्षिप	६	प्रेरणे	क्षिपति (त०) क्षिपते क्षिप्तः ता-तं	श उ औं
क्षिव	—	——	(इति क्षिव)	
क्षिव	१	निरसने	क्षेवति	उ
क्षिव	४	निरसने	क्षीव्यति	य उ
क्षी	१	हिंसायां	क्षयति	
क्षीज	१	अव्यक्तशब्दे (त) हिक्कने	क्षीजति पक्षी	
क्षीव	१	निरसने	क्षीवति	
क्षीव	१	मदे	क्षीवते येनन क्षीवः वा-न	ऋ उ
क्षु	२	शब्दे	क्षौति	लु इ
क्षुद्	७	संपेषणे	क्षुणत्ति (त०) क्षुन्ते क्ष-रिक्षां जनः-क्षोदः	श न उ इ औं

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षुध	४	बुभुक्षायां	क्षुध्यति भिक्षुः क्षुध् क्षुधा क्षुधित'–ता तं	य ऌ औ
क्षुभ	१	सचलने	क्षोभते क्षोभः	ङ
क्षुभ	४	सचलने	क्षुभ्यति युद्धेन शूर क्षोभ क्षुब्ध धा-धं	य
क्षुभ	९	संचलने	क्षुभ्नाति	ग
क्षुर	६	छेदने (त०) विलेखे खननेच	क्षुरति क्षुरः	श
क्षेड	१०	भक्षणे	क्षेडयति	क त
क्षेव	१	निरसने	क्षेवति	उ
क्षै	१	क्षये	क्षायति	
क्षोट	१०	क्षेपे	क्षोटयति (वा) क्षोटयते	कि
क्ष्णु	२	अपनयने	क्ष्णुते दोष	ऌ ङ
क्ष्णु	२	तेजने	क्ष्णौति शास्त्रं	ऌ
क्ष्माय	१	विधूनने	क्ष्मायते वायुर्वृक्षं	ई ङ
क्ष्मील	१	निमेषणे	क्ष्मीलति	
क्ष्विड	१	स्नेहमोक्षयोः	क्ष्वेडति	
क्ष्वेल	१	स्नेहमोक्षयोः चलनेच	क्ष्वेलति	ऊ
खक्ख	१	हासे	खक्खति	
खच	१०	बन्धने	खचयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खच	६	भूतिपूत्योरुत्पत्तौ	खचति	श
खच	९	भूतप्रादुर्भावे	खच्नाति	ग
खच	१	मन्थने	खजति जलं वराहः	
खज	१	गतिवैकल्ये	खञ्जति खञ्ज खञ्जनः	इ
खट	१	कांक्ष्ये	खटति धनं लुब्धः खट्वा	
खट्ट	१०	वृतौ	खट्टयति	क
खड	१	भेदे	खण्डति	इ
खड	५	मन्थे	खण्डं खण्डं खण्डते घटं कृष्णः	इ ङ
खड	१०	भेदे	खण्डयति खण्डः (वा) खण्डं	क इ
खड	१०	भेदे	खाडयति	क
खद	१	हिंसायां (त०) स्थैर्य्ये	खदति रिपुं	
खद	१०	संवरणे	खादयति	क
खन	१	अवदारणे	तृषितो जान्हवीतीरे कूपं खनति दुर्मतिः (वा) खनते खनिः खानी (वा) खातिः खनित्रं	उ
खम्ब	१	गतौ	खम्बति	
खर्घ	१	गत्यां	खर्घति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खर्ज	१	मार्जने (त०) व्यथाया	खर्जति गात्रं . खर्जूरः	
खर्द	१	दशने	खर्दति मूलकं बालः	
खर्ब्ब	१	गतौ	खर्ब्बति खर्ब्बं बा-बं	
खर्व्व	१	दर्पे	खर्व्वति मूर्खः खर्व्वः वा-र्वं	
खल	१	चलने संचयेच	खलति खलः	
खव	९	भूतप्रादुर्भावे	खौनातिजनः	ग
खष	१	वधे	खषति	
खाद	१	भक्षणे	खादति	ऋ
खिद	४	दैन्ये	खिद्यते खेदः	य ड
खिद	६	परिघाते	खिदति साधुं दमी खेदः	श प औ
खिद	७	दैन्ये	खित्ते भिक्षुः	ध ड औ
खु	१	शब्दे	खवते	ङ
खुज	१	स्तेयकरणे	खोजति नवनीतं कृष्णः	उ
खुड	१	भेदे	खोडति	
खुड	१	भेदे	खुण्डति	इ
खुड	६	संवरणे	खुडति धनं धनिकः	श
खुड	१	खञ्जे	खुण्डते	इ ङ
खुड	१०	खण्डने	खुण्डति (वा) खुण्डयति	कि इ
खुर-क्षुर	६	छेदने	खुरति धान्यं कृषकः खुरः क्षुरः	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खुर्द,खूर्द	१	क्रीडायां	खूर्दते	ङ
खेट	१०	भक्षणे	खेटयाति मांसं आखेटः खेटः टा-टं.	क त
खेट-खिट	१	उत्त्रासने	खेटति केशी गोष्टं आखेटकः खेट	
खेड	१०	भक्षणे	खेडयति	क
खेल	१	गतौ	खेलति खेला	उ
खेव	१	सेवने	खेवते	ऋ ङ
खै	१	खेदने	खायति धननाशेन लोकः	
खै	१	स्थैर्य्ये खननहिंसयोः	खायति	
खोट	१	गत्याघाते	खोटति	ऋ
खोट	१०	क्षेपे भक्षणेच	खोटयाति शरं शूरः	क त
खोड	१	गति प्रतिघाते	खोडति खोडः–डा-डं	ऋ
खोड	१०	क्षेपे	खोडयति	क त
खोर	१	गतिप्रतिघाते	खोरति	ऋ
खोल	१	गतिप्रतिघाते	खोलति	ऋ
ख्या	२	प्रकथने	ख्याति गुणेन लोकः ख्यातिः	ळ
गग्घ	१	हसने	गग्घति	
गज	१	शब्दे-मदेच	गजति गजः	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गज	१	स्वने	गञ्जति	इ
गड	१	सेचने	(डलयोरैक्यात्) गलति जलं गाडः गाल गडक.	म
गड	१	वदनैकदेशे	गण्डति गण्डः	इ
गण	१०	संख्याने	गणयति गणको ग्रहणम्	क त
गद	१	व्यक्तायांवाचि	गदति	
गद	१०	मेघशब्दे	गदयति घनः	क त
गद्गद	११	वाक्स्खलने	गद्गद्यति	ट
गन्ध	१०	अर्दने	गन्धयते लुब्धो वदान्यं	क ङ
गम्ब	१	गतौ	गम्बति	
गम	१	गतौ	गच्छति	ऌ औ
गर्घ	१	गत्या	गर्घति गर्घ	
गर्ज	१	शब्दे	गर्जति	
गर्ज	१०	शब्दे अभिकाक्षायाम्	गर्जयति	क
गर्द	१	शब्दे	गर्दति सिंहः	
गर्द	१०	शब्दे अभिकांक्षायां	गर्दयति सिंहः	क
गर्ध	१०	अभिकांक्षायां	गर्धयति भक्ष्यं भिक्षुः	क
गर्व	१	गतौ	गर्वति	
गर्व	१	दर्पे	गर्वति मूर्खः गर्वः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गर्व्व	१०	माने	धनैर्गर्व्वयते मूर्खः गर्वः	क त ङ
गर्ह	१०	विनिन्दने	गर्हयति	क
गर्ह	१	विनिन्दने	गर्हति	
गर्ह	१	कुत्सने	गर्हते पापं गर्हा	ङ
गल	१०	स्रावे	गलयते	क ङ
गल	१	अदने (स्रावे)	गलति मूलकं गलति जलं	
ग्राम	१०	आमन्त्रणे	ग्रामयति	
गल्ह	१	कुत्सने	गल्हते गल्हः	क
गवेष	१०	अन्वेषणे	गवेषयति हरिणं नरः गवेषणा	ङ क त
गह	१०	गहने	गहयति गहनः ना-नं-गहनं	
गा	३	स्तुतौ जन्मनि	जिगाति देवान् जिगाति सुप्रद्युः	लि र
गा	१	गतौ	गाते	ङ
गाध	१	प्रतिष्ठालिप्सयोः ग्रन्थे	गाधते धनं गाधिः गाधः	ऋ ङ
गाह	१	विलोडने	गाहते जलं वराहः	ङ ऊ
गु	१	शब्दे	गवते	ङ
गु	६	विष्ठोत्सर्गे	गुवति	श शि औ
गुज	१	कूजने	गोजति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गुज	६	शब्दे	गुजति	श शि
गुज	१	अव्यक्ते शब्दे	गुञ्जति पक्षी गुञ्जा	इ
गुठ	१०	वेष्टे	गुण्ठयते	क इ
गुड	६	रक्षायां	गुडति गुडः	
गुड	१०	वेष्टने (त०) रक्षणेचूर्णीकरणेच	गुण्डयति	क इ
गुण	१०	आमन्त्रणे	गुणयति गुणः	क त
गुद	१	क्रीडायां	गोदते शिशुः	ङ
गुध	१	क्रीडे	गोधते	ङ
गुध	४	परिवेष्टने	गुध्यति	य
गुध	९	रोषे	गुध्नाति	ग
गुप	१	गोपने	गोपते पापं जुगुप्सा	ङ
गुप	४	व्याकुलत्वे	गुप्यति लोकं कोपः	य इ ऋ
गुप	१	रक्षणे	गोपायति भुवं राजा	ऊ
गुप	१०	भाषार्थे (अथवा) भासि	गोपयति	क
गुफ	६	ग्रन्थे	गुफति माल्यं मालाकारः	श
गुंफ	६	ग्रंथे	गुंफति माल्यं मालाकारः	श
गुर	१	उद्यमे	गोरति माता बद्धुं हरिं	
गुर्	६	उद्यमे	गुरते धनाय वैश्यः	श शि ङ ई
गुर्द	१	निकेतने-क्रीडायां	गुर्दते	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गेष	१	अन्वेछायां	गेषते मुक्तिं मुनिः	ऋ ङ
गैं	१	शब्दे	गायति	
गोष्ट	१	संघाते	गोष्टते धान्यं	ङ
गोम	१०	उपलेपने	गोमयति गोमयेन भूमि सज्जा	क त
ग्रथ	१	कौटिल्ये-संदर्भे	ग्रथते	ङ
ग्रथ	१	कौटिल्ये	ग्रंथते चित्तं खलः	इ ङ
ग्रन्थ	९	संदर्भे	ग्रथ्नाति ग्रन्थं कविः	ग
ग्रन्थ	१	संदर्भे	ग्रंथति	
ग्रन्थ	१०	संदर्भे-बन्धनेच	ग्रंथयति	क
ग्रस	१	ग्रहणग्रासयोः	ग्रसति	
ग्रस	१	अदने	ग्रसते ग्रासं भिक्षुः	ङ उ
ग्रस	१०	अदने ग्रासे	ग्रासयतिचन्द्र राहुः	क
ग्रह	१–१०	आदाने	ग्रहति (वा) ग्राहयाति	कि उ
ग्रह	९	उपादाने	गृह्णाति (वा) गृह्णीते धर्मं धार्मिकः गृहीत. ता ता तं.	ग उ
गुर्व	१	उद्यमने	गूर्वति फलार्थी फलाय	ई
ग्रुच	१	चौर्ये	ग्रोचति नवनीतं कृष्णः	उ इर्
ग्लस	१	अदने	ग्लसते	ङ उ
ग्लह	१–१०	आदाने	ग्लहति (वा) ग्लहयति	कि उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
घु	१	शब्दे	घवते	ङ
घुट	१	परिवर्त्तने	घोटते प्रवासी	ङ
घुट	६	प्रतिघाते	घुटति गज घोटक	श शि
घुट	६	व्याघाते रक्षे	घुटति	श शि
घण	१	भ्रमणे	घोणते तीर्थ मुनि	ङ
घुण	६	भ्रमणे	घुणति भिक्षार्थे भिक्षु घुण	श
घुण	१	ग्रहणे	घुणते	ङ इ
घुर	६	भीमार्त्तिशब्दे	घुरति भयेन शिशु घोर रा-र-घोर	श
घुर घूर	४	हिंसाज्ञानयो	घूर्य्यते	य ङ इ
घुष	१	वधे	घोषति	इ र्
घुष	१०	वधे	घोषयति	क इ र्
घुष	१	शब्दे	माधुर्य्ये घोषति गोविंद घोष	इ र्
घुष	१०	शब्दे	घोषयति नीति जनेषु राजा घोषणा	क इ र्
घुष	१	घृषी कान्तिकरणेन	घुषते	इ ङ
घूर्ण	१	भ्रमणे	निद्रया घूर्णति क्षीब	
घूर्ण	६	भ्रमणे	घूर्णति भिक्षार्थं भिक्षु	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
घृ	३	क्षरणदीप्त्योः	जिघर्ति जलं जिघर्ति घृतं घरति	ल इ र्
घृ	१०	क्षरणदीप्त्योः प्रसह्यकरणेच	घरयति	क
घृ	१	सेचने	घरति दुग्धं पयसा	
घृण	१	ग्रहणे	घृण्णते	इ ङ
घृण	८	दीप्तौ	घृणोति (वा) घृणुते	द ञ उ
घृष	१	संघर्षे	घर्षति काष्टं मूर्खः	उ
घोर	१	गतिचातुर्य्ये	घोरत्यश्वः	
घ्रा	१	गन्धोपादाने	जिघ्रति पुष्पं भ्रमरः	
ङु	१	ध्वनौ	ङवते	ङ
चक	१	दीप्तौ प्रतिघात-तृप्त्योः	चकति (वा) चकते	ञ म
चक	१	दीप्तौ	चकते विद्यया विप्रःचाकः	ङ
चक्क	१०	व्यसने	चक्कयति	क
चकास	२	दीप्तौ	चकास्ति.	ल ऋ लु
चक्ष	२	व्यक्तायांवाचि	आचष्टे धर्मगुरुः	ल ङ
चघ	५	घातने	चघ्नोति	न
चञ्च	१	गत्यां	चञ्चति	उ
चट	१०	भेदे (त०) वधे	चाटयति	क
चट	१	भेदे	चटति	

धातु	गण	अर्थः	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चड	१	कोपे	चण्डते चण्डे चण्डी	ङ इ
चट	१०	कोपे	चण्डयते	क इ ङ
चण	१	शब्दे	चणति	
चण	१	हिंसागत्योः	चणति	मि
चण	१	दाने	चणति चणकः	म
चत	१	याचने	चतते (वा) चतति चातकः	ञ उ
चद	१	याचने	चदते (वा) चदति	ए ञ
चद	१	आल्हादने दीप्तौ च	चन्दति—चन्द्रः-चचन्द—चन्द्रोज्वलचारुचित्तौ विदर्भराजो मिलने मुरारेः	इ
चन	१	हिंसायां-श्रद्धायांच	चनति	म
चन	१	शब्दे	चनति	
चप	१	सान्त्वने	चपति शिष्यं	
चप	१०	कल्के	चपयति	क म
चप	१०	गत्यां	चपति (वा) चपयति	इ कि
चम	१	अदने	चमति (वा) आचमति	उ
चम	१	अदने	आचामयति जलं पथिकं साधुः	उ
चम	५	भक्षे	चम्नोति	न उ र
चम्ब	१	गत्यां	चम्बति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चय	१	गतौ	चयते	ङ
चर	१	गतौ (त०) अदने	चरति चारः	
चर	१०	असंशये	विचारयति धर्मं पंडितः विचारणा	क
चर्ब	१	गत्यां	चर्बति	
चर्च	१–१०	परिभाषणतर्जनयोः	चर्चते (वा) चर्चयते	ङ कि
चर्च्च	६	परिभाषणतर्ज्जनयोः	चर्च्चति	श
चर्च्च	१०	अध्ययने	चर्च्चयते वेदं शिशुः चर्चा.	क ङ
चर्व्व	१	गतौ	चर्व्वति	
चर्व्व	१	अदने	चर्व्वति (वा) चर्व्वयति–चर्व्वणं	कि
चल	१	कंपने	चलयति (वा) चालयति तरुं कपिः	म
चल	६	विलसने	चलति भर्त्रा नारी	श
चल	१०	भृत्यां	चलयति	क
चप	१	वधे	चपति	
चप	१	भक्षणे	चपति (वा) चपते चपकं	ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चह	१	परिकल्कने	चहति तीर्थे लोकः	
चह	१०	परिकल्कने	चहयति कपटी	क त
चाय	१	पूजानिशामनयोः	चाययति (वा) चायते धर्मं.	ऋ ञ
चि	१	हिंसायां	चयति	र इ र् ण
चि	१	चयने	चयति (वा) चयते	ञ
चि	५	चयने	चिनोति (वा) चिनुते धान्यं कृषकः	न ञ
चि	१०	चयने	चययति	क मि
चिक्क	१	आर्त्तौ	चिक्कयति	क
चिट	१	प्रेष्ये	चेटति भृत्यं चेटः चेटी	
चिट	१०	प्रेष्ये	चिटयति	क
चित	१	संज्ञाने	चेतति मलये हरिश्चेतति चिचेत रामस्तत्क्लेशं	ई
चित	१०	स्मृत्यां	चिन्तयति चिन्ता	क इ
चित	१०	संवेदने	चेतयते	क ङ
चित्र	१०	चित्रीकरणे	चित्रयति पटं चित्रकारः चित्रः त्रा—त्रं—चित्रं	क त
चिल	६	वसने	चिलति चैलेन मुखं वधुः	श
चिल्ल	१	शैथिल्ये (त०) हावकृतौ	चिल्लति साधुर्दयया चिल्लः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चीक	१–१०	आमर्षणे मर्षणे	चीकति (वा) चीकयति	कि
चीव	१	आदान संवरणयोः	चीवति (वा) चीवते	ऋ ञ
चीभ	१	कथने	चीभते	ऋ ङ
चीय	१	संवृत्यादानयोः	चीयति (वा) चीयते	ऋ ञ
चीव	१०	भाषार्थे-दीप्तौ	चीवयति	क
चीव	१	ग्रहसंवृत्योः	चीवते	ऋ ङ
चीव	१	आदान संवरणयोः	चीवति (वा) चीवते	ऋ ङ
चुक्क	१०	व्यसने	चुक्कयति	क
चुच्य	१	अभिषवे	चुच्यति	ई
चुट	६	छेदे	चुटति	श शि
चुट	१०	छेदने-भेदनेच	चोटयति धान्यं	क
चुट	१०	छेदने	चुटयति केशं शिशुः	क इ
चुट	१	अल्पीभावे	चोटति वेदः कलौ	
चुट	१	अल्पीभावे	चुण्टति	इ
चुट्ट	१०	अल्पीभावे (अ-थवा) संहतौ	चुट्टयति शोकेन देहः	क
चुड	१	अल्पीभावे	चुण्डति	इ
चुड	१०	छेदने	चुण्डयति	क इ
चुड	६	संवरणे	चुडति	श
चुड्ड	१	हावकरणे	चुड्डति नटी	
चुण	६	छेदे	चुणति शाकं भिक्षुः	श शि

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चुत	१	आसेचने	चोतति	इ र्
चुद	१	निशाने	चुन्दति (वा) चुन्दते	उ इ र ञ इ
चुद	१०	संचोदने	चोदयति चोदना	क
चुप	१	मंदायां गतौ	चोपतिखलः	
चुब		वक्रसंयोगे	चुंबति (वा) चुंबयति	इ कि
चुर	१-१०	स्तेये	चोरति (वा) चोरयति चोरः	कि
चुर	४	दाहे	चूर्य्यते	य ड ई
चुरण	११	चौर्य्ये	चुरणयति	ट
चुल	१०	निमज्जने समुच्छ्रायेच	चोलयति गंगायां मुनिः चोलः चोला	क
चुछ	१	हावकरणे	चुछति प्रियेण नारी चुछी	
चुलुम्प	१	लोपे	चुलुम्पति	
चूण	१०	संकोचे	चूणयति चूणः	क
चूर्ण	१०	पेषणे-संकोचेच	चूर्णयति	क
चूप	१	पाने	चूषति स्तनंशिशुः	
चृत	६	हिंसायां (त०) ग्रन्थे	चृतति चचर्त	श ई
चृत	१-१०	संदीपने	चर्तति (वा) चर्तयति	कि
चृप	१०	संदीपने	चर्पयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चेष्ट	१	चेष्टायां	चेष्टते पठितुं चेष्टा	ङ
चेल, त्रेल्ल	१	गतौ	चेलति चेलं	ऊ
च्यु	१	गतौ	च्यवते	ङ
च्यु	१०	हाससहनयोः	च्यावयति	क
च्युत	१	आसेचने	च्योतति वह्नौ हविः, अच्युतः, च्योतः	इ र्
च्युस	१०	हानौ-सहनेच	च्योसयति	
छद	१	अपवारणे	छदति	
छद	१०	अपवारणे	छादयति	क
छद	१०	संवृत्तौ	छदयाति	क त
छद	१०	उर्ज्जने	छदयाति पुत्रं घृतेन पिता	क इ र् म
छद	१०	संवरणे	छन्दति (वा) छन्दयति	कि इ
छप	१०	गतौ	छंपयति	क इ
छम	१	अदने	छमति	उ
छर्द	१०	वमने	छर्दयत्यन्नं रोगी	क
छिद	७	द्वैधीकरणे	छिनत्ति (वा) छिन्ते तृणं-शिष्यः छेदः	ञ इ र औ
छिद्र	११	विभेदे	छिद्रयाति कलशं जनः छिद्रं	क न
छुट	६	छेदे-संहतौ	छुटति	श शि
छुट	१०	छेदने-संहतौ	छोटयाति	क
छुड	६	संवरणे	छुडति	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
छुप	६	स्पर्शे	छुपति	श औ
छुर	६	छेदे (त०) लोपे	छुरति	श शि
छर्द	१	संदीपने	छर्दति	ई
छर्द	१०	संदीपने	छर्दयति तेजोऽर्जुनस्य हरिः	क कि ई
छृद	७	देवनद्युतिवमनेषु	छृणत्ति (वा) छृन्ते	ध ञ उ इर्
छृप	१०	संदीपने	छर्पयति	क
छेद	१०	द्वैधीकरणे	छेदयति तरुं तक्षा	क त
छो	४	छेदने	छ्यति धान्यं कृषाणः	य
छ्यु	४	गतौ	छ्युयते	ङ
जक्ष	१	दानगत्योः	जक्षते	इ ङ म
जक्ष	२	भक्षहसनयोः	जक्षिति मूलकं	ल क्ष लुध
जज	१	युद्धे	जजति	
जज	१	युद्धे	जंजति	इ
जट	१	संहतौ	जटति जटा	
जन	३	जनने	जजन्ति बीजं सत्क्षेत्रे—जन—जन्मा	लि म र
जन	४	प्रादुर्भावे	बीजादंकुरो जायते	य म इ ङ
जन	१०	जनने	जनयति विश्वं विष्णुः	
जप	१	मानसे	जपति—जपः—जापः—	
जप	१०	संघाते	जापयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जभ	१	यमने	जभति	
जभ	१	यमने	जम्भति	इ
जभ	१	गात्रविनामे	जभते	ङ
जभ	१	गात्रविनामे	जंभते जंभः	इ ङ
जभ	१०	नाशने	जंभयति जंभं शत्रुः	क
जम	१	अदने	जमति	उ
जर्च	१	परिभाषणतर्जनयोः	जर्चति	अ
जर्झ	१	परिभाषणतर्जनयोः	जर्झति	अ
जर्ज	१	परिभाषणतर्जनयोः	जर्जति	अ
जर्स	१	परिभाषणतर्जनयोः	जर्सति	अ
जर्त्स	१	परिभाषणतर्जनयोः (न०) इति	जर्त्सति	
जल	१	अपवारणे	जलति	अ
जल	१०	अपवारणे	जालयति [illegible]	क
जल्प	१	व्यक्तायां वाचि	जल्पति	
जष	१	हिंसायां	जषति (वा) जषेत्	अ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जस	४	मोक्षणे	जस्यति वत्सं गोपः	उ इ र य
जस	१०	हिंसायां (त०) अनादरे	जासयति रिपुं राजा	क
जस	१०	रक्षणे	जंसयति	क इ
जस्	१०	ताडने	जासयति (वा) जसति	उ कि
जागृ	२	निद्राक्षये	जागर्त्ति मुनिः	ल लु
जि	१	जये अभिभवेच	जयति कृष्णः जयः	
जिम	१	अदने	जेमति	उ
जिरि	५	हिंसायां	जिरिणोति	न र
जिव	१	प्रीणने	जिंवति	इ
जिवि	५	जिघांसायां	जिविनोति	न
जिप	१	सेचने	जेपति	उ
जीव	१	प्राणधारणे	जीवति हरिकथया साधुः जीवः	ऋ
जु	१	गतौ	जवते जवः	ङ
जु	१	अंहसि	जवति	र
जुग	१	त्यागे	जुंगति	इ
जुड	६	बन्धे	जुडति जनः सूत्रेण वस्त्रं, जोडः, जोडनं	श शि
जुड	६	गतौ	जुडति जुजोड	श
जुड	१०	प्रेरणे	जुण्डयति भृत्यं राजा	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जुत	१	भासने	जोतते विद्यया नरः	ऋ ङ
जुन	६	गतौ	जुनति	श
जुल	१०	पिषि	जोलयति	क
जुष	१-१०	परितर्कणे (त०) तृप्तौ	जोषति (वा) जोषयति धूर्त्तचतुरः	कि
जुष	६	प्रीतिसेवनयोः	जुषते हरिंभक्तः	श ङ ई ञि
जूर	४	जीर्णे हिंसावयोहान्योः	जूर्य्यते वृद्धः	य ई
जूर्व	१	वधे	जूर्वति	ई
जूष	१	हिंसायां	जूषति (वा) जूषते	ञ
जृ	१	न्यक्कारे	जरति	
जृभ	१	गात्रविनामे	जर्भते	ङ ई
जृभ	१	गात्रविनामे	जृंभते (त०) जृंभति–जृंभः–जृंभ जृंभं जृंभणं	इ ङ
जॄ	४	वयोहानौ	जीर्यति–जीर्णः–र्णा–र्णं	य प म इर्
जॄ	९	वयोहानौ	जृणाति जरया जनः जीर्णः–र्णा–र्णं	ग गि
जॄ	१-१०	वयोहानौ	जरति (वा) जरयति	क कि
जेष	१	गतौ	जेषते	ऋ ङ
जेह	१	यत्ने	जेहते	ऋ ङ
जै	१	क्षये	जायति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
ज्रि	१	अभिभवे	ज्रयति धर्मं कलिः	
ज्री	९	ज्याने	ज्रिणाति	ग गि
ज्ञा	९	अवबोधने	जानाति	ग
ज्ञा	१०	मारणतोषणनिशामनेषु (त०) स्तुतौनिशाने च	ज्ञपयति रिपुं राजा ज्ञपयति मित्रं नरः ज्ञपयति पांडित्यं सभायां	क म
ज्ञा	१०	नियोजने	ज्ञापयति भृत्यं राजा	क
ज्ञप	१०	मारणतोपण निशामनेपु स्तुतौच	ज्ञपयति	क म
ज्या	९	जरायां	जिनाति	ग गि
ज्यु	१	गत्या	ज्यवते	ङ
ज्युत	१	भासेन	ज्योतति	इ ऱ्
ज्युत	१	भासने	ज्योतते	ऋ ङ
ज्यो	१	नियमव्रतादेशोपानीतिषु	ज्यवते	ङ
ज्वर	१	रोगे	ज्वरत्यजीर्णेन ज्वरः	म
ज्वल	१	दीप्तौ	ज्वलति वह्निः ज्वाला-	ज
ज्वल	१	दीप्तौ	ज्वलति (वा) ज्वालयति चित्तं क्रोधः प्रज्वालयति	
झट	१	संघाते	झटति केशः झटा	——

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
झम	१	अदने	झमति	उ
झर्च्च	६	परिभाषणतर्जनयोः	झर्चति	श
झर्छ	६	परिभाषणतर्जनयोः	झर्छति	श
झर्झ	१	परिभाषणतर्जनयोः	झर्झति झर्झरः	श
झर्झ	६	परिभाषणतर्जनयोः	झर्झति	——
झष	१	ग्रहे	पिधाने–झषति (वा) झषने	ञ
झष	१	हिंसायां	झषति झषः	——
झु, झ्यु	१	गतौ	झवते	ङ
झूष	१	हिंसायां	झूषति	——
झॄ	४	वयोहानौ	झीर्य्यति–झीर्णः–णा–णं	य प
टक	१०	बन्धे	टणकयति–टणकः-विटणकः	क इ
टल	१	विक्लवे	टलति	ञ
टिक	१	गत्यां	टेकते	ऋ ङ
टिप	१०	क्षेपे	टेपयति	क
टीक	१	गत्यां	टीकते	ऋ ङ
टीक	१	गत्यां	टीकते	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ड्वल	१	विक्लवे	ड्वलति	ज
डप	१०	महतौ	डपयते	क ङ
डप	१०	मंहतौ	डंपयते	क इ ङ
डब	१०	क्षेपे	डंबयति	क इ
डिप	४	क्षेपे	डिप्यति	य इर्
डिप	६	क्षेपे	डिपति शरं	श शि
डिप	१०	क्षेपे	डेपयति	क
डिप	१०	महतौ	डेपयते	क ङ
डिप	१०	मंहतौ	डिंपयते	क इ ङ
डिब	१०	क्षेपे	डिंबयति	क इ
डिभ	१०	संघाते	डिंभयते	क इ ङ
डी	४	गतौ	डीयते पक्षी	य ङ
डी	१	विहायसागतौ	डयते गगने हंस , प्रडी-नं, संडीनं, उड्डीनं	
डुब	१०	अर्दने	डुंबयति	क इ
डुभ	१०	संघाते	डुंभयते	क इ ङ
णक्ष	१	गतौ	नक्षति	
णख	१	गतौ	नखति	
णख	१	गतौ	नखति प्रयागात् काशीं	इ
णट(इति)नट	१	नृत्ये	नाटयति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णट	१	नृत्ये (त.) हिंसायां	णटति	
णद	१	म्लिष्टोक्तौ	नदति नद	
णद	१०	भाषार्थे (वा०) भासार्थे	नादयति	क
णभ	९	हिंसायां	नभ्नाति	ग
णभ	१	हिंसायां	नभते नाभिः	ल ङ
णभ	४	हिंसायां	नभ्यति	य
णम(वा) नम	१	प्रह्वशब्दे	नमति, प्रणमति गुरुं शिष्यः, प्रणामः	
णय	१	रक्षणे (त०) गतौ	नयते	ङ
णर्द्द	१	,,	(इति नर्द्दः)	
णल	१	बन्धे-गन्धे च	नलति	ञ
णश	४	अदर्शने	नश्यति कामः नाशः	य ल ऊ
णस	१	कौटिल्ये	नसते नक्रः	
णह	४	बन्धने	नह्यति (वा) नह्यते	य ञ औ
णाथ	१	,,	(इतिनाथ)	
णाध	१	ऋ	(इतिनाथ)	ऋ
णास	१	शब्दे	नासते नासा	ऋ ङ
णिज	३	शौचे	नेनेक्ति (वा) नेनिक्ते जलेन वस्त्रं निर्णजनं	ञि.इर.स, औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णिज	२	शुद्धौ	प्रणिंक्ते जलेन गावं	ल इ क
णिद	१	कुत्सायां (त.) सन्निधौ	नेदति (वा) नेदते पापिनं साधुः निद्यते	ऋ इ
णिद्	१	कुत्सने	निन्दति इति निद	इ
णिल	६	गहने	निलति	श
णिव	१	सेके	निवति	इ
णिश	१	समाधौ	नेशतिमुनि. निशा	
णिष	१	सेके	नेषति	उ
णिस	२	चुंबने	निंस्ते हरिमुखं नन्दः	ल ङ इं
णी	१	प्रापणे	कृष्णं मथुरां नयते (वा) नयत्यक्रूरः नयः नायः नीति नायकः	ञ
णील	१		(इतिनील)	
णीव	१		(इतिनीव)	
णु	२	स्तुतौ	नौति	ल
णुद	६	प्रेरणे	नुदति (वा) नुदते पठनाय पुत्रं पिता	श ञ औ
णू (अ.)	६	स्तवने	नुवति हरिं मुनिः	श शि
णुणेद-इति णिद	१	कुत्सायां (त.) सान्निधौ	नेदति (वा) नेदते	ऋ ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णेप	१	गतौ	नेपते	ऋ ङं
तक	१	सहनहासयोः	तकति	
तक	१	गतौ	तकते	ङ इ
तक	१	कृच्छ्रजीवने	तंकति	इ
तक्ष	१	तनूकरणे त्वचनेच	तक्षति वृक्षं तक्षा	ऊ
तग	१	गतिकंपस्खलनेषु	तगति	इ
तंच	७	संकुचौ	तनक्ति	ध
तंच	१	गतौ	तंचति	उ
तंज	७	संकोचे	तनक्ति	ध उ
तट	१	उच्छ्राये	तटति तटं	
तट	१०	आहतौ	तटयति	क
तड	१०	आघाते (त.) त्विषि	ताडयति ताम्रं ताम्रकारः	क
तड	१	ताडने	तण्डतेरिपुं	ङ इ
तंतस्	११	दुःखे	तंतस्यति	ट
तद	१	कल्याणे	तन्दते गृहे नरः	इ
तन	८	विस्तारे	तनोति (वा) तनुते तन्त्वं तन्तुवायः वितानः	द ञ ऊ
तन	१-१०	श्रद्धोपतापयोः (तथा) उपकृतौ श्रद्धाघातेशब्देच	तनति (वा) तानयतिज्ञा निवाक्यंजनः वितानयति	किं उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तप	१	संतापे	तपति तापः	औ
तप	४	ऐश्वर्य्ये	तप्यते सेनया राजा	य ङ औ
तप	१-१०	दाहे	तपते (वा) तापयते	कि ङ
तंत्र	१	गतौ	तंत्रति	
तम	४	ग्लानौ (त०) इच्छायां	ताम्यति दुराचारेण विप्रः	य भ इर् उ
तय	१	गतिरक्षयोः	तयते	ङ
तरण	११	गतौ	तरण्यति	ट
तत्र	१०	कुटुंबभरणे	तन्त्रयतेकुतन्त्रेणकुमतिः	क इ ङ
तर्क	१०	भाषार्थे दीप्तितर्कयोश्च	तर्कयति	क
तर्ज	१	तर्जने	तर्जति तं ततर्जानिलात्मजं	
तर्ज	१०	तर्जने	तर्जयते	क ङ
तर्द	१	हिंसायां	तर्दति ततर्द	
तर्व्व	१	गतौ	तर्व्वति	
तल	१-१०	प्रतिष्ठायां	तलति (वा) तालयति देवालये राजा तलः तालुः	कि
तस	४	उत्क्षेपणे	तस्यति मल्लो मल्लं वितस्तिः	य उ इर
तस	१–१०	अलंकारे	तंसति (वा) तंसयति उत्तंसः अवतंसः	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तसु्	४	उपक्षये	तस्यति	उ य
ताय	१	संताने पालने च	तायते धर्मं साधुः	ऋ ङ
तिक,तीक	१	गतौ	तेकते	ऋ ङ
तिक	५	जिघांसायां	तिक्नोति	न
तिग	५	जिघांसायां (त.) स्कन्दनेच	तिग्नोति	न
तिघ	६	घातने	तिघ्नोति	न
तिज	१	निशाने क्षमायां च	तितिक्षते खलं साधुः	ङ
तिज	१०	निशाने	तेजयाति शूलं भटः ते-जना	क
तिप	१	क्षरणे (त.) द्युति	तेपते जलं घटात्	उ ऋ ङ
तिम	४	आर्द्रभावे	तिम्याति तैलेन देहः	य
तिल	६	स्नेहने	तिलति तैलेन गात्रं तिलः	श
तिल	१०	स्नेहने	तेलयाति तैलेन देहं जनः	क
तिल (वा) तिछ	१	गतौ	तेलति	
तिरस्	११	अन्तर्द्धौ	तिरस्यति कुटिलो वार्त्तां छद्मना	ट
तीक.	१	गतौ	तीकते	ङ ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तीम	४	आर्द्रभावे	तीम्याति तैलेन देहः	य
तीर	१०	समाप्तौ	तीरयति तीरं	क त
तीव	१	स्थौल्ये	तीवति	
तु	२	गतिवृद्धिवृत्तिहिंसापूरणेषु	तौति	ल
तुज	१	हिंसायां	तोजति तुतोज	
तुज	१०	भाषार्थे	तुंजयति	क इ
तुंज	१०	हिंसायां	तुंजयति	क इ
तुज	१०	हिंसाबलादाननिकेतनेषु	तोजयति	क
तुंज	१	हिंसाबलवेष्टनप्राणनेषु	तुंजति तुंगः तुंगी	इ
तुट	६	कलहकर्म्मणि	तुटति खलः पित्रा सह	श शि
तुड	१	तोडने	तोडति जरासंधं भीमः	ऋ
तुड	६	तोडने	तुडति बन्धनं हस्ती तोडने	श शि
तुड	१	तोडने(त.)वधे	तुंडते तृणं तुण्डं	इ ङ
तुड्ड	१	अनादरे	तुड्डति	
तुण	६	कौटिल्ये	तुणति खलः	श
तुत्थ	१०	स्तुतौ	तुत्थयति	क त.

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तुद	६	व्यथने	तुदति (वा) तुदते विधुं तुदो विधुं तोत्रं	श ञ औ
तुद(त.) त्रद	१	चेष्टायां	तुन्दति सुखाय तुन्दं	इ
तुप	१	वधे	तोपति	
तुप	१०	तर्दने	तुंपयति	क इ
तुप	६	हिंसायां	तुपति	श प
तुंप	६	हिंसायां (त०) क्लिशि	तुपति	श
तुंप	१	वधे	तुंपति	
तुफ	६	हिंसायां	तुफति	श
तुंफ	६	हिंसायां	तुंफति	
तुंफ	६	तृप्तौ	तुंफति भोजने·विप्रः	श
तुब	१–१०	अर्दने अदर्शनेच	तुंबति (वा) तुंबयति–तुंबी	कि इ
तुभ	१	हिंसायां	तोभते	ल ङ
तुभ	४	हिंसायां	तुभयति	य
तुभ	९	हिंसायां	तुभ्नाति	ग
तुर	३	त्वरणे	तुतोर्त्ति लुब्धो, धनाय तुरितं, तुरा,तुरगः, तुरंगः	लि र
तुरण	११	त्वरायां	तुरण्यति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तुर्व	१	हिंसायां	तुर्वति	ई
तुल	१०	पूरणे	तोलयते	क ङ
तुल	१–१०	उन्माने	तोलति (वा) तोलयति कांचनं जनः तुला	कि
तुष	४	तुष्टौ	तुष्यति तुष्टः, ष्टा, ष्टं, तुष्टिः	य ल्ट औ ञि
तुस	१	शब्दे	तोसति	
तुह	१	अर्दने	तोहति	इ र्
तूड	१	अनादरे, तोडनेच	तूडति	ॠ
तूण	१०	संकोचे	तूणयति	क त
तूण	१०	पूरणे	तूणयते, तूणः, तूणा, तूणी, तूणीरः	क ङ
तूर	४	भरणे, हिंसायां	तूर्यते याचकः	य ङ इ
तूल	१	निष्कर्षे	तूलतिकनकं तूलिका	
तूष	१	तुष्टौ	तूषति कृष्णः	
तृक्ष	१	गतौ	तृक्षति तृक्षः ताक्ष्य	
तृण	८	अदने	तृणोति (वा) तृणुते तृणं वृषः	द न उ
तृद	७	हिंसादनयोः (त.) अनादरे	तृणत्ति (वा) तृंत्ते	घ न इर् औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तृप	१—१०	प्रीणने (त.) संदीप्सेसंदीपे	तर्प्पति (वा) तर्प्पयति हविषा वन्हिं विप्रः	कि
तृप	४	प्रीणने	तृप्यति पयसा बालः तृप्तिः तर्पणं	य ञि उ
तृप	५	प्रीणने	तृप्नोति	न
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श प
तृंप	६	प्रीणने	तृंपति	श
तृफ	६	तृप्तौ	तृफति भोजने विप्रः	श
तृष	४	पिपासायां	तृष्यति चातकः तृट् तृषा तृष्णः णा—णं—तृष्णा	य इर ञि श ऊ
तृह	७	हिंसायां	तृणेढि रिपुं जनः	ध ऊ
तृह	१	वृद्धौ	तृंहति	इ
तृंह		हिंसायां	तृहति	श ऊ
तॄ	१	तरणाभिभ—वप्लवनेषु	तरति गंगां धीवरः तरणिः तरणी तरिः तरी	
तॄ	९	हिंसायां	तृणाति	
तृ	९	हिंसायां	तृणाति (वा) तृणीते	व ग
तेप	१	कम्पेक्षरणे च्युत्यांच	तेपते	ऋ ङ
तेव	१	देवने	तेवते	ऋ ङ
तोड	१	अनादरे	तोडति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तौक	१	गतौ	तौकते	ऋ ङ
त्रक	१	गतौ	त्रंकते	ङ इ
त्रख	१	गतौ	त्रखति	
त्रख	१	गतौ	त्रंखति	इ
त्रग	१	गतौ	त्रंगति	इ
त्रद्	१	चेष्टायां	त्रंदति	
त्रप	१	लज्जायां	त्रपते वधूः त्रपा	उ, ङ, ष, मि
त्रस	१	उद्वेगे	त्रसति	ई ण
त्रस	४	उद्वेगे	त्रस्यति खलात्साधु. त्रास	य
त्रस	१०	निवारणे(त) ग्रह-निषेधहृतौ	त्रासयति शत्रुं शूरः	क
त्रस	१-१०	भाषा॰(वा)भासि	त्रंसति (वा) त्रंसयति	कि इ
त्रुट	४	छेदने	त्रुट्यति	य
त्रुट	६	छेदने	त्रुटति	श शि
त्रुट	१०	छेदने	त्रुटयते	क ङ
त्रुप	१	वधे	त्रुपति	
त्रुंप	१	वधे	त्रुंपति	
त्रुफ	१	हिंसायां	त्रोफति तस्करो धनायपार्थं	
त्रै	१	पालने	त्रायते	ङ
त्रौक	१	गतौ	त्रौकते	ऋ ङ

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
त्वक्ष	१	तनूकरणे	त्वक्षति वृक्षं	
त्वक्ष	१	त्वचोग्रहे	त्वक्षति	
त्वग	१	गतिकम्पयोः	त्वंगति	इ
त्वच	६	संवरणे	त्वचति दोषं दानेन दाता, त्वचं, त्वक्, त्वचा	श
त्वंच	१	गतौ	त्वंचति	उ
त्यज	१	हानौ	त्यजति गृहं यतिः त्यागः	औ
त्वर	१	सम्भ्रमे	त्वरते भोजनाय त्वरा	ञि प म ङ
त्सर	१	छद्मगतौ	त्सरति खलः त्सरुः	
त्विष	१	भासे	त्वेषति (वा) त्वेषते	औ ञ
थुड	६	संवृत्तौ	थुडति	श शि
थुर्व	१	हिंसायां	थुर्वति	ई
दक्ष	१	हिंसायां	दक्षते	म ष ङ
दक्ष	१	वृद्धौ(त.) स्यंदे	दक्षते धर्मेण दक्षः	ङ
दघ	१	घातने	दंघति	इ
दघ	५	घातने—पालनेच	दघ्नोति	न
दंड	१०	दंडनीपातने	दण्डयति दण्ड्यं राजा दंडः	क त
दद	१	दाने(त.) धृतौ	ददते	ङ
दध	१	धारणे(त.) दाने	दधते	ङ

धातु	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
दध	१	पालने	दधति कृष्णं नन्दः	
दभ	१०	नादे	दभयति	क
दभ	१०	नोदे	दंभयति	क इ
दंभ	५	दंभे	दभ्नोति धूर्त्तः	न उ
दंभ	१०	सधाने	दंभयते	क ड
दम	४	उपशमे	दाम्यति मुनि, दम, दान्तिः, दान्तः, ता तं	य म उ इर्
दय	१	गतौ दाने हिंसायां	दयते	ञि ड
दरिद्रा	२	दुर्गतौ	दरिद्राति दरिद्रः	ल लुक्ष
दल	१०	विदारणे	दालयति	क
दल	१	भेदे—विशरणे	दलति दलं	मि
दव	१	व्रजे	दंवति	इ
दश	१०	भाषार्थे—त्विषि	दंशयति	क इ
दश	१०	दंशने(त.) दर्शे	दशयते मूलं दंशः	क इ ड
दंश		दशने	दशति मूलं दंशः	औ
दस	४	उत्क्षेपे	दस्यति	य इर् औ
दस	१०	दंशने	दंसयते गात्रं	क इ ड
दस	१०	भासि	दंसयति	क इ
दस	१०	दंशने—दर्शनेच	दसयते श्रीकृष्णं भक्तः	ड क
दस	४	उपक्षये	दस्यति	य उ
दह	१	भस्मीकरणे	दहति वनं वन्हिःदाहः	औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
दह	१०	दीप्तौ–दाहेच	दंहयति	क इ
दा	३	दाने	ददाति गां विप्राय (अथवा) दत्ते, आ उपसर्गे आदत्तः	लि ङ डु
दा	२	लवने	दाति दात्रेण धान्यं	ल प
दाणङ्तिङा	१	दाने	यच्छति धनं विप्राय	
दान	१	अवखण्डने(अथवा) आर्ज्जवे	दीदांसति (वा) दीदांसते काष्टं वर्द्धकि	उ ङ
दाय	१	दाने	दायते	ऋ ङ
दाश	१	दाने	दाशाति (वा) दाशते विप्राय वस्त्रं	ऋ ञ
दाश	१०	दाने	दाशयते	क ऋ ङ
दाश	५	हिंसने	दाश्नोति	न र
दास	१	दाने	दासाति (वा) दासते दासः	ऋ ञ
दास	५	जिघांसायां(त.)वधे	दास्नोति रिपुं	न र
दिंप	१०	संघाते	दिंपयते	क ङ
दिंप	१	संघाते	दिंपति (वा) दिंपते	ञ
दिभ	१०	नोदे	दिंभयति	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
दिभ	१०	संघाते	दिभयते	क ह
दिव	१०	अर्द्दे	देवयति	क
दिव	१	प्रीतौ	दिवति	इ
दिव	४	क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिमोदमदस्वप्नकांतिगतिषु	दिव्यति——दिदेव—	य उ
दिव	१०	परिकूजने	परिदेवयतेमातः—पक्षी—	क ह
दिश	६	अतिसर्जने (अथ वा) शौचे	दिशते	श ह औ
दिप	१०	मर्दने	दिपयाति (वा) देपाति कुचं कामिन्याः	उ कि
दिह	२	उपचये	देग्धि (वा) दिग्धे देहो घृतेन	ल न औ
दी	४	क्षये	दीयते	य ङ औ
दीक्ष	१	मौंड्ये—उपनयने व्रतादेशेच	दीक्षते. कार्तिकपूर्णमायां यतिः दीक्षते पुत्रं पिता—दीक्षते शिष्यं दीक्षा	
दीधी	२	दीप्तिदेवनयोः	दीधीते गगने भानुः	ल,लु,ङ,र,स
दीप	४	दीप्तौ-क्षरणेन	दीप्यते	य ई ञ ङ
दु	१	गतौ	दवति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
दृंफ	६	संक्लेशे	दृफति रिपुं राजा	श
दृभ	६	ग्रंथे	दृभति माल्यं	श ई
दृभ	१-१०	भये संदर्भे	दर्भति (वा) दर्भयति	कि ई
दृश	१	प्रेक्षणे	पश्यति	इर् औ
दृह	१	वृद्धौ	दर्हति	
दृह	१	वृद्धौ	दृहति	इ
दॄ	९	भये	दृणाति	ग गि
दॄ	१	भये	दरति	म
दॄ	९	विदारणे	दृणाति	ग गि
दॄ	४	विदारणे	दृयति	य
दॄ	५	हिंसायां	दृणोति	न
दे	१	पालने	दीनं दयते	ङ
देप	१	क्षरणे	देपति	ऋ
देव	१	देवने–परिवेदनेच	देवते देवः स्वर्गे	ऋ ङ
दै	१	शोधने	दायति जलेन देहं	प
दो	४	अवखंडने	शिरः शत्रोरवद्यति	य
द्यु	२	अभिगमने	द्योति रामो जरासंधं	ल
द्युत	१	दीप्तौ	द्योतते	ल ङ
द्यै	१	न्यक्करणे	द्यायति खलं साधुः	
द्रम	१	गतौ	द्रमति	
द्रवम्	११	परितापे	द्रवस्यति	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
द्रा	२	कुत्सायां (त०) पलायने	द्राति निद्राया निद्रालुः	
द्राक्ष	१	घोरवासिते (त०) कांक्षे	द्राक्षति	ई
द्राख	१	शोषणालमर्थयोः	द्राखति हिमेन वृक्षः	ऋ
द्राघ	१	आयामे–सामर्थ्येच	द्राघते मोक्षे मुनिः अ-मायामशक्तिपु	ऋ ङ
द्राड	१	विशरणे	द्राडते पुष्पं	ऋ ङ
द्राह	१	जागरे, निक्षेपेच	द्राहते	ऋ ङ
द्रु	१	गतौ	द्रवति लोहं द्रावः	
द्रु	१	अनुतापे	द्रवति	र ण
द्रुड	१	मज्जने	द्रोडति	
द्रुड	६	मज्जने	द्रुडति	श शि
द्रुण	६	गतौ, जैह्ये, वधे	द्रुणति हयः द्रोणेः	श
द्रुह	४	जिघांसायां	द्रुह्यति रिपुं राजा द्रोहः	य ल ऊ
द्रू	९	हिंसायां–गतौ	द्रूणाति (वा) द्रूणीते	ग ञ
द्रेक	१	शब्दोत्साहयोः	द्रेकते युद्धे वीरः	ऋ ङ
द्रै	१	स्वप्ने	द्रायति रात्रौ लोकः, निद्रा, निद्रालुः	
द्वृ	१	स्थगने	द्वरति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
द्विष	१	अप्रीतौ	द्वेषति (वा) द्वेषते द्वेष.	अ
द्विष	२	अप्रीतौ	द्विषन्ति मंदाश्चरितं महात्मनां (त०) द्विष्टे द्वेषः	ल औ अ
धक्क	१०	नाशने	धक्कयति	क
धण	१	ध्वाने	धणति	
धण	१	रवे	धणति	
धन	२	धान्ये	दधन्ति शालि भूमि धनं धान्यं	ल लि र
धर्ज	१	गतौ	धर्जति	
धव	१	व्रजे	धंवति	इ
धा	२	धारणपोषणयोः (त०) दाने	दधाति (वा) धत्ते	लि डु अ
धाव	१	गतौ—शुद्धौच	धावत्यश्वः धावति (वा) धावते काष्टेन दन्तान्	उ अ
धि	९	प्रीणने	धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसं	म
धि	६	धारणे	धियति वेदं बालः	श
धिक्ष	१	संदीपने-जीवनेक्लेशनेच	धिक्षते वन्हिः काष्टेन	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धिव	५	प्रीणने (त०) गतौ	धिनोतिहव्येन हिरण्यरेतसं	न इ
धिप	३	शब्दे	दिधेष्टि	लि र
धी	४	अनादरे (त) अधारे	धीयते साधुं खलः	य ङ औ
धु	५	कंपने	धुनोति (वा) धुनुतेशालिनं वातः	न ञ
ध्रु	१	स्थैर्ये (तथा) सर्पणे	ध्रुवति ध्रुवः	चि
ध्रु	६	स्थैर्ये-सर्पणेच	ध्रुवति	श शि
धुर, धूर	४	हिंसायां (त) गतौ	धूर्यते रिपुं वली	य ई ङ
धुर्व	१	हिंसायां	धूर्वति	ई
धू	१	कंपने	धवति (वा) धवते	ञ
धृ	१	अवध्वंसने	धवते पत्रं वृक्षात्	ङ
धू	५	कंपने	धूनोति (वा) धूनुते शालिनं वातः	न ञ
धू	६	विधूनने	धुवति हस्तं नटः	श शि
धू	९	कंपने	धूनाति पल्लवं वातः धूनः ना-नं	ग गि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
धू	१०	कंपेन	धानयति (वा) धावयने धूनयति (यथा) वायुर्विधूनयति केसरपूष्पंजातं.	क ञ
धूक्ष	१	संदीपनेजीवने क्रूशनेच	धूक्षते वान्हिः काष्टेन	ङ
धूप	१	संतापे	धूपायति	
धूप	१०	भाषार्थे (त०) दीप्तौ	धूपयति	क
धूश	—	——	इति धूस (तथा) धूष	
धूष	१०	धूशे	(इतिधूस)	क
धूष	१०	संहतौ हिंसे	धूषति	उ
धूस	१०	कान्तिकरणे	धूसयत्यंगं कुंकुमे जनः	क
धृ	१	धारणे	धरति (वा) धरते, धुरं, धुर्यः धुरंधरः	ञ
धृ	१०	धृतौ	धारयति	क
धृ	६	अवस्थाने	ध्रियते यावदेकोपि रिपुं	श ङ
धृ	१	हूर्छने	धरति	
धृ	१	सेचने	धरति मेघो भूमिं	
धृ	१	अवध्वंसे	धरते	ङ
धृज	१	गतौ	धर्जति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धृंज	१	गतौ	धृंजति	इ
धृष	१-१०	प्रहसने-अमर्षेच	धर्षति (वा) धर्षयति धृष्टोधार्मिकः	कि
धृष	१०	शक्तिबन्धे	धर्षयते	क ङ
धृष	५	प्रागल्भ्ये	धृष्णोति सभायां देवदत्तः धृष्टः, टा टं:	न ञि आ
धे	१	पाने	धयति वत्सो धेनुं	ट
धेक	१०	दर्शने	धेकयति कपर्द्दिनं शैवः	क
धोर	१	गतिचातुर्य्ये	धोरत्यश्वः	
ध्मा	१	शब्दाग्निसंयोगयोः	धमति शंखं कृष्णः—धमति लोहं लोहकारः	
ध्माक्षत-ध्वाक्ष	१	घोरवासिते (त०) कांक्षे	ध्मांक्षति ध्माक्षः	इ
ध्यै	१	चिंतायां	ध्यायति हरिं यतिः ध्यानं	
ध्रज	१	गतौ	ध्रजति	
ध्रज	१	गतौ	ध्रंजति	इ
ध्रण, ध्वण	१	ध्वाने	ध्रणति (तथा) ध्वणति	
ध्रस	९	उत्क्षेपे-उञ्छे	ध्रस्नाति	ग उ
ध्रस	१०	उत्क्षेपे	ध्रासयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
ध्राक्ष	१	घोरवासिते (त०) काक्षे	ध्रांक्षति	इ
ध्राख	१	शोषणालमर्थयोः	ध्राखति हिमेन वृक्षः	ऋ
ध्राघ	१	शक्तौ	ध्राघते	ऋ ङ
ध्राड	१	विशरणे	ध्राडते पुष्पं	ऋ ङ
ध्रिज		गतौ	ध्रेजति	
ध्रुव	६	गतिस्थैर्ययोः	ध्रुवति	श
ध्रू	६	गतिस्थैर्ये	ध्रुवति ध्रुव	श शि
ध्रेक	१	शब्दोत्साहयोः	ध्रेकते	ङ ऋ
ध्रै	१	तृप्तौ	ध्रायति	
ध्वज	१	गतौ	ध्वजति ध्वज	
ध्वज	१	गतौ	ध्वंजति	इ
ध्वण	१	ध्वाने	(इतिध्वन)	
ध्वन	१	शब्दे	ध्वनति ध्वनिः ध्वन	मि
ध्वन	१०	शब्दे	ध्वनयति ध्वन ध्वनि	क त
ध्वन	१०	शब्दे कपे	ध्वनयति धनुर्द्धन्वी (वा) ध्वानयति (यथा) ध्वानयति वृक्षं वायुः	क
ध्वंस	१	गतौ चूर्णने भ्रं-शेच	ध्वंसते	उ ङ ऌ
ध्वृ	१	र्णे, कौटिल्येच	ध्वरति वशं अध्वर	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ध्वांक्ष	१	घोरवासिते	ध्वांक्षति	इ
नक्क	१०	नाशने	नक्कयति	क
नख	१	सर्पणे	नखति नखः	
नज	१	व्रिडे	नजते	इ ओ ङ
नट	१	नृत्ये (त०) हिंसायां	नटति नटः	
नट	१०	अवस्यंदने, भ्रंशे, दीप्तौच	नाटयति हस्तं नटी	क
नड	१०	भ्रंशे	नाडयति	क
नद	१	अव्यक्तेशब्दे	नदति नदी	
नद	१	समृद्धौ	नन्दति–ननन्द पारिप्लवनेत्रया नृपः नन्देत चकुलं पुंसां	इ टु
नन्ख	१	गतौ	नन्खति	
नम	१०	नत्यां	नामयति (वा) नमयति	
नम	१	प्र्व्हेशब्दे	नमति, प्रणमति गुरुं शिष्यः, नमस्कारः	
नय	१	गतौ	नयते	ङ
नर्द	१	शब्दे	नर्दति ननर्दचासुरः सोपि	
नर्व्व	१	गतौ	नर्व्वति	
नल	१०	अपवारणे	नालयति (वा) नलति	कि

धातु	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
नल.	१०	दीप्तौ	नालयति	क
नह	४	बंधने	नह्यति (वा) नह्यते	य ञ औ
नाथ	१	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु	नाथते (तथा) नाथति (यथा) नाथतिखल साधुं नाथति याचकोपदान्यं नाथः	ऋ
नाध	१	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु	नाधते	ऋ ङ
निक्ष	१	चुंबने	निक्षति मुखं	
निद	१	कुत्सायां	निन्दति निन्दा	इ
निष	१	संचने	नेषति	उ
निष्क	१०	परिमाणे	निष्कयते निष्क	क ङ
नील	१	वर्णे	नीलति पटः नीलः नीली	
नीव	१	स्थौल्ये	नीवति	
नुड	६	वधे	नुडति	श शि
नृत	४	गात्रविक्षेपे	नृत्यति नर्त्तकः	य
नृ	१	नये	नरति	म
नॄ	९	नये	नृणाति नरं राजा	ग गि
पक्ष	१०	परिग्रहे	पक्षयति पक्षः	क क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पच	१	पाके	पचति (वा) पचते पचा पाकः पचनं पक्तः क्ता कं	ञ औ प
पच	१	व्यक्तीकरणे	पचते गुणं कविः	ङ औ
पच	१	व्यक्तीकरणे	पंचते	इ ङ
पच	१०	विस्तारे	पञ्चयति पाञ्जिकां भिक्षुः	क इ
पट	१०	ग्रंथे (त०) वेष्टने	पटयाति माल्यं माल्यकारः	क त
पट	१०	भाषायां-त्विषि	पाटयति	क
पट	१	गतौ	पटति	
पठ	१	व्यक्तायांवाचि	पठति पाठं पाठकः	
पड	१०	संहतौ	पडयाति	क
पड	१०	संहतौ—नाशनेच	पण्डयति	क इ
पड	१	गतौ	पण्डते पण्डा पण्डितः	ङ इ
पण	१	व्यवहारे (त०) स्तुतौ	पणते वणिगापणे पणः पणायते हरिं विप्रः	ङ
पण	१०	व्यवहारे	पणयत्यापणे उपसर्गेप्र-पाणयति	क. त
पत	१	गत्यां ऐश्वर्ये	पताति	ऌ ञ
पत	४	ऐश्ये	पत्त्यते	य ङ
पत	१	गतौ (त०) ऐश्ये	पतयाति पतं गोगगने	क त
पथ	१	गतौ	पथति पथः	ए ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पथ*	१०	गतौ	पंथयति पांथ.	क इ
पथ	१०	प्रक्षेपे	पाथयति	क
पद्	१	स्थैर्य्ये	पदति	ए
पद्	४	गतौ	पद्यते	य ङ औ
पद्	१०	गतौ	पदयते	क त ङ
पन	१	व्यवहारे (त०) स्तुतौ	पनते वणिगापणे इति पण पनायति हरिं विप्र.	
पंपस्	११	दुःखे	पंपस्यति गर्द्दभार्त्तः	ट
पंब	१	गतौ	पंबति	
पय	१	गतौ	पयते	ङ
पयस्	११	प्रसृतौ	पयस्यति	ट
पर्ण	१०	हरितभावे	पर्णयति तरुपर्णं मेव पर्ण, पर्णः	क त
पर्प	१	गतौ	पर्प्पति	
पर्द	१	कुत्सितेशब्दे व्यवहारे, स्तुतौच	पर्दते गर्दभ'	
पर्व्वं	१	गतौ	पर्व्वति	
पर्व्व	१	पूरणे	पर्व्वति	
पर्ष	१	स्नेहने	पर्षते पुत्रे पिता पर्षतू-स स्पर्षते	ञ
पल,पल्ल	१	गतौ	पलति (वा) पल्लति	ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पल	१०	रक्षणे	पालयति (वा) पलयति	क
पल्युल पल्यूल	१०	लूनिपूत्योः	पल्युलयति	क त
पश	९	बाधे—ग्रंथेच	पशाति (वा) पशाते	ञ
पश	१०	बन्धे	पाशयति पाशेन पशुं गोपः पाशः	क
पश	१०	बन्धबाधयोः—स्पर्शगत्योश्च	पाशयति पाशः	क त
पष	१	बाधनस्पर्शयोः बन्धे—स्पर्शने ग्रंथे	पषति (वा) पषते	ञ
पष	१०	बन्धे—अनुपसर्गात्-गतौ	पषयति	क
पष	१०	बन्धबाधयोः स्पर्शगत्योश्च	पषयति	क त
पस	१	बधग्रंथयोः	पसति (वा) पसते	ञ
पस	१०	बन्धे	पसयति	क
पस	१०	नाशने	पंसयति पांसुः	क इ
पा	१	पाने	पिबति पानं	
पा	२	रक्षणे	पाति पुत्रं पिता	ळ
पार	१०	समाप्तौ	पारयति राजसूयं युधिष्ठिरः पारणापारं	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पाल	१०	रक्षणे	पालयति	क
पि	६	गतौ	पियति नापितः	श
पिच्च	१०	कुट्टने	पिच्चयति सोमं सोमपाः पिच्चटं	क
पिछ	६	बाधे	पिछति	श
पिछ	१०	कुट्टने	पिछयति	क
पिज	१०	निकेतने	पेजयति	क
पिज	२	वर्णे–वर्णपूजयोः	पिंक्ते पिंजरः	ल इ ङ
पिज	१०	हिंसायां-भापष्टार्थे-षट्टबलादाननिकेतनेषु	पिजयति	क इ
पिट	१	संहतौ (त०) ध्वनौ	पेटति धान्यं पेटकः	
पिठ	१	हिंसायां (त०) क्लेशि	पेठति	
पिड	१	संघाते	पिंण्डते पिण्ड	ङ इ
पिड	१०	संघाते	पिंडयति पिंड.	क इ
पिल	१०	क्षेपे	पेलयति	क
पिव	१	सेचने	पेवते	ऋ ङ
पिश्	६	अवयवे	पिंशति पेशी	श प
पिष	७	संचूर्णे	यवांपिनष्टिचेटी पेषः	घ ल औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पिष	१०	हिंसायां	पेषयति	क
पिष	१	गतौ	पेषति	
पिस	१	गत्यां	पेसति	ऋ
पिस	१०	निकेतनेहिंसावल-दानेषु गत्यांच	पेसयति	क
पिस	१०	भाषार्थे, त्विषिच	पिंसयति	क इ
पिस	१-१०	त्विषि	पिंसयति (वा) पिंसति	कि इ
पिस	१०	नाशे	पिंसयति	क इ
पी	४	पाने	पीयते पयः शिशुः	य ङ-
पीड	१०	अवगाहने (त०) वधे	पीडयति प्रजामवग्रहः पीडा	क ऋ
पील	१	प्रतिष्टंभे	पीलति बालः पीलुः	
पीव	१	स्थौल्ये	पीवति पीवरः	
पुच्छ	१	प्रमादे	पुच्छति कृत्ये मूढः पुच्छं	
पुट	१०	भाषार्थे-चूर्णे भासिच	पोटयति	क
पुट	६	संश्लेषणे	पुटति कामं रतिः पुपोट	श शि
पुट	१०	संसर्गे	पुटयति संपुटे पुष्पं जनः	क त
पुट	१०	दीप्तौ	पुंटति (वा) पुंटयति	इ कि
पुट्ट	१०	अल्पी भावे तौच्ये	पुट्टयति शोकेन देहः	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पुड	६	उपक्षेप	पुडति	श
पुड	१	मर्दे—खण्डनेच	पुण्डति	इ
पुण	६	शुभे कर्मणि	पुणति स्नानेन जन पुण्य ण्या—ण्य निपुण णा—ण	श
पुथ	१०	भाषार्थे, दिवषिच	पोथयति	क
पुथ	४	हिंसाया	पुथ्यति रिपुं वातपोथ	य
पुथ	१	हिंसाया सक्लेशेच	पुथति	इ
पुर	६	अग्रगमने	पुरति कौरवान् भीष्म, पुपोर	श
पुर्व	१	पूरणे	पूर्वति जलेन कलशं	
पुल	६	महत्वे	पुलति	श
पुल	१	महत्वे	पोलति	ज
पुल	१०	संघाते उच्छ्रितौ	पुलयति तृण कृपाण	क
पुष	१	पुष्टौ	पोषति देह	
पुष	४	पुष्टौ	पुष्यति	य ऋ औ
पुष	९	पुष्टौ	पुष्णाति देह मूर्ख	ग
पुष	१०	धारणे	पोषयति कवचं कुमार	क
पुष्प	४	विकसने	पुष्प्यति कलिका प्रात पुष्प	य
पुस	४	विभागभ्रंशयो	पुम्यति	य इर्

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पुंस	१०	मर्द्दे—अभिवर्द्धनेच	पुंसयति	क
पुस्त	१०	आदरानादरयोः	पुस्तयति धनं पुस्तकं	क
पू	९	यन्ये (त०) पवने	पुनाति (वा) पुनीते विश्वं गंगा	ग ञ गि
पू	१	पवने	पवते गंगा पवन	ङ
पू	४	पवने	पूयते	य ङ
पूष्य	१०	संघाते	पूष्पयति	क
पूज	१०	पूजायां	पूजयति गुरुं शिष्यः पूजा	क
पूण	१०	संघाते	पूणयति	क
पूय	१	विशरणे दुर्गंधेच	पूयते मृतकः	ई ङ
पूर	४	आप्यायने	पूर्यते जलेन तरुः	य ई ङ
पूर	१०	आप्यायने	पूरयति धनैर्याचकं कर्णः	क
पूर्व	१०	निकेतने	पूर्वयति	क
पूर्व	१०	निकेतने	पूर्वयतिगृही	क
पूल	१	संघाते	पूलति तृणानि	
पूष	१	वृद्धौ	प्रतिक्षणं पूषति यस्य विक्रमः	
पृज	२	वर्णे	पृङ्क्ते	इ ङ ल
पृ	५	प्रीतौ	पृणोति साधुरातिथीन्	न

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबंध
पृ	६	व्यायामे	धर्मे व्याप्रियते साधु व्यापार	श ङ
पृ	१०	पूरणे (त०) पालने	पारयति पयसा कलश	क
पृ	३	पालनपूरणयो	पिपर्त्ति पुत्र धनेन पिता	लि
पृच	१ १०	सयमने (त०)सपर्के	पर्चति (वा) पर्चयति	वि
पृच	२	सपर्के	सपृक्त साधुभि माधु	ञ इ ङ
पृच	७	सपर्के	सपृणाक्ति न केनापि यति	ध इ
पृज	२	सपर्के	पृक्ते	ल ङ ई
पेष	१	गतौ	पेषते	ऋ ङ
पृड	६	सुखे	पृडति धर्मो लोक	श
पृण	६	प्रीणने	पृणति हरि भक्त्या बुध पपर्ण	श
पृथ	१०	प्रक्षेपे	पृथयति	क
पृष	१	सेके	पर्षति	उ
पॄ	९	पालनपूरणयो	पृणाति विश्व जलेन शक्र	ग गि ञि
पॄ	३	पालनपूर्त्यो	पिपर्त्ति	लि
पॄ	१०	पूर्त्तौ	पारयति	क
पेण	१	पेषणगतिश्लेषेषु	पेणति	ऋ
पेल	१	गतौ	पेलति	ऊ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पेव	१	सेवने	पेवते	ऋ ङ
पेस	१	गतौ	पेसति	ऋ
पै	१	शोषणे	पायति हिमेन वृक्षः	
प्यै	१	वृद्धौ	प्यायते	ङ
प्याय	१	वृद्धौ	प्यायते	इ औ ङ
प्युष	४	भागे—दाहे	प्युष्यति	य इर्
प्युष	१०	उत्सर्जे	प्युषयति	क
प्रच्छ	६	जिज्ञासायां	पृच्छति गुरुं शिष्यः	श औ
प्रथ	१	प्रख्याने	प्रथते विद्यया कविःप्रथा	म प ङ
प्रथ	१०	प्रक्षेपणे (त०) ख्यातौ	प्राथयति	क
प्रस	१	विस्तारे, प्रसवु	प्रसते परगुणं साधुः	ङ
प्रा	२	पूरणे	प्राति जलेन घटं	ल
प्री	९	तर्पणे—कान्तौच	प्रीणाति (वा) प्रीणीते पितरं पुत्रः प्रीतः ता, तं प्रीतिः	ग ङ
प्री	४	प्रीतौ	प्रीयते धर्मसाधुः प्रीतः, ता, तं, प्रीतिः	य ङ
प्री	१०	तर्पणे	प्राययति (वा) प्राययते देवतां हविषा यज्वा प्रीणयति	क ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
प्री	१	तर्पणे	प्रयति (वा) प्रयते	ञ
प्रु	१	गतौ	प्रवते	ङ
प्रुष	१	दाहे	प्रोषति	उ
प्रुष	९	स्नेहनमोचनपूरणे दाहेच	प्रुष्णाति पुत्रं पिता-विप्रु षविप्रुष्	ग
प्रोथ	१	पर्य्याप्तौ	प्रोथति (वा) प्रोथते नार्जुनाय कर्ण·	ऋ ञ
प्लक्ष	१	भक्षणे	प्लक्षति (वा) प्लक्षते प्लक्षः	ञ
प्लव	१	गतौ	प्लवते प्लव	ङ
प्ली	९	गतौ	प्लीनाति	ग
प्लिह	१	गतौ	प्लेहते	ङ
प्लु	१	गतौ	प्लवते प्लव.	ङ
प्लुष	१	दाहे	प्लोषति	ऊ
प्लुष	४	दाहे	प्लुष्यति गात्रं ज्वरेण प्लुष्ट, टा, टं, प्लोष.	य ल
प्लुष	९	स्नेहनमोचनपूरणे-षु दाहेच	प्लुष्णाति प्लुष्	ग
प्लुस	४	दाहविभागयोः	प्लुस्यति	य इर्
प्लेव	१	सेवने	प्लेवते	ऋ ङ
प्सा	२	भक्षणे	प्साति	ल

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
फक्क	१	नीचैर्गतौ	फक्कति खलः	
फण	१	निःस्नेहे	फणति	ण
फण	१	गतौ	फणति (वा) फणयति सर्प्प सर्प्प वैद्यः फाणयति दुग्धं	मिण
फर्व	१	पूरणे	फर्वति तमसा निशा ब्रह्मांडं	
फल	१०	संघाते	फालयति	क
फल	१	गतौ संघातेच	फलति	ञ
फल	१	निष्पत्तौ	फलति धर्मः	
फल	१	विशरणे	फलति फालः	ञि आ
फुल्ल	१	विकसने	फुल्लति कलिका फुल्लं	
फेल	१	गतौ	फेलति फेला	ऋ
फ्वल	१	जीवने	फ्वलति	म
वक्क	१	गतौ	वंकते	इ ङ
वक्क	१	कौटिल्ये	वंकते चित्तं खलः वंकः	इ ङ
वज	१०	मार्गणसंस्कारे	वाजयतियोद्धा वाजः वाजिनः	क
वट	१०	वंटने	वंटयति धनं भ्राता	क इ
वट	१०	पैल्ये	वटति	
वण	१	शब्दे	वणाति	

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
बद	१	स्थैर्ये	बदति	
बध	१	बन्धने, निंद्रायाच	बधते बीभत्सते पापसाधु बीभत्सा	इ
बध	१०	सयमने	बाधयति न केशान् द्रौपदी	क
बन	८	याचने	बनुते	द उ इ
बन्ध	९	बन्धने	बध्नाति कृष्ण माता	ग औ
बन्ध	१०	बन्धने	बन्धयति	क
बभ्र	१	गतौ	बभ्रति	
बम्ब	१	गत्या	बम्बति	
बर्ब्ब	१	गत्या	बर्ब्बति	
बर्ह	१	वधो दीप्तौच	बर्हति	
बर्ह	१	स्मृतिहिंसा दान वाक्षु	बर्हते	इ
बर्ह	१	श्रेष्ठे	बर्हते	इ
बल	१	दानवधानिरुपेषु	बल्ते	इ
बल	१	धान्यावरोधे जी वनेच	बलति	ज
बल	१०	भृतौ प्राणनेच	बलयति बालपिता	क
बल	१०	निरूपणे	बलयते	च इ
बल्ह	१	श्रेष्ठे	बल्हते	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वल्ह	१	स्मृतिर्हिंसा दान-वाक्षु	वल्हते	ङ
वल्ह	१०	त्विषि(त०)भाषार्थे	वल्हयति	क
वस्त	१०	अनाहृत्याहृत्योः अर्दनेच	वस्तयति वस्त	क
वह	१	वृद्धौ	वहते	ङ इ
वाध	१	विलोडने	वाधते	ॠ ङ
विद	१	अवयवे	विंदति	इ
बिल	६-१०	भेदने-क्षेपचे	विलति (वा) वेलयति	श क
विस	४	क्षेपे	विस्यति	य इर्
वीज	१	गतौ	वीजते वीजं	ङ
बुक्क	१-१०	भषणे	बुक्कति (वा) बुक्कयति श्वा बुक्कं	कि
बुक्क	१०	व्यसने	बुक्कयति	क
बुट	१-१०	हिंसे	बोटति (वा) बोटयति	कि
बुड	६	संवरणे (त०) उत्सर्गे	बुडति	श शि
बुद	१	निशामने	बोदति (त०) बोदते	इर् उ ञ
बुध	१	बोधने	बोधति (वा) बोधते शास्त्रं	इर् ज ञ
बुध	१	अवबोधने	बोधति शास्त्रं बालः प्र-बोधः	औ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध
बुध	४	अवगमने बुभुक्षायाच	बुध्यते (अथवा) बुध्यति	य औ
बुन्द	१	निशामने	बुदति (वा) बुंदते	इर् उ ञ
बुन्ध	१	निशामने	बुन्धति (वा) बुन्धते	इर् उ ञ
बुन्ध	१०	बन्धे	बुन्धयति	क
बुल	१०	मज्जने	बोलयति	क
बृह	६	उद्यमे	बृहति वैश्य बृहती बर्हि (इति वृ)	श उ
वृ	—	— —		—
व्युस	४	हानौ	व्युस्यति	य इर्
ब्रण	१	शब्दे	ब्रणति	—
ब्रू	२	व्यक्ताया वाचि	ब्रवीति (वा) ब्रूते	ल ञ
ब्रूस	१०	हिंसाया	ब्रूसयति व्याघ्रश्चौर	क
भक्ष	१	भक्षणे	भक्षति (वा) भक्षते	ञ
भक्ष	१०	अदने	भक्षयति	क
भज	१	सेवाया	भजति (वा) भजते विष्णुबुध भाग, भक्ति	ञ औ
भज	१०	विश्राणने पाके च	भाजयति मन्त्रिणे राज्य राजा	क
भज	१०	भाषार्थे—भासि	भजयति	क इ
भञ्ज	७	आमर्द्दने	भनक्ति पादप दन्ती भग	ध ओ औ
भट	१	परिभाषणे	भटति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भट	१	भृतौ	भटति भृत्यं भटः	
भट	१०	प्रतारणे	भंटयति बालं भंटकः	क इ
भड	१	परिहासे	भंडते	इ ङ
भड	१०	शिवे	भंडयति	क इ
भण	१	शब्दे	भणति	ऋ
भद	१	मुत्प्रीत्योः शुभे कल्याणे सुखेच	भन्दते	इ ङ
भद	१०	शुभे	भंदयति	क इ
भर्भ	१	हिंसायां	भर्भति	
भर्व	१	हिंसायां	भर्वति	
भर्त्स	१०	तर्जने	भर्त्सयते	क ङ
भल	१०	निरूपे–आभंडनेच	भलयते	क ङ
भल	१	परिभाषणे–हिंसायां–दानेच	भलते भालं	ङ
भल्ल	१	परिभाषणे–हिंसायां–दानेच	भल्लते भल्लः	ङ
भप	१	भर्त्सने	भपति श्वा भपकः	
भस	३	भर्त्सनदीप्त्योः	बभस्ति दुर्बलं दुष्टः	लि र
भा	२	दीप्तौ	भाति सूर्य्यः भानुः	ल प
भाज	१०	पृथक्कर्माणि	भाजयति धनं भ्राता विभागः	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भाम	१	क्रोधे	भामते मूर्खः भामिनी	ङ
भाम	१०	क्रोधे	भामयति	क कं त
भाष	१	व्यक्तायांवाचि	भाषते भाषा	ऋ ङ
भास	१	दीप्तौ	भासते विद्यया विप्रः	ऋ ङ
भिक्ष	१	याञ्चायां	भिक्षतेऽन्नं भिक्षुः भिक्षा भिक्षुः	ङ
भिद्	७	विदारणे	भिनत्ति (वा) भिन्ते द-धिभाडं कृष्णः, भेदः	धञ इर् औ
भिल	१०	भेदने	भेलयति	क
भिषज्	११	चिकित्सायां	भिषज्यति भिषक्	ट
भिष्णज्	११	उपसेवायां	भिष्णज्यति	ट
भी	३	भये	बिभेति पापात् भयः	लि
भीम	१	गतौ-शब्देच	भीमति	ऋ
भुज	६	कौटिल्ये	भुजति भुजं	श ओ औ
भुज	७	पालनाभ्यवहारयो	भुनक्ति भक्तं हरिः भुंक्ते पीलु फलं कृष्णः भोग.	ध ञ औ
भुड	१	भरणे	भुंडते कपटं	इ ङ
भू	१	सत्तायां	रामःस्थिरो भवति	
भू	१-१०	प्राप्तौ	भवते (वा) भावयते मोक्षं ज्ञानी	कि ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भू	१०	अवकल्कने शुद्धिमिश्रणयोः	भावयति वेदार्थं वैदिकः भावना	क
भूष	१-१०	अलंकारे	भूषति (वा) भूषयति भूषणं	कि
भृ	१	भरणे	भरति (वा) भरते भिक्षुरुदरं	ञ टु डु
भृ	३	धारणपोषणयोः	बिभृते धरां वासुकिः (त०) बिभर्ति	लि डु टु ञ
भृज	१	भर्जने	भर्जते	ङ ई
भृड	६	निमज्जने	भृडति गंगायां यात्रिकः	श
भृश	१०	दीप्तौ	भृशति (वा) भृंशयति	इ कि
भृश	४	अधःपतने	भृश्यति बभर्श	य इर् उ
भॄ	९	भर्त्सने भृतौ भृजि	भृणाति कुपुत्रं पिता	ग गि
भेष	१	भये	भेषति (वा) भेषते पापात्साधुः	ऋृ ञ
भ्यस	१	भये	भ्यसते	ङ
भ्रक्ष	१	अदने	भ्रक्षति	
भ्रण	१	शब्दे	भ्रणति	
भ्रम	१	चलने	भ्रमति तीर्थं मुनिः	ज ण उ
भ्रम	४	अनवस्थाने	भ्राम्यति लुब्धः भ्रमः भ्रान्तः ता-तं भ्रान्तिः	य भ ज ण उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भ्रंश	१	अवस्रंसने	भ्रशते भ्रष्टः-ष्टा-ष्टं	उ इ ल
भ्रंश	४	अध'पतने	भ्रंश्यति वृक्षात्पत्रं बभ्रंश	उ इर् उ
भ्रस्ज	६	पाके	भृज्जति (वा) भृज्जते भृष्टं	श न औ
भ्रंस	१	अवस्रंसने	भ्रंसते	ङ
भ्राज	१	दीप्तौ	भ्राजते	ङ
भ्राज	१	दीप्तौ	भ्राजते भ्राजथुः	ङ ण ऋ टु
भ्राश	१	दीप्तौ	भ्राशते	ऋ ण टु ङ
भ्रास	—	—	(इतिभ्राश)	—
भ्री	९	भरणे (त.) भये	भ्रीणाति नारीं भर्त्ता	ग गि
भ्रुड	६	संवृतिसंहत्योः	भ्रुडति	श शि
भ्रूण इति भ्रूण	१०	आशायां (त.) विशंकायां	भ्रूणयते पुत्रं वंध्या	क ङ
भ्रेज	१	दीप्तौ	भ्रेजते	ऋ ङ
भ्रेष	१	चले भये	भ्रेषति (वा) भ्रेषते	ऋ ञ
भ्लक्ष	१	अदने	भ्लक्षति	
भ्लाश	१	दीप्तौ	भ्लाशते	ऋ ण टु ङु
भ्लास	—	—	(इतिभ्लाश)	—
भ्लेष	१	गतौ	भ्लेषति	ऋ
मक	१	मंडने	मकते स्तनं कुंकुमेन	ङ इ
मक	१	गतौ	मंकते	ङ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मक्क	१	गतौ	मक्कते	ङ
मक्ष	१	संघाते	मक्षति जलेनान्नं मक्षिका	
मख	१	गतौ	मखति	
मख	१	गतौ	मंखति	इ
मग	१	सर्पणे, गतौच	मङ्गति	इ
मगध	११	परिवेष्टने नीचदास्येच	मगध्यति नीचः	ट
मघ	१	भूषे	मंघति	इ
मघ	१	कैतवे गतौ आक्षेपेच	मंघते कितवो द्यूतेन	ङ इ
मच	१	कल्कने	मचते मूर्खः	ङ
मच	१	धारणे उच्छ्रायधृत्यर्चाभासु	मञ्चते माल्यं कंठे मञ्चः	इ ङ
मञ्च	१	गत्यां	मञ्चति	
मञ्ज	१०	मृजाध्वनयोः	मञ्जयति	
मठ	१	निवासे, मदेच	मठति मठः	
मठ	१	शोके	मंठते	इ ङ
मड	१०	सुखे	मंडयति (वा) मंडति मड्डाति	कि ग इ
मड	१	वेष्टने (त०) विभागे	मंडते	इ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मड	१-१०	भूषायां, हर्षेच	मंडति (वा) मंडयति मंडनं	कि इ
मण	१	शब्दे	मणति	
मंतु	११	अपराधे रोषेच	मंतूयति	ट
मंतु	११	अपराधे रोषेच	मंतूयते	ञ ट
मथ	१	विलोडने	मथति	ए ज
मथ	१	कुथे	मंथति	इ
मद	१	स्तुतिमोदमदस्वप्न कान्तिगतिषु आ-ऊंघच	मन्दते मुनिर्माधवं मन्दः दाः दं.	इ ङ
मद	१०	तृप्तियोगे	मनो मदयते द्रव्यं	क ङ
मद	४	हर्षे	माद्यति धनेन भिक्षु. मद मत्त. त्ता त्तं	य,भ,ञ,ईइर्
मद	१०	हर्षग्लपनयो.	मदयति मनो मिश्रागमः मदयति रिपु बली	क
मन	८	बोधने	मनुते मुनिः	द ङ उ
मन	४	ज्ञाने	धर्मं न मन्यते मूढः	य ङ औ
मन	१०	स्तंभे	मानयते सेनां दुर्गः	क ङ
मन्थ	१	विलोडने (त०) कुन्थे	मन्थति रथं ममन्थ सहयं	
मन्थ	९	विलोडने	मथ्नाति	ग

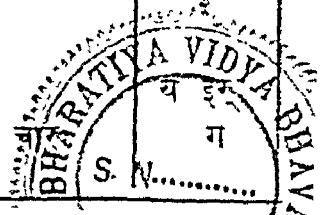
धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मम्त्र	१	गत्यां	मम्त्रति	
मय	१	गतौ	मयति	ङ
मर्व	१	गत्यां	मर्घति	
मर्च	१०	शब्दे	मर्चयति	क
मर्व्व	१	गत्यां हिंसायां च	मर्व्वति	
मर्व्व	१	पूरणे (त०) गतौ	मर्व्वति	
मन्त्र	१०	गुप्तभाषणे	मंत्रयते मंत्रिणा राजा	क ई ङ
मभ्र	१	गतौ	मभ्रति	
मल	१	धारणे	मलते माल्यं—मलः	
मल	१०	धारणे	मलयति	क त
मल्ल	१	धारणे	मल्लते मल्लः	
मव	१	बन्धने	मवति रज्वा पाटच्चरं	
मव्य	१	बन्धने	मव्यति चौरं राजा	
मश	१	शब्दे (त०) कोपे	मशति मशकः	
मष	१	हिंसायां	मषति	
मष्क, मस्क	१	गतौ	मष्कते (वा) मस्कते	ङ
मस	४	परिमाणे (त०) परिणामे	मस्यति स्वर्णं स्वर्णकारः मसूरः मासः—माषः—माषकः	य इर् ई
मस्ज	६	शुद्धौ (वा) स्नाने	मज्जंति मुनयः गंगे	[illegible]

धातु	गण.	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
मह	१	पूजाया	महति	
मह	१०	लिपि	महयति	क इ
मह	१	वृद्धौ	महते	इ ङ
मह	१०	पूजाया	महयति	क त
मा	२	माने	माति दंडेन भूमिं—प्रमाण	ल
मा	३	माने शब्दे च	धर्मं मिमीते मुनि	लि ङ
मा	४	माने	मायते	य ङ
माक्ष	१	कांक्षाया	माक्षति	इ
माड	१	माने	माडति (वा) माडते स्वर्ण—माड	ऋ ञ
माथ	१	कुथे	माथति	इ
मान	१	पूजाया जिज्ञासाया च	मीमासते शास्त्र बुध—मीमासा	
मान	१०	पूजाया	मानयति	क
मान	१	पूजाया	मानति	
मार्ग	१०	संस्कारसर्पयो	मार्गयति	क
मार्ग	१ १०	अन्वेषणे	मार्गति (वा) मार्गयति	कि
मार्ज	१०	शब्दे (तथा) पूजायाँ	मार्जयति—मार्जार	क
माह	१	माने	माहति (वा) माहते	ऋ उ न

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरणं.	अनुबन्ध.
मि	५	प्रक्षेपणे	मिनुति (वा) मिनुतेतृणं-वायुः	न ञ डु
मिछ	६	बाधे, उत्क्लेशे च	मिच्छति	श
मिज	१०	दीप्तौ	मिंजाति (वा) मिंजयति	इ कि
मिथ	१	वधे, मेधायां च	मेथति	ऋ ञ
मिद	१०	स्नेहने	मिंदति (वा) मिंदयति.	इ कि
मिद	१	गर्वे	लुब्धने मेदति	
मिद	४	स्नेहने	मेद्यति, मेदं, मेदः मेदस्	य ऌ
मिद	१	स्नेहने	मेदते पुत्रे पिता	आ ञि ङ
मिद	१०	स्नेहने	मेदयति	क
मिद	१	मेधाहिंसयोः	मेदते (वा) मेदति वेदं बालः	ऋ ञ
मिध	१	मेधाहिंसयोः	मेधति (वा) मेधते	ञ ऋ
मिश्र	१०	संपर्के.	मिश्रयति घृतेनान्नं जनः	क त
मिल	६	श्लेषणे	मिलति (वा) मिलते साधुं साधुः मेलकः	श ञ
मिव	१	सेके	मिंवति	इ
मिश	१	शब्दे	मेशति	
मिष	१	सेचने	मेषति	उ
मिष	६	स्पर्द्धायां	मिषति कृष्णं शिशुपालः	श

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
मिह	१	सेचने	मेहति मेह —प्रमेह — मेहन	औ
मी	१ १०	गतौ मत्या च	मयति (वा) माययति	कि
मी	४	हिंसाया	मीयते मीन	य ङ टु
मी	९	हिंसाया	मीनाति (वा) मीनाते रिपु	ग ञ
मीम	१	गतौ	मीमति	ऋ
मील	१	निमेषणे	निमीलति भिया नेत्र	ऋ
मीव	१	स्थौल्ये	मीवति	
मुच	१०	प्रमोचने मोदने च	मोचयति कञ्चुक सर्प	क
मुच	६	मोचने	मुञ्चति (वा) त्वामुचते देह विरक्त	श प ञ लृ आ
मुच	१	कल्कने	मोचते	ङ
मुच	१	कल्कने	मुञ्चते	इ ङ
मुच	१	गत्या	मुचति	
मुज	१०	मृजाध्वनयो	मोजयति	क
मुज	१	शब्दे—मृजा ध्वनयो	मुजति मुज	क इ
मुट	१	मर्दने	मोटति तरु गज	
मुट	१	मर्दे	मुटति	इ
मुट	६	आक्षेपप्रमर्दनयो	मुटति कालीयस्य दर्प कृष्ण	श शि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मुट	१-१०	संचूर्णने	मोटति (वा) मोटयति-धाना:शिलया	कि
मुठ	१	पलायने	मुंठते	इ ङ
मुड	१	मुंडने	मुंडते मुंडं जलेन नापितः	इ ङ
मुड	१	खंडने	मुंडति मुंडं मुंडी	इ
मुड	१	मज्जे	मुंडते	इ ङ
मुड	१०	मर्दने	मोडयति	क
मुण	६	प्रतिज्ञाने	मुणति नियमं मौनी	श
मुथ	१	कुंथे	मुंथति	इ
मुद	१	हर्षे	मोदते यशसा कविः-आमोदः	ञि ङ
मुद	१०	संसर्गे	मोदयति गुडेन धान्यं नारी, मोदकः	क
मुर	६	संवेष्टने	मुरति कंटकेन वाटीं कृपकः. मुरः मुरा	श
मुर्छ	१	मोहसमुच्छ्राययोः	मूर्छति मुमूर्छ सख्यं रामस्य	आ
मुर्व	१	वन्धने	मूर्वति	इ
मुप	१	वधे	मोपति	
मुष	४	स्तेये—छिदि	मुष्यति	य इ
मुष	९	स्तेये	मुष्णाति धनं चोरः	ग



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मुप,मूप	१	स्तेये	मोपति-यो मूपति परद्रव्यं	
मुस	४	खंडने	मुस्यति शंकुलया क्रमुकं	य
मुस्त	१०	संघाते	मुस्तयाति मुस्ता	क
मुह	४	वैचित्त्ये	मूढो मुह्यति मोहेन	य उ ऌ ञि
मू	१	बंधने	मवते चोरं राजा	ङ
मूत्र	१०	प्रस्रवणे	मूत्रयति बालस्तल्पे–मूत्र	क त
मूल,मूल	१०	रोहणे	मूलयति जलेन वृक्षं मा-लाकारः–मूलं	उ क
मूल	१	प्रतिष्ठायां संघाते च	मूलति (वा) मूलते यशः कृष्णस्य मूलं	ञ
मृ	६	प्राणत्यागे	म्रियते पापेन जन्तुः	श ङ
मृग	४	अन्वेषणे	मृग्यति धनं भिक्षुः	य
मृग	१०	अन्वेषणे	मृगयते मृगं व्याधः मृगया	क त ङ
मृज	१	शब्दे	मर्जति	
मृज	१-१०	शौचालंकारयोः	मार्जति (वा) मार्जयति चंदनेन ललाटं नारी. मार्जयति जलेनात्मानं मुनिः	कि ऊ प
मृज	२	शुद्धौ	मार्ष्टि ज्ञानेनात्मानं	ऌ उ प
मृड	६	सुखे	मृडति धर्मो लोकं	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मृड	९	सुखे	मृड्णाति गिरा शुकः	ग
मृण	६	हिंसायां	मृणाति रिपुं मृणालं	श
मृद	९	क्षोदे	मृद्नाति नलिनीं गजः-, विमर्द्दः	ग
मृध	१	उंदे	मर्द्धते (वा) मर्द्धति मृधं	
मृश	६	आमर्शने	मृशति गुरुवचनं साधुः-परामर्शः	श औ
मृष	१	सेचने	मर्षति	उ
मृष	१	सहने	मर्षते दोषं हरिः	ङ
मृष	१-१०	तितिक्षायां	मर्षते (वा) मर्षयते	कि ङ
मृष	४	क्षमायां	मृष्यति (वा) मृष्यते	य ञ
मृष	१०	क्षांतौ, सहने च	मर्षयति	क त
मृ	९	वधे	मृणाति	ग गि
मे	१	प्रतिदाने	मयते—तिलैर्धान्यं—विनिमयः नेमयः निमया वंमयः विमयः	ङ
मेट	१	उन्मादे	मेटति धनेन नीचः	
मेड	१	उन्मादे	मेडति	ऋ
मेथ	१	संगे मेधायां वधे च	मेथति	ऋ ञ
मेद	१	मेधाहिंसयोः	मेदति (वा) मेदते मेदः	ऋ ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मेध	१	संगमे वधे	मेधति (वा) मेधते सखासखायं मेधा, मेधः	ऋ ञ
मेधा	११	आशुग्रहणे	मेधायति	ट
मेप	१	गत्यां	मेपते	ङ ऋ
मेव	१	सेवने	मेवते	ऋ ङ
मोक्ष	१-१०	असने	मोक्षति (वा) मोक्षयतिशरंशूरः	कि
म्ना	१	अभ्यासे	मनति वेदं शिशुः आम्नायः	
म्रक्ष	१	संघाते	म्रक्षतिजलेनान्नं	
म्रक्ष	१०	म्रक्षणे म्लेछने च	म्रक्षयतिरजसादेहेकृष्णः	क
म्रच	१	गतौ	म्रचति	
म्रड	१	उन्मादे	म्रडति	ऋ
म्रद	१	मर्दने–क्षोदे च	म्रदते बलं बली	ङ
म्रुच	१	गत्यां	म्रोचति	इर् उ
म्रुंच	१	गतौ	म्रुंचति	
म्रेट	१	उन्मादे	म्रेटति धनेन नीचः	ऋ
म्लुंच	१	गतौ	म्लुंचति	
म्लुच	१	गतौ	म्लोचति	इर् उ
म्लेछ	१-१०	अव्यक्तायांवाचिदेश्योक्तौ च	म्लेछति (वा) म्लेछयति म्लेछः	कि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
म्लेट	१	उन्मादे	म्लेटति धनेन नीचः	ऋ
म्लेड	१	उन्मादे	म्लेडति	ऋ
म्लेव	१	सेवने	म्लेवते	ऋ ङ
म्लै	१	कान्तिसंक्षये	म्लपयति, उपम्लापयति, प्रम्लापयति	
म्लै	१	गात्रविनामे	म्लायति पुष्पं वातेन म्लानिः	
यक्ष	१०	पूजायां	यक्षयते	क ङ
यज	१	देवपूजासंगतिकरणदानेषु	यजति हरिं—यजति ताप-सं साधुः पशुना शिवं यजते	ए औ ञ
यत	१	प्रयत्ने	यततेमूकायनरः	इ ङ
यत	१०	निकारोपस्कारयोः	यातयतिशत्रुंबली—यात-यति स्नानेन देहं यतिः	क
यभ	१	मैथुने	यभति	
यभ	१	मैथुने	यभति	औ
यम	१	उपरमे	यच्छतिपापात्साधुः	औ उ
यम	१	परिवेषणेचेष्टने	यामयत्यन्नंविप्रायसाधुः-यमयति विमार्गात्प्रजां-राजा	क
यन्त्र	१०	संकोचने	यंत्रयति यंत्रेण खलं रा-जा—यंत्रं	क इ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
यस	४	प्रयत्ने	यस्यति धनाय नर प्रयास	य उ इर्
या	२	प्रापणे, गतौच	याति	ल
याच	१	याञ्चाया	याचति (वा) याचते धन याचक	ऋ टु डु ञ
यु	२	मिश्रण।मिश्रणयो	यौति घृतेनान्न यौति खेभ्य साधु यव याव	ल
यु	९	बधे	युनाति (वा) युनीते	ग न
यु	१०	जुगुप्साया	यावयते वृद्ध युवति यौति	क ङ
युग	१	वर्ज्जने	युगति	इ
युछ	१	प्रमादे	युछति	
युज	१ १०	संयमने	योजति (वा) योजयति हले वृष गोप	कि
युज	७	योगे	युनक्ति (वा) युक्ते योगयोगी योग	र ञ इर् ओ
युज	४	समाधौ	युज्यते गुहाया योगी	य ङ औ
युज	१०	निन्दे	योजयते	क ङ
युत	१	भासने	योतते	ऋ ङ
युध	४	सम्प्रहारे	युध्यते योध —युद्ध	य ङ ओ
युप	४	व्याकुलत्वे	युप्यति	य इर्

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
यूप	१	हिंसायां	यूपयते	क ङ
येप	१	प्रयत्ने	येपते	ऋ ङ
योट, यौट, यौड	१	संबन्धे	योटति (वा) यौटति रुक्मणीं कृष्णः	ऋ
रक	१०	आस्वादने (तथा) आपने	राकयति मोदकं बालः	क
रक्ष	१	पालने	रक्षति, रक्षा	ञि
रख	१	गत्यां	रखति	
रख	१	गत्यां	रंखति	इ
राख	१	शोषणाऽलमर्थयोः	राखति हिमेन वृक्षः	ऋ
रग	१०	स्वादे आप्तौ च	रगयति	क
रग	१	शंकायां	रगति साधुः—खलेभ्यः	म ए
रग	१	गतौ	रंगति	इ
रघ	१०	भासि	रंघयति	क इ
रघ	१	गतौ	रंघते रघुः	ङ इ
रघ	१०	आस्वादने	राघयतिलेह्यंकरेणकुमारः	क
रच	१०	प्रतियत्ने, कृत्यां	रचयति	क त
रंज	१	रागे	रजति (वा) रजतयुवायुवतौ (यथा) रजकः-रागः-रक्तः-तानं	म ओ ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुव
रञ्ज	४	रागे	रज्यति (वा) रज्यते-वस्त्रं रंगकारः	य ञ औ म
रट	१	वाचि	रटतिकाक.	
रट	१०	परिभाषणे	रटयति विराटः	क
रठ	१	भाषणे	रठति	
रण	१	गतौ	रणति रणः	म
रण	१	शब्दे	रणति	
रद	१	विलेखने	रदतिभूवनंवराहः रदन	
रध	४	हिंसायां (त०) पाकसराद्धौ च	रध्यति पाशंडी वैदिकं-विराधः	य ल उ
रप	१	व्यक्तायांवाचि	रपति	
रफ	१	गत्या (त.) वधे	रफति	
रफ	१	गत्यां (त.) वधे	रम्फति	इ
रब	१	शब्दे	रंबते	इ ङ
रब	१	गतौ	रंबति	इ
रभ	१	राभस्य	रभते अजेकृष्णः सुरभि (आउपसर्ग) आरभते पठितुं	औ ङ
रभ	१	शब्दे	रंभते	इ ङ
रम	१	क्रीडायां	रमते	उ ङ ञ औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रम	१०	क्रीडायां	रमयति (विउपसर्गे) विरामयति	
रय	१	गतौ	रयते रयः	ङ
रर्फ	१	गतिवधयोः	रर्फति	
रव	१	व्रजे	रंवति	इ
रस	१	शब्दे	रसति	
रस	१०	आस्वादनेस्नेहनेच	रसयति रसनयाद्राक्षांरसिकः	क त
रह	१	त्यागे	रहतिगृहं विरक्तः, विरहः, रहरहम्	
रह	१०	त्यागे	रहयति गेहं विरागी	क त
रह	१	गतौ	रंहयतिवायुः, रंहः, रंहस. रंहसा	इ
रंह	१०	गतौ—त्विषि च	रंहयति	क त
रा	२	दाने (त.) आदाने	राति धनं विप्राय	ल
राच	१	सामर्थ्ये	राचतेयुध्यायवीरः	ऋ ञ
राज	१	दीप्तौ	राजते (वा) राजति राजा	ऋ ञ
राध	४	संसिद्धौ	राध्यति ज्ञानेन यतिः	य ओ
राध	५	संसिद्धौ	राध्नोति योगेन मुनिः	न ओ

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
राश	४	शब्दे	राश्यते पक्षी	य ङ ऋ
रास	१	शब्दे	रासते	ऋ ङ
रि	९	हिंसायां	रिणाति मलिम्लुचः पांथं	न
रि	६	गतौ	रियति	श
रिग	१	गतौ	रिंगति रिंगणं	इ
रिच	१-१०	वियोजनसंपर्चनयोः	रेचति (वा) रेचयति राज्यं रिपोः रेचयति हरितक्यारोगी	कि
रिच	७	विरेचने	रिणक्ति (वा) रिंक्ते रोगी-विरेकः	धञइरूऔ
रिज	१	ऋज्यर्थे	रेजते	ङ
रिफ	६	कत्थनयुध्धनिंदाहिंसादानेषु	रिफति रिपुंशूरः—रेफः-फा-फं	श
रिम्फ	६	वधे	रिम्फति	श प
रिव	१	अंत	रिवति	इ
रिश	६	हिंसायां	रिशति	श औ
रिष	१	हिंसायां	रेषति	
रिप	९	विप्रयोगे	रिप्णाति संन्यासी संबंधिभ्यः—	ग
रिह	६	कत्थनयुद्धनिंदाहिंसादानेषु	रिहति दुर्जनः साधुं	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
री	४	स्रवणे	रीयते जलं घटात्	य ङ औ
री	९	रेषणे वधे गतौ च	रीणाति	ग गि
री	२	प्रजनने	रेति नारी	ल
रु	२	शब्दे	रौति	ल दु
रु	१	रोषे, वधे, गत्यां च	रवते चौरायराजा—रवः रविः	ङ
रुक्ष (वा) रूक्ष	१०	पारुष्ये	रूक्षयतिदुष्टः रूक्षः—क्षा-क्षं	क त
रुच	१	दीप्तौ प्रीतिप्रकाशयोः	रोचते गोरोचना	ल ङ
रुज	६	रोगे, भंगे, भंगे च	रुजति रोगेन हस्तः	श ओ औ
रुज	१०	हिंसे	रोजयति	क
रुट	१	प्रतिघाते (त) दीप्तौ	रोटते	ल ङ
रुट	१०	रुषि द्युतौ च	रोटयति	क
रुट, रुडन	१	स्तेये	रुंटति धनं	इ
रुठ	१	उपघाते	रोठति कालिर्धर्मं	
रुठ	१	प्रतिघाते	रोठते	ऋ ङ
रुठ	१	गत्यालस्यास्तेय-प्रतिघाते	रुंठति	इ
रुद	२	अश्रुविमोचने	रोदिति रोदनं	ल य इर.

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
रुद्	१	चेष्टायां	रुदति सुखाय	इ
रुध	४	अभिलाषे	(अनुउपसर्गे) अनुरुध्य ते कृष्ण गोप्य (यथा) अनुरुध्यति	य ङ ओ
रुध	७	आवरणे (त) रुन्धे	रुणद्धि गोपां गां गोष्टे	[र, औ ध,ञ,ञि, इ
रुप	४	व्याकुलत्वे	रुप्यति	य इ र्
रुश	६	हिंसायां	रुशति	श ओ
रुश	१०	दीप्तौ	रुशयति (वा) रुशति	इ घि
रुष	१	हिंसायां	रोषति	
रुष	४	रोषे प्रतिघाते च	रुष्यति रोष	य इर् ञि
रुष	१०	रोषे	रोषयति रोष	क
रुह	१	जन्मप्रादुर्भावयो	रोहतिमृतिकायां घट रोहति विष्णुर्मायया	ञि ज आ
रूप	१०	रूपक्रियायां	रूपयति गात्रविन्यासेनी रूप, निरूपण	क त
रूष	१	भूषायां	रूषतिशरीरमलंकरणेन मुग्धा प्रियार्थं	
रेक	१	शंकायां	रेकते	ऋ ङ
रेखा	११	श्लाघासादनयो	रेखायति यावक स्वार्थं गनिन	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रुद	१	चेष्टायां	रुंदति सुखाय	इ
रुध	४	अभिलाषे	(अनुउपसर्गे) अनुरुध्यते कृष्णं गोप्यः (यथा) अनुरुध्यति	य ङ औ
रुध	७	आवरणे (त) रुन्धे	रुणद्धि गोपो गां गोष्ठे	[र, औ ध, न, ञि, इ
रुप	४	व्याकुलत्वे	रुप्यति	य इ र
रुश	६	हिंसायां	रुषति	श औ
रुश	१०	दीप्तौ	रुंशयति (वा) रुंशति	इ कि
रुष	१	हिंसायां	रोषति	
रुष	४	रोषे प्रतिघाते च	रुष्यति रोषः	य इर् ञि
रुष	१०	रोषे	रोषयति रोषः	क
रुह	१	जन्मप्रादुर्भावयोः	रोहतिमृत्तिकाया घटः रोहति विष्णुर्देवकया	ञि ज आ
रूप	१०	रूपक्रियायां	रूपयति गात्रैर्विलासिनी-रूपं, निरूपणं	क त
रूष	१	भूषायां	रूषतिशरीरमलंकरणेन-मुग्धा प्रियार्थं	
रेक	१	शंकायां	रेकते	ऋ ङ
रेखा	११	श्लाघासादनयोः	रेखायति याचकः स्वार्थ-दानिनं	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रेज	१	दीप्तौ	रेजते	ऋ ङ
रेट	१	परिभाषणे,याचनेच	रेटति (वा) रेटते	ऋ ङ
रेप	१	शब्दे, गमनेच	रेपते	ऋ ङ
रेभ	१	शब्दे	रेभते	ऋ ङ
रेव	१	प्लवगतौच	रेवते रेवा रेवती	ऋ ङ
रेष	१	अव्यक्ते शब्दे	रेषते रेषा	ऋ ङ
रै	१	शब्दे	रायति	
रोड	१	अनादरे उन्मादेच	रोडति खलः साधुं	ऋ
रौट	१	अनादरे	रौटति	ऋ
रौड	१	अनादरे	रौडति	ऋ
लक	१०	आस्वादने (त.) आप्ने	लाकयति	क
लक्ष	१-१०	दर्शनांकनयोः	लक्षयति (वा) लक्षयते—लक्षणं	क इ
लक्ष	१०	आलोचने	लक्षयते	क ङ
लख	१		लखति	
लख	१		लंखति	इ
लग	१	संगे	लगति धर्मे विप्रः लग्नं	म ए
लग	१०	स्वादापने	लगयति	क
लग	१	गतिखंजयोः	लंगति	इ
लघ	१	गतौ अभुग्गत्योः	लंघते	इ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लघ	१	शोषणे–गतौ	लंघति मर्यादां लंघति पापी	इ
लघ	१०	भाषार्थे–त्विषि	लंघयति	क इ
लछ	१	लक्षणे	लछति चक्रेण गृहं	
लज	१०	अन्तर्द्धौ	लजयति	क
लज	१०	भानिकेतनहिंसाब-लदानेषु	लंजयति	क इ
लज	१०	प्रकाशने	लजयति विद्या विप्रः लाजा	क त
लज	१	भर्त्सने	लजति	
लज	१	भर्त्सने	लंजति	इ
लज	६	व्रीडे	लजति (वा) लजते वधूः	श ञ इ ओ
लंज	१०	भासने	लंजयति	क त
लट	१	बाल्ये बाल्योक्तौ	लटति स्वार्थे लोकः	
लड	१	विलासे	लडति	
लड	१	जिव्होन्मथने	लडयति रसनां परद्रव्ये चोरः	म
लड	१०	उपसेवायां	लडयति शिशुं माता	क
लड	१०	ईप्सायां	लडयते	क ङ
लड	१-१०	भाषणे भासनेच	लंडति (वा) लंडयति	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरणं.	अनुबन्ध.
लड	१-१०	उत्क्षेपे	लंडति (वा) लंडयति.	कि इ औ
लड	१०	आक्षेपे	लडयति	क त
लप	१	व्यक्तायांवाचि	लपति विलापः प्रलापः आलापः अनुलापः विप्रलापः संलापः सुप्रलापः अपलापः	अ
लब	१	अवस्रंसने अवलंबने शद्वेच	लबते शाखायां	इ ङ
लभ	१	शद्वे	लभते	ई ङ
लभ	१	प्राप्तौ	लभते भिक्षां लाभः सुलभः भा भं लभंति पुनरुत्थानं	ङ प डु ओ
लय	१	गतौ	लयते	ङ
लर्ब	१	गतौ	लर्बति शकटेन गोकुलात् मथुरांनंदः	
लल	१०	ईप्सायां	लालयते सुतं बाला	क ङ
लश	१०		(इतिलस)	
लष	१	कान्तौ	लषति (वा) लषते धर्मं साधुः	ञ
लष	४	कान्तौ	लष्यति (वा) लष्यते	य ञ
लष	१०		(इतिलस)	

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
लस	१	श्लेषणविलसयो	लपति विलसति विलास	
लस	१०	शिल्पयोगे	लासयति नटो बाला	क
लस्ज	६	व्रीडे	लज्जते वधु लज्जा लज्जित—ता—त	श इ इ ओ
ला	२	दाने आदानेच	लाति	ल
लाख	१	शोषणालमर्थयो	लाखति हिमेन वृक्ष	ऋ
लाघ	१	सामर्थ्ये	लाघते	ऋ इ
लाछ	१	लक्षणे	लाछति	इ
लाज	१	भर्त्सने भर्गेच	लाजते	इ इ
लाज	१	भर्त्सने भर्गेच	लाजति	
लाट	११	जीवने	लाट्यति जीरजातमधसा	ट
लाड	१०	आक्षेपे	लाडयति	क त
लाभ	१०	प्रेरणे	लाभयति लाभाय मूलविंश्य लाभ	क त
लिख	१	गतौ	लेखति	
लिख	६	लेखने	लिखति लेखरो ग्रथ लेखन लिखित लेखा लेखनी	श
लिग	१	गतौ	लिंगति	इ
लिग	१	चित्रीकरणे	लिंगयति पट रगकार	क इ
लिट	११	अल्पकुत्सनयो	लिट्यति पितरिपुत्र	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लिप	६	उपदेहे	लिंपति (वा) लिंपते देहं चंदनेन जनः	श प न नि औ
लिश	६	गतौ	लिशति	श औ
लिश	४	अल्पीभावे	लिश्यते देहो रोगेन, लेशः, लिष्टः, टा टं	य ङ औ
लिह	२	आस्वादने	लेढि (त.) लीढे गुडं बालः	ल न औ
ली	१-१०	द्रवीकरणे	लयति (वा) लाययति वन्हिनाघृतंहोता	कि
ली	४	श्लेषणे	लीयते लज्जया भूमिंनारी	य ङ
ली	९	श्लेषणे	लीनाति पतिंनारी	ग गि
लीड	१	उन्मादने	लीडति	ऋ
लुंच	१	अपनयने	लुंचति	
लुज	१०	भानिकेतनहिंसाबलदानेषु	लुंजयति	क इं
लुट	१	विलोडने	लोटति भूमौ	
लुंट	४	विलोडने	लुट्यति रावणः पुत्रशोकेन	य ल ऋ
लुट	१	प्रतिघाते	लोटते विरहेण भूमौ रामः	ङ ल
लुट	६	संश्लेषणे	लुटति	श शि
लुट	१०	भाषार्थे भासार्थेच	लोटयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
लुट	१	स्तेये	लुंटति धनं	इ
लुंट	१-१०	स्तेये (त०) अवज्ञायांच	लुंटाति (वा) लुंटयति	कि
लुठ	१	उपघाते	लोठति कलिर्धर्मं	
लुठ	१	प्रतिघाते	लोठते विरहेण भूमौ रामः	ऌ ङ
लुठ	६	लोठे	लुठति	श शि
लुठ	१०	चौर्ये	लोठयति	क
लुंठ	१	आलस्ये (त.) गत्यालस्यस्तेयखोटेषु	लुंठति	इ
लुड	१	मन्थने	लोडति	
लुड	६	संवृतौ, श्लिषे	लुडति	श शि
लुण्ड,लुड	१०	चौर्ये	लुण्डयति	क
लुथ	१	हिंसासंक्लेशयोः	लुन्थति रावणं रामः रावणशरेण रामो न लुन्थति	इ
लुप	४	व्याकुलत्वे	लुप्यति	य ई र
लुप	६	छेदने	लुंपति (वा) लुंपते काष्ठ मर्द्धकैः लोपः लुप्तः ना तं	श प न ऋ ऌ औ
लुभ	१-१०	अर्दने—अदर्शने	लुंभति (वा) लुंभयति	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लुभ	४	गार्ध्ये	लुभ्याति पुत्रंवंध्या लोभः लुब्धः घा घं	य
लुभ	६	विमोहने	लुभाति मूढं मायिकः	श
लुप,लूप	१०	हिंसायां (त०) स्तेये	लोपयति	क
लुप,लूप	१	स्तेये, भूषायांच	लोपते	ङ
लुह	१	गार्ध्ये	लोहति	ओ
लू	९	छेदने	लुनाति (वा) लुनीते	ग ञि ञ
लंच	१	अपनयने	लंचाति	
लेख	११	विलासेस्खलनेच	लेख्याति धूर्त्तो मनासि	ट
लेखा	११	विलासे स्खलनेच	लेखायाति द्विजोऽतिभोजने	ट
लेट	११	धौर्त्ये–पूर्वभावेस्वनेच—	लोटयति कामुकः प्रिययाक्षपायां	ट
लेप	१	गमने शब्देच	लेपते	ङ
लेला	११	दीप्तौ	लेलायति	ट
लोक	१	दर्शने	लोकते	ऋ ङ
लोक	१०	भाषार्थे दीप्तौच	लोकयते	क ङ ऋ
लोच	१	दर्शने	लोचते	ऋ ङ
लोच	१०	भाषार्थे द्विपि	लोचयति	क ऋ
लोट	१	उन्मादे	लोटति	ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लोट	११	धौर्त्य-पूर्वभावे	लोट्याति धूर्तः	ट
लोष्ट	१	संघाते	लोष्टते धान्यं लोष्टः	ङ
लौड	१	उन्मादने	लौडति	ण
ल्यी	९	श्लेषणे	ल्यीनाति	ग गि
ल्वी	९	गत्यां	ल्वीनाति	ग गि
वक	१	कौटिल्ये	वंकते वंक	इ ङ
वक्क	१	गतौ	वक्कते	ङ
वक्ष	१	रोषे (त०) संहतौ.	वक्षति शिशु वक्षः	
वख	१	गतौ	वखति	
वख	१	गतौ	वंखति	इ
वग	१	गतौ-खंजेच	वंगति	इ
वघ	१	गतौ-गत्याक्षेपेच	वंघते	इ ङ
वच	१	वाचि	वचति	औ
वच	२	परिभाषणे	वक्ति	ल औ
वच	१०	संदेशने	वाचयति पत्रं कृष्णाय रुक्मिणीवाचिकः	क
वच	१	एकचर्य्यायां	वंचते	इ ङ
वंच	१	गत्यां	वंचति	उ
वंच	१०	प्रलंभने वंचनेच	वंचयते वंचना	क ङ
वज	१	गतौ	वजति	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वट	१	परिभाषणे	वटति	म
वट	१	वेष्टने	वटति कंटकने वार्टी	
वट	१०	ग्रंथे	वटयति माल्यं मालाकारः वेष्टनं वाटयति	क त
वट	१०	विभाजने	वटयति भूमिं ग्रामिकः	क त
वट	१-१०	विभाजने	वंटति (वा.) वंटयति धनं	क इ
वंट	१०	भागे	वंटयति	क त
वठ,वठ	१	स्थौल्ये	वठति	
वठ	१	एकचर्य्यायां	वंठते	इ ङ
वड	१०	विभागे	वंडयति	क इ
वड	१	वेष्टने (त.) विभागे	वंडते कंटकैर्वार्टी	इ ङ
वण	१	शब्दे	वणति	ऋ
वद	१	व्यक्तायांवाचि	वदति संवत्	ऐ
वद	१-१०	भाषणे संदेशवचने	वदते (वा) वादयते	कि ङ
वद	१	स्थैर्य्ये	वदति मेरुः	
वद	१	अभिवादनस्तुत्योः	वन्दते हरिं वन्दना	इ ङ
वध	१	हिंसायां	वधति	
वन	१	हिंसायां	वनति	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वन	१	संभक्तौ (त.) शब्दे	वनति	
वन	१-१०	उपकृतौ श्रद्धा शति शब्दे उपधा-नेच	वनति (वा) वनयति	कि
वन	१	व्याप्तौ	वनयति—परिउपसर्गे प-रिवानयति	म उ
वन	८	याचने	वनुते भिक्षुः	द ड उ
वप	१	बीजतंतुसंताने (तथा) मुण्डे	वपति बीजं सत्क्षेत्रे पटं वपते तन्तुवायः उप्तः ना तं	डु ऐ औ ञ
वम	१	उद्गिरणे	वमति शोणितं	टु उ ञ
वय	१	गतौ	वयते	ङ
वर	१०	इप्सायां	वरयति वरं स्वयंवरे वराः	क त
वरण	११	गतौ	वरण्यति	ट
वर्घ	१	गत्यां	वर्घति	
वर्च	१	दीप्तौ	वर्चते	ङ
वर्ध	१०	छेदनपूरणयोः	वर्धयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वर्ण	१०	वर्णक्रिया विस्तार-गुणवर्णने वचने प्रेरणेच	वर्णयति वर्णः	क त
वद्ध	१०	पूर्त्तिछेदोः	वद्धयति	क
वर्ह-बर्ह	१-१०	भाषार्थे त्विषि	वर्हति (वा) वर्हयति	कि
वर्ह-बर्ह	१	श्रैष्ठ्ये	वर्हते	ङ
वर्ह-बर्ह	१०	हिंसायां (त.) दीप्तौ	वर्हयति वर्ह	क
वभ्र	१	गतौ	वभ्राति	
वल	१	संवरणे	वलते धनं	ङ
वल्ल	१	संवरणे	वल्लते वाल्लिः वल्लभः	
वल्भ वन्भ	१	भोजने	वल्भते	ङ
वल्क	१०	भाषणे	वल्कयति वल्कः वल्कः	क
वल्ग,वल्ग	१	व्रजे	वल्गति	क त
वल्गु	११	पूजामाधुर्ययोः	वल्गूयति द्विजोऽतिवैभवेन	ट
वल्युल वल्यूल	१०	लूनिपूत्योः	वल्युलयति	
वल्ह,वल्ह	१	त्वि.षि	वल्हयति	क
वल्ह,वल्ह	१	श्रैष्ठ्ये	वल्हते	ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वश	२	कान्तौ	वष्टि वशः तस्य वशे वशा	ल
वष	१	हिंसायां	वषति	
वष्क(वा) वस्क	१	गतौ	वस्कते	ङ
वस	१०	स्नेहनछेदनहननेषु	वासयति पुत्रं पिता वासयति वृक्षं तक्षा वासयति चोरं राजा	क
वस	१	निवासे	निवसति (वा) वसते चित्ते हरिः, निवास.	ऐ ञ औ
वस	१०	निवासे	वसयति	क त
वस	२	आछादने	वस्ते मुखं हस्तेन वस्त्रं	ल ङ
वस	४	स्तंभे	वस्यति मनो मुनि	य उ इ र
वस्त	१	अर्दने	वस्तयते	क ङ
वह	१	प्रापणे	वहति भारं शकटमुवाह वृषः वहते प्रवाहः प्रवहः	ऐ ञ औ
वह,बह	१	वृद्धौ	वंहते	इ ङ
वह	१०	द्युतौ	वंहयति	क इ
वा	१०	सुखासेवागतिसेवासु	वापयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वा	२	गतिगंधनयोः गमनहिंसयोः	वातिवायुः	ल
वाक्ष	१	कांक्षायां	वांक्षति वांक्षा	इ
वाछ	१	इच्छायां	वाछति वांछा	इ
वाड	१	आप्लावे प्रीतौ च	वाडते गंगायां मुनिः चक्रवालं	ऋ ङ
वात	१०	सुखसेवनयोः गतौ	वातयति व्यजनेन पतिं पतिव्रता	क त
वाध,वाध	१	विलोडने	वाधते साधुं खलः वाधा	ऋ ङ
वाश	४	शद्बे	वाश्यते	य ऋ ङ
वास	१०	उपसेवायां	वासयति गृहं धूपः	क त
वाह	१	प्रयत्ने	वाहते वाढं	ऋ ङ
विच	७	पृथग्भावे	विनक्ति (वा) विंक्ते धनं भ्राता विवेकः	ध लि ञ इर् औ
विछ	६	गतौ	विछति	श
विछ	१०	भाषार्थे, त्विषित्र	विछयति	क
विज	३	पृथग्भावे	विवेक्ति देहादात्मानं विवेकने	लि इर् औ
विज	६	भयचलनयोः	उद्विजते खलात्साधुः, वेगः, उद्वेगः	श ङ ई औ
विज	७	भयचलनयोः	विनक्ति लोकः	ध ई ओ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
विट	१	शब्दे (त.) आक्रोश	वेटति	
विट	१०	क्षित्यां	विंटयति	क इ
विड, विड	१	आक्रोशे	वेडति विडालः	
वित्त	१०	त्यागे	वित्तयति वित्तं	क त
विथ	१	याचने	वेथते धनिनं भिक्षुः	ऋ ङ
विद	२	ज्ञाने	वेत्ति विष्णुं बुधः वेदः	ल
विद	७	विचारणे	विन्ते ब्रह्म विवेकी	ध ङ ओ
विद	४	सत्तायां	विद्यते	य ङ ओ
विद	६	लाभे	विंदति (वा) विंदते पुण्यंदाता	श, प, म, ल, औ,
विद	१०	वेदनाख्यानविवासेषु	वेदयते दुःखं भिक्षुः	क ङ
विध	६	विधाने	विधति विश्वं वेधाः विधिः	श
विप	१०	क्षेपे	वेपयति	क
विल	६	भेदने (त.) स्मृतौ	विलति तरुं हस्ती विलं (इतिबिलः)	श
विश	६	प्रवेशे	विशति विवेश	श औ
विष	१	सिंचने	वेषति वेषः	उ
विष	३	व्याप्तौ	वेवेष्टि (वा) वेविष्टे विश्वं विष्णुः	लि इर् औ ञ लृ
विष	९	विप्रयोगे	विष्णाति	ग औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
विष्क	१०	हिंसायां	विष्कयति	क
विस	४	प्रेरणे	विस्यति विसं विशं विषं	य उ
वी	२	कांतिगतिव्याप्ति क्षेपप्रजनखादनेषु	वेति	ल
वीज	१०	व्यजने	वीजयति	क त
वीभ	१	कत्थने कत्थनं-श्लाघा	वीभते	ऋ ङ
वीर	१०	विक्रांतौ	वीरयति वीरः	क त ङ
वुग	१	त्यागे	वुंगति खलं साधुः	इ
वुट,वुट	१-१०	हिंसे	वोटति (वा) वोटयति	कि
वुस,वुस	४	उत्सर्गे	वुस्यति कंचुकं सर्पः वुसं	य
वृ	५	वरणे	वृणोति (वा) वृणुते व-रं कन्या	न ञ
वृ	९	वरणे	वृणाति	ग
वृ	९	संभक्तौ	वृणीते विष्णुं विवेकी	ग ङ
वृ	१	आवरणे	वरति (वा) वरते	ञ
वृ	१०	आवरणे	वारयति	क
वृक	१	आदाने	वर्कते वृकः	ङ
वृक्ष	१	वरणे संघातेच	वृक्षते कन्या वरं वृक्षः	ङ
वृच	७	वृतौ	वृणक्ति	घ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृज	१-१०	वर्जने	वर्जति (वा) वर्जयति	कि
वृज	२	वर्जने	वृक्ते कपटं साधुः	ल ह इ
वृज	७	वर्जने (त.) वृतौ	वृणक्ति खलं शिष्टः	घ ई
वृड	९	मुखे	वृड्णाति	ग
वृण	६	प्रीणने	वृणति	श
वृण	८	भक्षे	वृणोति (वा) वृणुते	द ञ उ
वृत	१	वर्त्तने	वर्त्तते वार्त्ता	व उ ङ ल
वृत	४	सम्भक्तौ	वरणे वृत्यते	य ह उ
वृत	१०	भाषार्थे स्त्विपि	वर्त्तयति	क उ
वृध	१०	भाषार्थे दीप्तौ	वर्द्धयति	क
वृध	१	वृद्धौ	वर्द्धते धर्मेण	य ङ व ल
वृष	१	सेचने (त०) प-जनैश्वर्ययोः	वर्षति वृषः	उ
वृष	१०	शक्तिबंधने सेचने-प्रजने ऐश्वर्ये च	वर्षयते सर्पं मंत्री	क ङ
वृह	१-१०	भाषार्थे-द्युतौ	वृंहति (वा) वृंहयति	कि इ
वृह	१	वृद्धौ ध्वनौ	वृंहति वृंहितं	इ
वृह	६	उद्यमे	वृहति वैश्यः	श ऊ
वृह	१	वृद्धौ	वर्हति	
वृह	१	ध्वनद्धर्योः	वर्हति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृ	९	वरणे (अथवा) भरणे	वृणाति (वा) वृणीते	ग ञ
वे	१	तंतु संताने	वयति(वा)वयते वस्त्रं तंतु-वाय:	ए ञ
वेण	१	ज्ञानचिंतानिशामनेषु	वेणति (वा) वेणते	ऋ ञ
वेथ	१	याचने	वेथते वेथित:-वेथ:	ऋ ङ
वेद	११	धौर्त्ये, स्वप्ने च	वेद्यति ज्ञानी विषयेषु	?
वेन	१	गतिज्ञानचिंतानिशामनवादित्रग्रहणचलनेषु	वनति तपस्व्यत्त्यभ्यासेन	ऋ
वेप	१	चलने	वेपते वातेनवृक्ष:	ऋ टु ङ
वेल	१०	कालोपदेशे	वेलयति दिनं गणक:-वेला	क त
वेल	१	गतौ	वेलति वेला	ऊ
वेल्ल	१	गतौ	वेल्लति	
वेह्ल	१	चाले	वेह्लति	ङ
वेवी	१	कांतिगतिव्याप्तिक्षेपप्रजनखादनेषु	वेवीते	लु ङ र क्ष
वेष्ट	१	वेष्टने	वेष्टते	ङ
वेस	१	गतौ	वेसति	इ ऱ्
वेह	१	प्रयत्ने	वेहते वेहत्	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृज	१-१०	वर्जने	वर्जति (वा) वर्जयति	कि
वृज	२	वर्जने	वृक्ते कपटं साधुः	ल इ इ
वृज	७	वर्जने (त.) वृत्तौ	वृणक्ति खल शिष्टः	ध ई
वृड	९	सुखे	वृड्णाति	ग
वृण	६	प्रीणने	वृणति	श
वृण	८	भक्षे	वृणोति (वा) वृणुते	द ञ उ
वृत	१	वर्त्तने	वर्त्तते वार्त्ता	व उ ङ ल
वृत	४	सम्भक्तौ	वरणे वृत्यते	य ङ उ
वृत	१०	भाषार्थे दिवपि	वर्त्तयति	क उ
वृध	१०	भाषार्थे दीप्तौ	वर्द्धयति	क
वृध	१	वृद्धौ	वर्द्धते धर्मेण	य ङ व ल
वृष	१	सेचने (त०) प्रजननैश्वर्ययोः	वर्षति वृषः	उ
वृष	१०	शक्तिबन्धने सेचने-प्रजने ऐश्वर्ये च	वर्षयते सर्प मंत्री	क ङ
वृह	१-१०	भाषार्थे-द्युतौ	वृंहति (वा) वृंहयति	कि इ
वृह	१	वृद्धौ ध्वनौ	वृहति वृंहितं	इ
वृह	६	उद्यमे	वृहति वैश्यः	श ऊँ
वृह	१	वृद्धौ	वर्हति	
वृह	१	ध्वनदद्धयोः	वर्हति	इ ए

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृ	९	वरणे (अथवा) भरणे	वृणाति (वा) वृणीते	ग ञ
वे	१	तंतु संताने	वयति (वा) वयते वस्त्रं तंतुवाय:	ए ञ
वेण	१	ज्ञानचिंतानिशामनेषु	वेणाति (वा) वेणते	ऋ ञ
वेथ	१	याचने	वेथते वेथित:-वेथ:	ऋ ङ
वेद	११	धौर्त्ये, स्वप्ने च	वेद्यति ज्ञानी विषयेषु	?
वेन	१	गतिज्ञानचिंतानिशामनवादित्रग्रहणचलनेषु	वनति तपस्व्यत्त्यभ्यासेन	ऋ
वेप	१	चलने	वेपते वातेनवृक्ष:	ऋ टु ङ
वेल	१०	कालोपदेशे	वेलयति दिनं गणक:-वेला	क त
वेल	१	गतौ	वेलति वेला	ऊ
वेल्ल	१	गतौ	वेल्लति	
वेल्ह	१	चाले	वेल्हति	ङ
वेवी	१	कांतिगतिव्याप्तिक्षेपप्रजनखादनेषु	वेवीते	लु ङ र क्ष
वेष्ट	१	वेष्टने	वेष्टते	ङ
वेस	१	गतौ	वेसाति	इ ?̣
वेह	१	प्रयत्ने	वेहते वेहत्	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वै	१	शोषणे	वायति	औ
व्यच	६	व्याजीकरणे (त.) सम्भवे	व्यचति साधुं धूर्त्तः	श शि
व्यथ	१	दुःखभयचलने	व्यथते पापात्साधुः व्यथा	ष म ङ
व्यध	४	ताडने	विध्यति व्याधो मृगं	य औ
व्यप	१०	क्षये	व्यपयति	क
व्यय	१	गतौ	व्ययति (वा) व्ययते	ञ
व्यय	१०	क्षेपे	व्याययति	क
व्यय	१०	वित्तसमुत्सर्गे	व्ययति धनं व्ययशीलः	क त
व्युष	१०	उत्सर्गे	व्योषयति रोगवानौषधं	क
व्युस	४	हानौ-दाहेच	व्युस्यति	य ईर्
व्युस	४	विभागे	व्युस्यति	य
व्ये	१	संवरणे	संव्ययति (वा) संव्ययते स्तनं वस्त्रेण नारी	ञ
व्रज	१	गतौ	व्रजति व्रजः	
व्रज	१०	संस्कृतौ गतौ त्यागेच	व्रजयति	क
व्रण, व्रण	१	शब्दे	व्रणति	
व्रण, व्रण	१०	गात्रविचूर्णने	व्रणयति भीष्मं शरैरर्जुनः, व्रणः, व्रण	क त
व्रश्च	६	छेदने	वृश्चति मूलं पापी	श ओ ऊ
व्री	९	वरणे	व्रीणाति वरं नारी	ऊ ष

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
व्री	९	वरणे	व्रीणाति रणं शूरः	ग गि
व्रीड	४	लज्जायां (त०) क्षिपि	व्रीड्यति वधूः व्रीडा	य नि
व्रीस	१-१०	वधे	व्रीसति (वा) व्रीसयति	कि
व्रुड	६	संवृत्ति संहति मार्जनेषु	व्रुडति	श शि
व्रुड	६	निमज्जने	व्रुडति	श
व्रुस	१-१०	वधे	व्रुसति (वा व्रुंसयति	कि
व्ली	९	वारणे-गत्यां-वृत्यां	व्लीनाति भुवं शेषः (त०) व्लेपयति	ग गि
व्लेक्ष	१०	दृशि	व्लेक्षयति	क त
शक	४	क्षमायां	शक्यति (वा) शक्यते शिष्यापराधं गुरुः	य न
शक	५	शक्तौ	शक्नोति कंसं जेतुं कृष्णः	न इर् ऌ
शक	१	त्रासशंकयोः	शंकाति	इ ङ
शव	१	हिंसायां	शर्घति शर्घः	
शच	१	व्यक्तायांवाचि	शचते कविः	ङ
शच	१	गतौ	शंचते	इ ङ
शट	१	रुजाविशरण गत्यवसादनेषु	शटति	
शट	१०	श्लाघे	शटयते	क ङ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शठ	१	कैतवे (त०) वधे क्लेशे च	शठति शठः	·
शठ	१०	श्लाघायां	शठयते	क इ
शठ	१०	संस्कारगत्योः आलस्ये–गतौ असंस्कृतसंस्कृते	शाठयति	क
शठ	१०	सम्यग्भाषणे दुर्वाचि	शठयति शठोन धर्मं	क त
शड	१	रुजायां (त०) संघे	शंडते शंडः	इ ङ
शण	१	दाने	शणति	म
शद	१	आ उपसर्गे (आ) गतौ	आशदति	औ
शद	१	शातने	शीयते वृक्षात् पत्रं	ऌ ज औ
शंस	१	कथने (त०) हिंसायां स्तुतौ	शंसति स्वकुलं साधुः	उ
शप	१	आक्रोशे	शपति (वा) शपते दुर्वासाः शक्राय शापः	ञ
शप	४	आक्रोशे	शप्यति (वा) शप्यते शपितं साधुः	य ञ औ
शंब	१	गतौ	शंबति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शंव	१०	संबंधे	शंवाति धनं यतिः, शंवः, सवुः, शंवुकः शंवुकःशं-वुका शांवुकः	क
शब्द	१०	शब्दकृतौ (अथवा) उपसर्गे आविष्कारे	शब्दयते प्रशब्दयति प्रियशिष्याय गूढमर्थं गुरुः	क
शम	१	अदर्शने (त०) दर्शने	शमयति जलधरो जलैस्तापं निशामयति रूपं वेश्या	
शम	४	उपशमे	शाम्यति मुनिः	य उ भ इ र्
शम	१०	आलोचने	शामयति कार्यं मंत्री	क ङ
शर्ध	१०	अभिकांक्षायां	शर्धयति	क
शर्व,शार्व	१	हिंसायां—गतौ	शर्वति	
शर्व	१	हिंसायां	शर्वति	
शल	१	चलने (त०) स्तृनौ	शलते पथिकः	ङ
शल	१	वेगे	शलति	
शल	१०	श्लाघे	शलयति	क ङ
शल्भ	१	कत्थने	शल्भते	ङ
शव	१	गतौ (त०) विकारे	शवति शवः शवं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शश	१	प्लुतगतौ	शशति शशः	
शष	१	वधे	शषति	
शस	१	हिंसायां	शसति कंसं हरिः	उ
शस	२	स्वप्ने	शसति	ळ लु
शंस	१	आङुपसर्गे इच्छायां	आशंसते मोक्षं मुनिः	इ ङ
शंस	१	स्तुतौ दुर्गतावपि	शंसति	उ
शस्त	२	स्वप्ने	शस्तिति	ळ लु इर्
शाख	१	व्याप्तौ	शाखति शाखा गगनं शाखा	ऋ
शाड	१	श्लाघायां	शाडते गुणिनं जनः	ऋ ङ
शान	१	तेजने	शीशांसति (वा) शीशांसते शूलं	ञ
शार	१०	दौर्बल्ये	शारयति	क त
शाल	१	कत्थने	शालते	ऋ ङ
शास	२	आङुपसर्गे आशिषि	आशास्ते	ळ ऋ ङ
शास	१	आङुपसर्गे आशिषि	आशास्ते	उ ङ
शास	२	अनुशिष्टौ	शास्ति शासनं	ळ लु उ क्ष

धातुः	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
शि	५	निशाने	शिनोति (वा) शिनुते शूलं	न ञ
शिक्ष	१	विद्योपादाने	शिक्षते शिक्षा	ङ
शिख	१	गतौ	शिखति	
शिख	१	गतौ	शिखति	इ
शिघ	१	आघ्राणे	शिंघति कुसुमं कृष्णः शिंघानं	इ
शिज	२	अव्यक्ते शब्दे	शिंक्तेरसना शिंजितं	ल
शिज	१-१०	अव्यक्ते शब्दे	शिंजते (वा) शिंजयते	कि ङ
शिट	१	अनादरे	शेटति साधुं मंदः	ऋ
शिल	६	उंछे	शिलति ध्यानं विप्रः	श
शिष	१	हिंसायां	शेषति शेषः	
शिष	१०	परिशेषीकरणे	शेषयति धनं पुत्रायपिता शेषं	क
शिष	७	विशेषणे	विशिनष्टि गुणैर्विष्णुं	ध नि लृ औ
शी	२	स्वप्ने	शेते सुखं शयालुः (अथवा) मंडले शयामि	ल ङि
शीक	१-१०	आमर्पणे स्पर्शे—सेके—दीप्तौ	शीकति (वा) शीकयति	कि
शीक	१	सेचने—स्पर्शे	शीकते मेघो भूमिं	ऋ ङ
शीभ	१	कत्थने	शीभते	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
शील	१	समाधौ	शीलति सुशील·	ञि
शील	१०	उपधारणे— अभ्यासे—अतिशायने	शीलयति नीलनिचोल शीलं	क त
शुक	१	गतौ—स्पर्शे	शोकति	
शुच	१	प्रतिघाते	शोचति शोचना शोक	
शुच	१	शोके	शोचति शोकः शुचि.	
शुच	४	पूतिभावे—विशरणे क्लेदे	शुच्यति (वा) शुच्यते तपसा विप्रः	य ञ इर् ई
शुच्य	१	अभिषवे	शुच्यति	ई
शुठ	१	शोषणे	शुठति शुंठी	इ
शुठ	१०	शोषणे	शुठयति शुंठी जन· शुंठी	क इ
शुठ	१	खोटने प्रतिघातेच	शोठति	
शुठ	१	खोटने	शुठति	इ
शुठ	१०	आलस्ये	शोठयति	क
शुठ	१०	संस्कारगत्योः	शुठयति	क इ
शुध	४	शौचे	नर शुद्धचति सत्संगात्	य ल औ
शुंध	१	शुद्धौ	योग·शुंधति सत्वेन शुध्दः	
शुंध	१-१०	शुद्धौ	शुंधेत (वा) शुंधयते	कि क
शुन	६	गतौ	शुनति शुनकः	श
शुभ	१	भासने	शोभति न शोभति समामध्ये	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शुभ	१	दीप्तौ	शोभते शोभा	ऌ ङ
शुभ	६	शोभायां	शुभति विद्यया विप्रः	श
शुभ	६	दीप्तौ	शुभति	श प
शुंभ	६	शोभायां	शुंभते	श
शुभ	१	भासने	शुंभति	
शुल्क	१०	भाषणे-संघाते—सर्जने—वर्जने—अतिस्पर्शने	शुल्कयति	क
शुल्व	१०	माने—सर्गेच	शुल्वयति	क
शुल्व	१०	सर्जने	शुल्वयति विश्वं विधाता शुल्वं	क
शुष	४	शोषणे	शुष्यन्ति मत्स्या नविना नुवाहं शोषः (त०) शुष्कः का कं	य औ ऌ
शूर	१०	विक्रांतौ	शूरयते शूरः	क त ङ
शूर्	४	स्तंभे हिंसायांच	शूर्यते	य ङ ई
शूर्प	१०	माने	शूर्पयति शूर्पेण धान्यं नारी शूर्पणखा	क
शूल	१	रुजायां	शूलति चोरं शूलं	
शूष	१	प्रसवे	शूषति	
शृध	१	शब्दकुत्सायां	शर्द्धतेखरः	उ ऌ ङ व

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्रण	१०	दाने	श्राणयति गां राजा-विश्राणनं	क
श्रथ	१-१०	बंधने-मोक्षे—वधे	श्रथाति (वा) श्रथयति-कुसुमैः केशं नारी	कि
श्रथ	१	वधे	श्रथति	म
श्रथ	१०	दौर्बल्ये	श्रथयति	क त
श्रथ	१०	प्रतिहर्षमोक्षयत्न-योः	श्रथयति	क
श्रथ	१	शैथिल्ये	श्रंथते नीवीं	इ ङ
श्रंथ	१-१०	संदर्भे (त०) वधे	श्रंथति (वा) श्रंथयति	कि
श्रंथ	९	मोचन प्रतिहर्षयोः, संदर्भे	श्रथ्नातिमुमुक्षुं हरिःश्रथ्नाति	ग
श्रंम	१	प्रमादे	श्रंमति	उ
श्रम	४	खेदे तपसि	श्राम्यति मार्गे पथिकः श्रमः श्रान्तः—ता-तं-श्रान्तिः	य म उ ञि इर्
श्रा	२	स्वेदे	श्राति	ख
श्रा	१	पाके	श्राति—श्रपयति यवागूं-भिक्षुः	
श्रा	२	पाके	श्राति शाकं	ल म
श्रा	९	पाके	श्राणाति (वा) श्राणीते,	ग न

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शृध	१	उंदे	शर्द्धति (वा) शर्द्धते जेलन शिरः	उ म
शृध	१०	प्रहसने	शर्धयति मूर्खं बुधः	क उ
शृ	९	हिंसायां	शृणाति शीर्णः-र्णा-र्णं	ग गि
शेल	१	गतौ	शेलति शेलुः	ऊ
शेव	१	सेवने	शेवते	ऋ
शै	१	गतौ पाके च	शायते	
शो	४	निशाने	श्यति शित.-ता-तं	य
शो	४	तनूकरणे	श्यति काष्ठं वर्द्धकिः	य
शोण	१	वर्णगत्योः	शोणति पद्मं शोण शोणितं	ऋ
शौट	१	गर्वे	शौटति मूर्खः	ऋ
शौड	१	गर्वे	शौडति	ऋ
श्चुत	१	क्षरणे	श्चोतति	इर्
श्च्युत	१	क्षरणे	श्च्योतति जलं श्च्योतः	इर्
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति नेत्रं	
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति	
श्यै	१	गतौ	श्यायते	ए
श्रक	१	गतौ	श्रंकते	इ ङ
श्रग	१	गतौ	श्रंगति	इ
श्रण	१	दाने	श्रणति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्रण	१०	दाने	श्राणयति गां राजा–विश्राणनं	क
श्रथ	१-१०	बंधने-मोक्षे–वधे	श्रथति (वा) श्रथयति· कुसुमैः केशं नारी	कि
श्रथ	१	वधे	श्रथति	म
श्रथ	१०	दौर्बल्ये	श्रथयति	क त
श्रथ	१०	प्रतिहर्षमोक्षयत्न-योः	श्रथयति	क
श्रथ	१	शैथिल्ये	श्रंथते नीवीं	इ ङ
श्रंथ	१-१०	संदर्भे (त०) वधे	श्रंथति (वा) श्रंथयति	कि
श्रंथ	९	मोचन प्रतिहर्षयोः, संदर्भे	श्रथ्नातिमुमुक्षुं हरिःश्रश्नाति	ग
श्रंम	१	प्रमादे	श्रंमति	उ
श्रम	४	खेदे तपसि	श्राम्यति मार्गे पथिकः श्रमः श्रान्तः–ता-तं–श्रान्तिः	य म उ ञि इर्
श्रा	२	स्वेदे	श्राति	ल
श्रा	१	पाके	श्राति–श्रपयति यवागूं· भिक्षुः	
श्रा	२	पाके	श्राति शाकं	ल म
श्रा	९	पाके	श्राणाति (वा) श्राणीते,	ग न

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्राम	१०	आमंत्रणे	श्रामयति विश्रामः	क त
श्रि	१	सेवने	श्रयति (वा) श्रयते विष्णुं बुधः श्रयणं श्रायः आश्रयः	ञ
श्रिप	१	दाहे	श्रेपति	उ
श्री	१	तर्पणे	श्रयति (वा) श्रयते	ञ
श्री	९	पाके	श्रीणाति (वा) श्रीणीते	ग ञ
श्री	१०	तर्पणे	श्राययति (वा) श्रायय-ते देवतां हविषा यज्वा	क ञ
श्रु	१	श्रवणे	श्रवत्यामघटाज्जलं	
श्रु	५	श्रवणे गतौ	शृणोति	न
श्रै	१	पाके	श्रायति दुग्धं	म
श्रै	१	स्वादे	श्रायति	
श्रोण	१	संघाते	श्रोणति श्रोणी श्रोणिः	ऋ
श्लक	१	गतौ	श्लंकते	इ ङ
श्लग	१	गतौ	श्लंगति	इ
श्लथ	१	हिंसायां	श्लथति	
श्लथ	१०	दौर्बल्ये	श्लथयति	क त
श्लाख	१	व्याप्तौ	श्लाखति	ऋ इ
श्लाघ	१	कत्थने	श्लाघते गुणिनं गुणी श्लाघा	ऋ ङ
श्लिष	१	दाहे	श्लेषति	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्लिप	४	आलिंगने	श्लिप्यति सीता रामं श्लेषः	य लृ ञि ओं
श्लिप	१०	श्लेषणे	श्लेपयति	क
श्लोक	१	संघाते,सर्जने, वर्जने	श्लोकते कविः श्लोकः	ऋ ङ
श्लोण	१	संघाते	श्लोणति	ऋृ
श्वक	१	गतौ	श्वंकते	इ ङ
श्वग	१	व्रजे	श्वंगति	इ
श्वच	१	गत्यां	श्वचते	ङ
श्वच	१	गत्यां	श्वंचते	इ ङ
श्वज	१	गतौ	श्वजते	ङ
श्वज	१	गतौ	श्वंजते	इ ङ
श्वठ	१०	गतौ-असंस्कृतसंस्कृते	श्वठयति	क
श्वठ	१०	गतौ असंस्कृत-संस्कृते	श्वंठयति	क इ
श्वठ	१०	सम्यभाषणे दुर्वाचि	श्वठयति	क त
श्वभ्र	१०	बिले, गतौ, तंके	श्वभ्रयति	क
श्वर्त्त	१०	गत्यां	श्वर्त्तयति	क
श्वल,श्वल्ल	१	वेगे	श्वलति (वा) श्वल्लति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्वस्क	१०	भाषे	श्वस्कयति	क
श्वस	२	प्राणने	श्वसिति–विश्वास–श्वसनं	ल लु ष
श्वि	१	गतिवृद्ध्योः	श्वयति धर्मेण राजा	टु ओ ऐ इर्
श्वित	१	वर्णे	श्वतते गेहं–श्वेतः–ता–तं	ल आ ङ
श्विद	१	शौक्ल्ये	श्विन्दते ज्ञानेन जनः	इ ङ
ष्वग	१	संवरणे	सगति	म ए
षघ	५	हिंसायां	सघ्नोति	न
षच	१	समवाये	सचति साधुः	
षच	१	सेचने	सेचते जलेन भूमिं	ङ
षच्च	१	गतौ	सचति	
षंज	१	सङ्गे	सजति तरुण्यां तरुणः आसक्त.–तः–तं.	औ ञि
षट	१	अवयवे	सटति सटा	
षट्ट	१०	निकेतनहिंसाबलदानेषु	सट्टयति	क
षण	१	सम्भक्तौ	सनति	
षण	८	दाने	सनोति (वा) सनुते विप्राय गां	द न उ
षद	१-१०	गतौ-आ उपसर्गे	आसादति (वा) आसादयति	कि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
षद्	१-६	विशरणगत्यवसादनेषु	सीदति विरहेण पांथः विषादः	श ऌ न औ
षघ	५	जिघांसायां	सघ्नोति	न
षन	१	संभक्तौ	सनति	
षन	८	दाने	सनोति (वा) सनुते	द न उ
षप	१	संबन्धे	सपति	
षंब	१	सर्पणे	संबति	
षम	१	वैक्लव्ये	समति	
षम	१०	वैक्लव्ये आलोचने च	समयति	फ न
षर्ज	१	अर्जने	सर्जति सर्जः	
षर्ब	१	गत्यां	सर्बति	
षर्व	१	सर्पणे हिंसायां च	सर्वति	
षल	१	गतौ	सलति सलिलं	
षस	२	स्वप्ने	सस्ति शिशो हरिः	ह लु द
षस्ज	१	गतौ	सज्जति (वा) सज्जते	अ उ
षस्त	२	स्वप्ने	संस्तिति	ह लु इ
षह	१-१०	मर्षणे	सहति (वा) साहयति न [illegible] सागः	फि
षह	१	मर्षणे	तां न सहते राजा	न द
षह	४	मर्षणे, [illegible]	सह्यति	य

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
पाध			(इति साध)	
पान्त्व	१०	सामयोगे	मान्त्वयति	क
पि	५	बंधने	सिनोति (वा) सिनुते कृ ष्ण यशोदा विषय	न ञ
पि	९	बंधने	सिनाति (वा) सिनीते चौर राजा	ग ञ
पिच	६	क्षरणे	सिंचति (वा) सिंचते	श प औ ञ
पिट	१	अनादरे	सेटति साधु भद्र	
पिध	१	गत्या	सेधति मथुरा कृष्ण	उ
पिध	१	शास्त्रे मांगल्ये च	सेधति शिष्य गुरु सिद्धो य मुनि	ऊ
पिध	४	संराद्धौ	सिध्यति मुनिर्योगेन	य उ औ
पिंभ	१	दीप्तौ हिंसने	सिंभति	उ
पिल	६	उंछे	सिलति	श
पिव	४	तंतुसंताने	सीव्यति कथा योगी-सीवन	य उ
पु	५	अभिषवे मन्थने च	सुनोति (वा) सुनुते. सोम लता विप्र.	न ञ
पु	१	प्रसवे गतौ	प्रसवति पुत्रनारी-प्रसवः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सु	२	प्रसवे, ऐश्वर्ये	सुनोति पुत्रं प्रसवः प्रसूतिः	ल
सुट्ट	१०	तोक्ष्ये, अनादरे	सुट्टयति	क
सुंभ	१	दीप्तौ हिंसने	सुंभति	
सुर	६	ऐश्वर्यदीप्त्योः	सुरति	श
सुह	४	तृप्तौ, शक्तौ च	सुह्यति	य ल
सू	२	प्राणिगर्भविमोचने	सूते देवकी कृष्णं	ल ङ ओ
सू	४	प्रसवे	सूयते पुत्रं धर्मः	य ङ ओ
सू	६	प्रेरणे	सुवति	श
सूद	१	क्षरणे निरसने	सूदते चोरं राजा सूदः	[illegible]
सूद	१०	आस्रुतिहृत्योः निरसने	सूदयति	क
सूष	४	सेचने—हिंसे	सूष्यति	य ङ इ
सूर्क्ष	१	अनादरे	सूर्क्षति	
सूर्क्ष्य वा ईर्क्ष्य	१	ईर्ष्यार्थे	सूर्क्ष्यति (वा) ईर्क्ष्यति	
मूर्ख्य	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सूष	१	प्रसवे	सूषति पुत्रं नारी	
सेकृ	१	गतौ	सेकते	ङ ऋ
सेलृ	१	गतौ	सेलति	ऌ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
षेव	१	सेवने	नीचं समृद्धमपि सेवति (वा) सेवते नीचः	ऋ ङ ञ
षै	१	क्षये	सायति	
षो	४	अन्तकरणे	स्यति कालो लोकं	य
ष्टक	१	प्रतिघाते	स्तकति	म
ष्टग	१-१०	संवरणे	स्तगति (वा) स्तगयति	ए मि
ष्टन	१	शब्दे	स्तनति	मि
ष्टभ	१	प्रतिबन्धे	स्तंभते पापात्पुत्रंपिता स्तंभः	इ ङ
ष्टम	१	वैक्लव्ये	स्तमति	
ष्टम	१०	वैक्लव्ये	स्तमयति	क त
ष्टल	१	स्थितौ	स्थलति	ञ
ष्टृक्ष	१	गतौ	स्तृक्षति	
ष्टृह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
ष्टृह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
ष्टिघ	५	आस्कंदने	स्तिघ्नुते पथिकं वृष्टिः	न ङ
ष्टिप	१	क्षरणे	स्तेपते जलं घटात्	ङ ऋ
ष्टिम	४	आर्द्री भावे	स्तिम्यति तैलेन देहः	य
ष्टीव	१	निरसने	ष्टीवति	उ
ष्टीम	४	आर्द्री भावे	स्तीम्यति तैलेन देहः	य

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ष्टु	२	स्तुतौ	स्तौति (वा) स्तुते स्तवः स्तुतिः	ञ ल
ष्टुच	१	प्रसदे	स्तोचते ज्ञानेन मनः	ङ
ष्टुप	१०	उच्छ्राये	स्तोपयति	क
ष्टुभ	१	स्तंभे	स्तोभते नीचो विद्यया स्तोभते वृद्धशीतम्	
ष्टूप	४	उच्छ्राये	स्तूप्यति	य इर्
ष्टेप	१	क्षरणे	स्तेपते जलं घटात्	ङ ऋ
ष्टेव	१	निरसने	ष्टेवति	
ष्टै	१	वेष्टे	स्तायति	
ष्ट्यै	१	वेष्टणे	स्त्यायति	
ष्ट्यै	१	शब्दसंघाते	ष्ट्यायति लोकः	
ष्ठग	१	संवरणे	स्थगति	म ए
ष्ठस	४	निवासे	स्थयति	य ऌ मि उ
ष्ठा	१	गतिनिवृत्तौ	तिष्ठतिविरलेमुनिः— स्थानं	ञि
ष्ठिव	१	निरसने	ष्ठेवति	
ष्ठिव	४	निरसने	ष्ठीव्यति भुक्तमन्नंबालकः	य उ
ष्ठीव	१	निरसने	ष्ठीवति	
ष्णस	४	निरसने	स्नस्यति	उ य
ष्णा	२	शौचे	स्नाति गंगायां स्नानं	ल

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
ष्णिह	४	प्रीतौ	स्निह्यति शिष्ये गुरुः स्नेहः	य
ष्णिह	१०	स्नेहने	स्नेहयति	क
ष्णु	२	प्रस्रवणे	स्नौति जलं घटात्	ल
ष्णुस	४	भक्षे, निवासेच	स्नस्यति	उ य
ष्णुह	४	उद्गारे	स्नुह्यति	य उ ल
ष्मि	१	ईषद्धसने	स्मयते स्मयः स्मित	ङ
ष्मि	१०	अनादरे	स्माययते	ङ
ष्वक्क	१	सर्पणे	ष्वक्कते	ङ
ष्वंज	१	परिष्वंगे	स्वजते पुत्रं पिता परिष्वजति पाञ्चाली मध्यमं पाण्डुनंदन	औ ञि ङ
ष्वद	१०	स्वादे छेदे	स्वदयति	
ष्वद	१	आस्वादे प्रीतौलिहेच	स्वदते	ङ
ष्वप	२	शये	स्वपति सिंधौ हरिः स्वाप स्वप्न.	ल लु,नि,प औ
ष्वर्त्त	१०	गत्यालकयोः	स्वर्त्तयति	क
ष्विद	१	मोचने, मोहे स्नेहे	स्वेदते पापं तपसा जन	ङ ञि आ ऌ
ष्विद	४	गात्रप्रक्षरणे	स्विद्यति (वा) स्विद्यते घर्मेण प्रस्वेद स्वेदः	य ञ ल आ औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
संकेत	१०	आमंत्रणे	संकेतयति रतये कामिनी कामुकं	क
सग	१	संवरणे	सगति	म ए
संग्राम	१०	युद्धे	संग्रामयते—संग्रामः	क त ङ
सघ	५	हिंसायां	सघ्नोति	न
संज	१	सर्पणे	संजति	
सट	१०	प्रकाशने	सटयति	क त
सट्ट	१०	हिंसायां	सट्टयति	क
सठ,स्वठ	१०	————————	(इति शठ—श्वठ	
सत्र	१०	सन्तानक्रियायां—संबंधे—सन्ततौ	सत्रयते पथिकेभ्यो धार्मिकः, सत्री, सत्रं	क त ङ
सप	१	संबन्धे	सपति	
संवर	११	संभरणे—लज्जायांच	संवर्य्यति गुरुदर्शनाद्वधूः	ट
सभाज	१०	प्रीतिसेवायां दर्शनेच	सभाजयति गुरुंशिष्यः सभाजना	क त
संभूयस्	११	प्रभूतभावे	संभूयस्यति पयोवारिणा	ट
सम्ब	१	सर्पणे	सम्बति	
सम्ब	१०	सम्बन्धे	सम्बयति	क
सर्ज्ज	१	अर्ज्जने	सर्ज्जति	
सर्व्व	१	सर्पणे	सर्व्वति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सह	४	शक्तौ	सह्यति भूवहने वासुकिः (इतिषह)	य
साट	१०	प्रकाशने	साटयति	क त
सांत्व	१०	सामप्रयोगे	सांत्वयति शोकाकुलं ज्ञानी	क त
साध	४	संसिद्धौ	साध्यति ज्ञानेन यतिः सिद्धः	य उ
साध	५	संसिद्धौ	साध्नोति योगेन मुनिः	न औ
साम	१०	सांत्वने, मयाणे	सामयति बालं पयसापिता सामः	क त क्
साम्ब	१०	सम्बन्धे	साम्बयति	क
सार	१०	दौर्बल्ये	सारयति सारः	क त
सिच	६	क्षरणे	सिंचति (वा) सिंचते जलेन गेहं विलासी-सेकः-अभिषेकः	श प ञ औ
सिभ	१	हिंसायां	सेभति कुमंत्री राजानं	उ
सीक	१	सेके गत्यां	सीकते	ङ ऋ
सीक	१-१०	आमर्षे	सीकाति (वा) सीकयति	कि
सु	१	गतौ ऐश्वर्ये प्रसवे	सवति	
सु	५	संधाक्लेदपीडामंथेषु	सुनोति (वा) सुनुते	न ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सुख	१०	तत्क्रियायां	सुखयति	क त
सुख	११	तत्क्रियायां	सुख्यति धनी संसारे	ट
सुट्ट	१०	अनादरे	सुट्टयति	क
सुम्भ	१	द्युतौ हिंसायां	सुम्भति	
सुर	६	ऐश्वर्य्ये दीप्तयोः	सुरति राजा सुरः असुरः (इतिपू)	श
सू				
सूक्ष	१	अनादरे आदरेच	सूक्षति	
सूच	१०	पैशून्ये	सूचयति परदोषं खलः सूचकः	क त
सूत्र	१०	अवमोचने वेष्टनेच	सूत्रयति सूत्रणे कलशं पूरोधाः सूत्रं	क त
सूर	४	हिंसास्तंभनयोः	सूर्य्यते रविरिव योगी	ङ य
सूर्क्ष्य	१	अनादरे ईर्ष्यायां	सूर्क्ष्यति	
सूप	१	प्रसवे	सूपति	
सृ	१	गतौ	सरति तीर्थं मुनिः	
सृ	३	गतौ	ससर्त्ति	लि र
सृ	१०	स्तुतौ	सारयति	क
सृज	६	विसर्गे	सृजति विश्वंवेधा	श ओ
सृज	४	विसर्गे—उत्पादने	संसृज्यते पिता पुत्रं सृज्यते विश्वंविधाता सृष्टिः	
सृप	१	गतौ	सर्पति सर्पः	ल ओ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
सृभ	१	हिंसे	सर्भति	उ
सेक	१	गतौ	सेकते	ङ ऋ
सेल	१	चालगत्यौ	सलति	ऋ
सेव	१	सेवने	सेवते सेवा	ऋ ङ
से	१	क्षियां	सायति	
स्कद	१	उत्प्लुत्यगमने, आपवेउद्धृते	स्कन्दते वानर शाखा	इ ङ
स्कद	१	शोषण गतौ	स्कदति हिमेन तरु	इर् आ
स्कभ	१	प्रतिबन्धे	स्कम्भते	इ ङ
स्कु	९	आवरणे	स्कुनाति कर्णं—बाणरेर्जुन	ग अ ङ
स्कुद	१	आप्रवणे	स्कुदते शाखा मृगोवृक्षा द्वृक्षान्तर	इ वि
स्खद	१	स्खदने विदारे	स्खदते मूलं पाथ	ङ म प
स्खल	१	चयचलयो	स्खलति	मि
स्तक	१	प्रतिघाते	स्तकति	म
स्तन	१	शब्दे	स्तनति	मि
स्तन	१०	मघशब्दे	स्तनयति घन	क त
स्तभ	१	स्तम्भे	स्तम्भते	इ ङ
स्तूप	१०	समुच्छ्राये	स्तूपयति गोधूम—वैश्य स्तूप	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्तूप	४	समुच्छ्राये	स्तूप्यति धान्यं—स्तूपः	य इर्
स्तृ	५	आच्छादने (त.) प्रीतिरक्षाप्राणनेषु	स्तृणोति (वा) स्तृणुते या सखा देहं विस्तृतः-ता-तं	न ञ
स्तॄ	९	आच्छादने	स्तृणाति (वा) स्तृणीते गगनं मेघः स्तीर्णः णा—णं	ग ञ गि
स्तृक्ष	१	गतौ	स्तृक्षति	
स्तृह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
स्तृ	९	छादने-वधेच	स्तृणाति	ग गि
स्तृंह	६	वधे	स्तृंहति	श ऊ
स्तेन	१०	चौर्ये	स्तेनयति धनं स्तेनः	क त
स्तेप	१०	क्षेपे	स्तेपयति	क
स्त्यै	१	शब्दसंघाते	स्त्यायति लोकः	
स्तोम	१०	श्लाघायां	स्तोमयति स्तोमः	क त
स्थग	१	संवरणे	स्थगति	म ए
स्थल	१	संचये-स्थाने	स्थलति धर्मे मुनिः स्थलं स्थली	ज
स्थूल	१०	परिबृंहणे	स्थूलयति स्थूलः ला लं	क त ङ
स्निह	१०		(इति ष्णिह)	क
स्पद	१	किंचिच्चलने	स्पंदतिवाजिन	इ

धातु.	गण	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्पर्द्ध	१	परपराभवेच्छायां संघर्षे	स्पर्द्धते कर्णोर्जुनं स्पर्द्धा	ङ
स्पर्श	१०	ग्रहणे लेपे	स्पर्शयते	क ङ
स्पश	१	बाधने ग्रंथेच	स्पशति (वा) स्पशते स्पशः	ञ
स्पृ	५	प्रीतिरक्षाप्राणनेषु	स्पृणोति	म
स्पृश	६	संस्पर्शे	स्पृशति पुत्रं पिता	श ओ
स्पृह	१०	ईप्सायां	स्पृहयति गंगायै मुनिः स्पृहा	क त
स्फट	१	भेदे	स्फटति	इ
स्फट	१०	भेदे	स्फाटयति	क
स्फर	६	स्फुर्त्तौ चले	स्फरति	
स्फल	६	स्फुर्तौ—चाले.	स्फलति	श
स्फाय	१	वृद्धौ	स्फायते स्फायः स्फाति (वा) स्फायति स्फीतः स्फीतवान्	ई ञ
स्फिट	१०	वृत्यां—अनादरेहिंसे	स्फेटयति	
स्फुट	१	विकसने	स्फोटते (वा) स्फोटति कुसुमं	ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्फिट्ट	१०	हिंसायां	स्फिट्टयति नकुलः सर्पं वने	क
स्फुट	६	विकशने	स्फुटति पुष्पं स्फुट टा टं	श शि
स्फुट	१	विसरणे	स्फोटति पुष्पं	इर्
स्फुट	१०	विसरणे	स्फोटयति	क त
स्फुट	१०	भेदे	स्फोटयति	क
स्फुट	१०	परिहासे	स्फुंटयति भगिनी पतिं-श्यालः	क इ
स्फुट्ट	१०	अनादरे	स्फुट्टयति	क
स्फुट	१	विकशने विशरणेच	स्फुंटयति	इ
स्फुड	६	संवृत्तौ	स्फुडति	श
स्फुड	१०	परिहासे अनृतमा-पणेच	स्फुंडति (वा) स्फुंड-यति	इ कि
स्फुर्	६	स्फुरणे—संचलनेच	स्फुरतिनेत्रं	श शि
स्फुर्छ	१	विस्मृतौ	स्फूर्छति विष्णुं भोगी	आ
स्फुर्जै	१	वज्रानिर्घोषे	स्फूर्जति वज्त्रः	टु औ आ
स्फुल	६	स्फुर्त्तौ चये चले	स्फुलति	श शि
स्मि	१	ईषद्धासे	स्मयते स्मयः स्मितं	ङ
स्मि	१०	अनादरे	स्मययति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्मिट	१०	अनादरे स्नेहे	स्मेटयति	क
स्मील	१	निमेषणे	स्मीलति	
स्मृ	१	आध्याने	स्मरति सपितृगृहं	
स्मृ	१	चिंतायां	स्मरति अपस्मार.	म
स्यद्	१	किंचिच्चलने	स्पदतेलोचने	इ ङ
स्यन्द्	१	स्रवणे	स्पंदते जल कलशात्	उ व इ ऌ
स्यम	१	वनने	स्यमति	प ण उ
स्यभ	१०	वितर्के	स्यामयति (वा) स्याम यते विप्र	क ञ
स्यम	१०	ध्याने	स्यमयति	क त
स्यल	१०	वितर्के	स्यालयति	क
स्रक	१	गत्या	स्रकते	क इ
स्रह	१	विश्वासे	स्रहते	इ उ ऌ औ
स्रभ	१	विश्वासे	स्रभते मित्रेनर	इ उ ऌ
स्रम	१	प्रमादे	स्रभते विद्यायैं मूर्ख	इ उ
स्रंस	१	प्रमादे	स्रसते स्वार्थे लोक	इ उ
स्रस	१	अवस्रसने	स्रंसते वृक्षात्पत्र स्रस्त ना त	उ इ ऌ
स्रिभ	१	हिंसे	स्रेभति	उ
स्रिम्भ	१	हिंसे	स्रिम्भति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्त्रिव	४	गतिशोषणयोः	स्त्रीव्यति रविः पयः स्त्रीव्यतियात्रायै गंगा सिष्णासुः	उ य
स्त्रु	१	अर्तौ—गतौ	स्त्रवति	
स्त्रेक	१	गतौ	स्त्रेकते	ऋ ङ
स्त्रै	१	पाके	स्त्रायति दुग्धं	
स्लिट	१	स्नेहे	स्लेटति	
स्वग	१	मर्पणे	स्वंगति	इ
स्वंज	१	आलिंगने	स्वंजते	ङ ओं ञ
स्वद	१	आस्वादने	स्वदते	ङ
स्वद	१०	आस्वादने	(आ उपसर्गे) आस्वादयति पयोयतिः	क
स्वन	१	शब्दे	स्वनति	ण
स्वन	१०	शब्दे	स्वनयति	क त
स्वन	१	शब्दे	स्वनयति (वा) स्वानयति भेरीं नटः	मि
स्वन	१	अवतंसने	स्वनयति केशं कुंकुमेने नारी	क
स्वव	१०	आक्षेपे	स्ववयत्यर्जुनं कर्णः	क त
स्वर	१०	आक्षेपे	स्वरयति	क त
स्वर्द	१	आस्वादने	स्वर्दते गुडं बालः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्वर्त्त	१०	गतौ आतंके	स्वर्त्तयते	क
स्वस्क	१	गत्या	स्वस्कते	ङ
स्वाद	१	आस्वादे	स्वादते स्वादु	
स्वृ	१	शब्दोपतापयोः	स्वरति	
स्तृ	९	हिंसने	स्तृणाति (वा) स्तृणीते	ग गि ञ
स्वेक	१	गत्या	स्वेकते	ङ ऋ
हट	१	त्विषि	हटतिचद्र. हाटक	
हठ	१	बलात्कारे (वा) कीलबन्धे, प्लुतौ	हठतिराजा	
हद	१	पुरीषोत्सर्गे	हदतेरोगी	ङ
हन	२	हिंसागत्यो	हन्ति हनति अहनत् जघान कंसकिलवासुदेवः	ल
हम्म	१	गतौ	हम्मति	
हय	१	गतौ क्लमे	हयति हयः हायनं	
हर्य्य	१	क्लमे–गतौ	हर्य्यति	
हल	१	विलेखे	हलति	
हस	१	हसने	हसति हसः हासः हास्यं	ए
हा	३	गतौ	जिहीते	लि ङ ओ
हा	३	त्यागे	जहाति गेहं यतिः	लि क ओ
हि	५	गतौ वर्द्धने	हिनोति	न
हिक्क	१	अव्यक्तेशब्दे	हिक्कति (वा) हिक्कते	ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हिक्क	१०	हिंसायां	हिक्कयते. हिक्का	क ङ
हिड	१	अनादर—गतौ	हिंडते	ऋ ङ इ
हिढ	१	आक्रोशे	हेढति चोर भयान्नर:	
हिढ	९	भूतप्रादुर्भावे	हेढ्णाति	ग
हिल	६	हावकरणे	हिलति हेला	श
हिल्लोल	१०	दोलने	हिल्लोलयति	क त
हिव	१	प्रीतौ	हिवति	इ
हिस	१-१०	हिंसायां	हिंसति (वा) हिंसयति	कि इ
हिस	७	हिंसायां	हिनस्तिरिपुं हिंसा	ध इ
हु	३	दानादनयो: प्रीणनेच	जुहोति पायसं विष्णवे, जटाधर: सन्‌जुहुधीहपावकं जुहोति सवर्प्रलयाग्नि:	लि
हुड	१	संघाते, वर्णेच	हुंडते	इ ङ
हुड	६	संघाते मग्ने	हुडति धान्यं	श शि
हुड	१	गतौ	होडति	ॠ
हुल	१	गतौ छदि	होलति	ज
हूर्छ	१	कौटिल्ये	हूर्छति मल:	आ
हूड	१	गतौ	हूडते	ऋ ङ
हृ	१	हरणे	हरति (वा) हरते गंधं वायु:	ञ

धातु	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हृ	३	प्रसह्यकरणे	जहर्त्ति परनारीं दुष्टः	लि र
हृष	१	अलीके	हर्षति खलः साधुं	उ ञि
हृष	४	तुष्टौ	हृश्यति हृष्ट. टा टं हृष्टिः	य उ ञि इर्
हेट	१	बाधायां	हेटति	
हेठ	१	बाधायां	हेठतेरिपुं बली हेठः	ङ ऋ
हेड	१	वेष्टने	हेडति	म
हेड	१	अनादरे, गतौ	हेडते	ऋ ङ
हेप	१	गतौ	हेपते	ऋ ङ
हेष	१	अव्यक्तशब्दे	हेषते हयः हेषा	ङ
होड	१	अनादरे, गतौ	होडते	ऋ ङ
हौड	१	गतौ	हौडते	ऋ ङ
ह्नु	२	अपनयने	ह्नुतेदुर्जनं सुजनः	ल ङ
ह्मल	१	चलने	ह्मलति	म
ह्लग	१	संवरणे	ह्लगति	म ऐ
ह्णी	११	रोषे लज्जायांच	ह्णीयतेकलहांतरितापरासक्ताय	ङ ट
ह्लेप	१	गतौ (अथवा) हयशब्दे	ह्लेपते ह्लेषति	ऋ ङ
ह्लस	१	शब्दे	ह्लसति	
ह्लाद	१	अव्यक्तेशब्दे	ह्लादतेमेघः	ङ
ह्री	३	लज्जायां	जिह्रेतियवनसेवयाद्विजः	लि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ल्हीछ	१	लज्जायां	ल्हीछति	
ल्हुड	१	गतौ	ल्हुडते	ऋ ङ
ल्हूड	१	गतौ	ल्हूडते	ऋ ङ
ल्हौड	१	गतौ	ल्हौडते	ऋ ङ
ल्हग	५	संवरणे	ल्हगति	म ए
ल्हप	१०	व्यक्तायांवाचि	ल्हपयति संस्कृतं मनीषी	क
ल्हस	१	शब्दे	ल्हसति	
ल्हाद	१	सुखे स्वने	ल्हादते पिता पुत्रेण आ-ल्हादः	ङ
ह्वल	१	चलने	ह्वलति ह्वलयति	म
ह्वृ	१	कौटिल्ये संवरणेच	ह्वरति खलः	
ह्वे	१	स्पर्द्धायां-वाचि	ह्वयति (वा) ह्वयते चाणूरः कृष्णं आह्वयते पुत्रं पिता आह्वानं	ञ ए
		सौत्राः	(सूत्राणि)	
उड	१	संहतौ	ओडति	
उद्द	१	आघाते	उद्दति	
उर	१	गतौ	ओरति	
उल	१	दाहे	ओलति	
ऋश	१	गतिस्मृत्योः	अर्शति	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कज	१	रुहे	कंजति	इ
कप	१	चलने	कपति	
कर्क	१	हासे	कर्कति	
कुठ	१	छिदि	कोठति	
कुत	१	आस्तृतौ	कोतति	
क्षद	१	शुभे–शोभे	क्षन्दति	इ
क्षद	१	संवृतौ	क्षदति	
क्षुप	१	स्वादे	क्षोपति	
चक	१	भ्रांतौ	चंकति	इ
डिम	१	हिंसे	डेमति	
तद्र	१	सादे–मोहे	तंद्रति तंद्री	इ
तल	१	गतौ	ललति	
धम	१	ध्वाने	धमति	
नट	१	साधे	नटति	
नड	१	वाते	नडति	
नूप	१	हिंसने	नूपति	
पज	१	रोधे	पंजति	इ
पीय	१	प्रीणने	पीयति	
पुत्त	१	गतौ	पुत्तति	
भिष	१	रुग्जये	भेषति भिषजः भेषजं	
मज	१	स्वनौ	मंजति	इ

 20814

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मट	१	सादे	मटति	
युप	१	भजने	योपति योपित्	
रिफ	१	कुत्सने	रेफाति रेफः फा फं	र
रश	१	स्वने	रशाति	
लत	१	वाते	लताति	
लुल	१	विमर्द्दे	लोलति	
वट	१	स्तेये	वटाति	
वड	१	आरोहणे	वडति	
विभ	१	रवे	वेभते	
शल्ल	१	गतौ	शल्लाति	
शिक	१	सेचने	सेकाति सिकता	
सातशात	१०	सुखे	सातयाति शातयाति	
सुद	१	शोभे	सुन्दाति सुन्दरः रा, रं	इ
स्कंभ	५-९	रोधने	स्कभ्नोति (वा) स्कभ्नाति	न ग उ
स्कुंभ	५-९	रोधने	स्कुभ्नोति (वा) स्कुभ्नाति	न ग उ
स्तंभ	५-९	रोधने	स्तभ्नोति (वा) स्तभ्नाति	न ग उ
स्तुभ	५-९	रोधने	स्तुभ्नोति (वा) स्तुभ्नाति	न ग उ

समाप्त.

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी वृ.	कौमुदी प्र.	सारस्वत. वृ.	सारस्वत. प्र.
अ	अइतिअकारउच्चारणार्थः	२	१	२	१
आ	आकारेत्त्वंप्रफुल्तइत्यादौ आदितश्चेति इडभावार्थम्	३	२	३	२
इ	इदित्त्वं नंदतीत्यादौ इदितोनुम् धातोरितिनुमर्थम्	२	१	२	१
इर्	इरित्त्वं अच्युतत् अच्योतीत् इत्यादौ इरितोवेति च्लेरङ्विकल्पार्थम्	२	१	२	१
ई	ईदित्त्वं उन्नउत्तः इत्यादौ श्वीदितो-निष्ठायां इतिइण् निषेधार्थम्	३	२	३	२
उ	उदित्त्वं शमित्वा शांत्वा इत्यादौ उदितोवा इतिइड् विकल्पार्थम्	३	८	३	९
ऊ	ऊदित्त्वं स्वरति सूति सूयति धूञूदितोवा इति सेद्धा सेधिता इत्यादौ इड्विकल्पार्थम्	२	१	२	१
ऋ	ऋदित्त्वं अलुलोकत् इत्यादौ नाग्लोपिशास्वृदितामिति ऱ्हस्वनिषेधार्थम्	२	१०	२	२७
ॠ	ॠइतिण्यंते ऱ्हस्व विकल्प सूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
ऌ	ऌदित्त्वं अगमत् असदत् इत्यादौ पुषादिद्युताद्यॢदितः परस्मैपदेषु इति च्लेरङर्थम्	२	१	२	१

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		पृ.	प्र.	पृ.	प्र.
लृङ्	लृडिति द्युतादि गण सूचनार्थः संकेतः	२	१	२	२
ए	एदित्वं अपथीत् अमथीत् इत्यादौ ह्र्यंतक्षणश्वसजागृणिश्व्येदितां इति वृद्ध्यभावार्थं	२	१	२	१
ऐ	ऐकारो भ्वादिगणे यजादित्वात्संप्रसारण सूचनार्थः संकेतः	२	१	२	१
ओ	ओदित्वं पीन इत्यादौ ओदितश्चेति-निष्ठानत्वार्थम्	३	२	३	२
औ	औकार आर्द्धधातुकेइण्निषेधसूचनार्थः	२	१	२	१
क	क इति अंतिमस्य चुरादिगणस्य संकेतः	२	१०	२	२१
कि	कि इति प्रथमदशमगणयोः प्रयोगविकल्पसूचनार्थः संकेतः	२	१०	२	२१
क्ष	क्ष इति जक्षादिगणसंकेतः	२	२	२	४
ग	ग इति क्र्यादि गण सूचकः संकेतः	२	९	२	२३
गि	गि इति नवम गण मध्येप्वादि गणसूचकः संकेतः	२	९	२	२३
घ	घ इति अदादिगणांतःपातिरुदादि गणसूचकः संकेतः	२	२	२	४
ङ	ङित्वमनुदात्तङित इत्यात्मने पदार्थम्	२	१	२	१

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
ज	ज इतिभ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांत:पातिज्वलादिगणसूचकः संकेतः	२	१	०	०
ञ	ञित्त्वंऊर्णोति ऊर्णुते इत्यादौस्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले इत्युभयपदार्थम्	२	१	२	१
ञि	ञीत्त्वं इद्ध इत्यादौ ञीतःक्त इति वर्तमानेक्त प्रत्ययार्थम्	३	२	३	२
ट	ट इति षोडशप्रकरणरूपक कंड्वादिगणसूचनार्थः संकेतः	२	१६	०	०
टु	ट्वित्त्वंवेपथु रित्यादौ ट्वितोऽथुच् इति अथुच् प्रत्ययार्थम्	३	८	३	६
डु	ड्वित्त्वं पक्त्रिममित्यादौड्वितः क्त्रिरिति प्रत्ययार्थं केचित् त्रिमक् इति वदंति	३	८	३	६
ण	ण इतिभ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांत:पातिफणादिगण सूचकः संकेतः	२	१	२	१
त	त इति अंते अकारलोपाभाव सूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
द	द इतितनादिसंज्ञकअष्टमगण सूचकः संकेतः	२	८	२	१९

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
ष	ष इति रुधादिसंज्ञकसप्तमगण सूचकः संकेतः	२	७	२	१६
न	न इति स्वादिसंज्ञकपंचमगणसूचकः संकेतः	२	५	२	१२
प	प इतितुदादिसंज्ञकषष्ठगणांतःपातिमुचादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	१०
भ	भ इति दिवादिसंज्ञकचतुर्थगणांतःपातिशमादिगणसूचक.संकेतः	२	४	२	१०
म	म इति भ्वादि संज्ञकप्रथमगणांतःपाति घटादिगणसूचकः संकेतः	२	१	२	२
मि	मि इति घटादिगणस्थत्वे विकल्पसूचकः संकेतः	२	१	०	०
य	य इति दिवादिसंज्ञकचतुर्थगण सूचकः संकेतः	२	४	२	१०
र	र ईति श्रुति मात्रस्थ धातुसूचकः संकेतः	२	२	०	०
ल	ल इति अदादिसंज्ञकद्वितीयगणसूचकः संकेतः	२	२	२	४
लि	लि इति व्हादिगणसूचकः संकेतः	२	२	२	७
लु	लु इति अदादिसंज्ञकद्वितीय गणांतःपातिस्वपादिगणसूचकः संकेतः	२	२	२	४

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
व	व इति भ्वादिसंज्ञक प्रथम गणांतः पातिवृतादिगण सूचकः संकेतः	२	१	२	२
श	श इति तुदादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२०
शि	शि इति तुदादिसंज्ञक षष्ठ गणांत पातिकुटादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२१
ष	षित्त्वं जरा त्रपा इत्यादौ स्वधिकारे षिद्भिदादिभ्योऽङ् इति अङ् प्रत्ययार्थम्	३	८	३	८

यत्र (ङ) कारोऽथवा (ञ) कारोऽनुबन्धो नागछेतत्र परस्मैपदं विज्ञेयं यत्रगणसूचकोऽक्षरो नागछेत्तत्र भ्वादिगणो विज्ञेयः ये वकारवत्सु धातुषु न ज्ञायन्ते ते वकारवत्सु विज्ञेयाः ये षकार वत्सु न ज्ञायन्ते ते सकारवत्सु विज्ञेयाः

एतद्धातुमञ्जर्य्याख्यग्रन्थस्यान्ते सौत्रधातवोविज्ञेयाः

गणसंकेतार्थसूचना.

१ भ्वादि. २ अदादि ३ जुहोत्यादि ४ दिवादि. ५ स्वादि. ६ तुदादि. ७ रुधादि. ८ तनादि. ९ क्र्यादि. १० चुरादि. ११ कंड्वादि.

शुद्धिपत्रम्.

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	८	अङ्कति	अङ्कति
२	२	गतिनिन्दारभजवेषु	गतिनिन्दारंभजवेषु
२	२	अञ्चति	अञ्चति
,,	४	अञ्च	अन्च
,,	१७	अड	अह
,,	,,	अड्नोति	अन्होति
३	११	घा	न्धा
,,	१४	अम्भते	अम्भते
४	६	याचकोऽर्थ	याचक्रोऽर्थ
,,	७	अर्द्द	अर्द
,,	८	अर्द्दति (वा) अर्द्दते	अर्दति(वा)अर्दते
,,	९	अर्द्दयति अर्द्दते	अर्दयति अर्दते
,,	,,	अर्द्द	अर्द
,,	११	अर्द्दति	अर्दति
,,	१२	नार्द्दति	नार्दति
,,	९	अर्द्द	अर्द

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	१०	अर्व्वं	अर्वं
,,	११	अर्व्वे	अर्वे
,,	१३	अर्द्दयति (वा) अर्द्द-यते	अर्दयति(वा)अर्दयते
,,	१४	अर्व्वति	अर्वति
,,	१५	अर्व्वति	अर्वति
५	२	केशं	केशान्
,,	६	अंशः	अंश
,,	९	अंश	अंशः
,,	१०	दीप्तिगतिग्रहेषु	दीप्तिगतिग्रहेषु
६	१०	इछायां	इच्छायां
,,	१४	अधिउपसर्गे	अभिउपसर्गे
७	१	इध	इन्ध्
,,	३	इर्ष्यायां	ईर्ष्यायां
,,	४	इरज	इरज्
७	४	इर्ष्यायां	ईर्ष्यायां
८	७	इन्ताति	ईन्तति
९	४	६	१
,,	,,	उछे	उञ्छे
,,	,,	उछति	उञ्छति
,,	५	निवासे	विवासे

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	,,	उछति	उच्छति
,,	९	उदकः	उदकं
१०	१	आछादने	आच्छादने
,,	२	उर्दते स्वर्णं	ऊर्दतेस्वर्णं
,,	६	उंहति	ओहति
,,	१२	आछादने	आच्छादने
११	२	ऋक्षणोति	ऋक्षिणोति
,,	३	ऋच	ऋच
,,	,,	ऋचति ऋक्	ऋचति ऋक्
,,	४	ऋछ	ऋच्छ
,,	७	ऋच्छति	ऋच्छति
,,	८	उर्जने	उपार्जने
,,	९	भ्रजे	भर्जने
,,	,,	ऋंजते	ऋञ्जते
,,	१६	धा धं	द्धा द्धं
,,	१८	धा धं	द्धा द्धं
१२	४	ऋषिः	ऋषिः
,,	१४	शाषणालमथयोः	शोषणालमर्थयोः
१३	७	केशं	केशान्
१४	९	काण	काणः
१६	१४	१	१०

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	५	कशति समूलकाशं	कषति समूलकाषं
,,	८	बधनयोः	बन्धनयोः
,,	९	कालोपदेशे	कलोपदशे
१६	१६	भयभीषयोः	भयभीषणयोः
१७	१६	काञ्ची	कान्ची
,,	१८	संकाच	संकोचः
१८	१	कुञ्च	कुन्च
,,	७	१	१०
,,	१८	कुडते	कुण्डते
१९	१०	स्मृतै	स्मृतौ
,,	१४	लुभ	कुभ
२०	७	कुष्णाति	कुष्णांति
,,	१२	बीस्मारेण	विस्मारणे
२१	११	कुञ्ज	कुन्जते
२३	७	क्रन्दते	क्रन्दते
,,	९	आप्रत्यये	अप्रत्यये
२४	१	क्रुञ्च	क्रुन्च
,,	,,	कौटिल्याल्पी भावयोः	कौटिल्याल्पीभावयोः
,,	,,	क्रुञ्चति	क्रुञ्चति
,,	५	धा धं	ध्रा ध्रं
,,	९	दुगन्धार्दत्वयोः	दुर्गन्धार्द्रत्वयोः

पृष्टांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	१२	क्र	क्रू
,,	,,	क्रुणाति क्रुणीते	क्रूनाति क्रूनीते
२५	२	ना नं	न्ना न्नं
,,	,	परिवेदने	परिदेवने
,,	८	ता तं क्लन्ति	न्ता न्तं क्लान्तिः
,,	७	कीव	क्लीव
,,	१९	कृच्छ्रजीवेन	कृच्छ्रजीवने
,,	,,	क्षञ्चयाति	क्षञ्जयाति
२६	९	शाक्तौ	शक्तौ
,,	१४	क्षि	क्षी
२७	१	माचेने	मोचने
,,	१७	जमः	जनः
२८	५	क्षुपधं धा धं	क्षुब्धः ब्धा ब्धं
२९	३	खच	खज
,,	६	खट्टयावि	खट्टयति
३०	३	दशने	दंशने
,,	,,	खर्व्व	खर्व
,,	,,	खर्व्वति खर्व्वः	खर्वति खर्व
,,	४	खर्व्व	खर्व
,,	,,	खर्व्वति	खर्वति
३२	१२	गर्ज्ज	गर्ज

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	,,	गर्ज्जति	गर्जति
,,	१२	गर्ज्ज	गर्ज
,,	,,	गर्ज्जयति	गर्जयति
,,	१४	गर्द्द	गर्द
,,	,,	गर्द्दति	गर्दति
,,	१५	गर्द्दयति	गर्दयति
,,	१५	गर्द्द	गर्द
,,	१६	गर्ध्धयति	गर्धयति
,,	१७	गर्व्ब	गर्ब
,,	,,	गर्व्ब	गर्बति
,,	१८	गर्व्व	गर्व
,,	,,	गर्व्वति	गर्वति
२२	१	गर्व्व	गर्व
,,	१६	शद्वे	अव्यक्तेशब्दे
२४	२	गुञ्ञा	गुञ्जा
,,	३	गुष्ठयति	गुष्ठयाति
,,	९	क्रीडे	क्रीडायां
,,	१९	गुर्द्द	गुर्द
,,	,,	गुर्द्दति	गुर्दति
२५	१	गुर्द्द	गुर्द
,,	,,	निकेतने.	पूर्वनिकेतने

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	,,	गुर्द्द्यति	गूर्दयति
,,	७	गूर्द्द	गूर्द
,,	७	गूर्द्दते (क) गूर्द्दयति	गूर्दति (वा) गूर्दयति
,,	१६	गतिचालयोः	गतिचलनयोः
३६	१	अन्वेच्छायां	अन्विच्छायां
३७	९	घग्ग	घग्ग
,,	,,	घग्गति	घग्गति
,,	११	घटयति	घाटयति
,,	१३	घट्टः	घट्ट
,,	१७	घर्व्व	घर्व
,,	,,	घर्व्वति	घर्वति
३८	१२	शद्दे	अविशद्दे
,,	१८	घूर्णति क्षीवः	घूर्णते क्षीबः
३९	१२	व्यसने	व्ययने
,,	,,	चक्रयति	चक्कयति
४०	९	?	१०
,,	,,	चनति	चनति (वा) चानयति
,,	१३	चपति (वा) चपयति	चम्पति (वा) चम्पयति
४१	४	असंशये	संशये

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	१	चर्चते	चर्चति
,,	,,	चर्च्च	चर्च
,,	,,	परिभाषणतर्ज्जनयो.	परिभाषणभर्त्सनयो:
,,	,,	चर्च्चति	चर्चति
४१	७	चर्च्च	चर्च
,,	,,	चर्च्चयते चर्च्चा	चर्चयते चर्चा
,,	८	चर्ब्ब	चर्ब
,,	,,	चर्ब्बति	चर्बति
,,	९	चर्व्व	चर्व
,,	९	चर्व्वति (वा) चर्व्वय-ति चर्व्वणं	चर्वति (वा) चर्वयति चर्वणं
४२	९	चययति	चययति (वा) चप-यति
,,	१२	संवेदने	संचेतने
,,	१७	हावकृतौ	भावकृतौ
४३	१	आमर्यणे	आमर्षणे
,,	८	व्यसने	न्ययने
,,	११	चांटयति	चोटयति
,,	२०	हावकरणे	भावकरणे
४४	५	चुव	चुब
,,	७	चुर	चूर

पृष्टांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	११	हावकरणे	भावकरणे
४५	६	हानौ	हासे
,,	१०	उर्ज्जने	ऊर्जने
,,	१६	११	१०
४७	७	चर्च्च	चर्च
,,	,,	परिभाषणतर्ज्जनयोः	परिभाषणतर्जनयोः
,,	९	परिभाषणतर्ज्जनयो.	परिभाषणतर्जनयोः
४७	९	मर्ज्ज	जर्ज
४७	,,	परिभाषणतर्ज्जनयोः	परिभाषणभर्त्सनयोः
,,	,,	नर्ज्जति	जर्जति
४८	३	जंसयति	जंसयति जंसति वा
४९	४	परितकणे	परितर्कणे
,,	७	जूर्व्व	जूर्व
,,	,,	जूर्व्वति	जूर्वति
,,	११	न्यक्कारे	न्यक्कारे
,,	१४	जीर्ण्ण	जीर्णः
,,	१६	जीर्ण्णः	जीर्णः
,,	१७	जरति (वा) जरयति	जरति (वा) जारयति
५१	५	परिभाषणतर्ननयो.	परिभाषणभर्त्सनयोः
,,	११	झीर्य्यति	झीर्यति
,,	१२	टण्कयति टण्कःविटण्कः	टङ्कयति टङ्कः विटङ्कः

पृष्ठांक.	पत्तयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१२	१९	नखति	नङ्खति
१२	९	प्रन्हशद्धे	मन्हत्वे शद्धे च
,,	१०	णर्द्द	णर्द
,,	१०	नर्द्दः	नर्द
१४	१	श्रुद्धौ	शुद्धौ
,,	,,	प्राणिस्के	प्राणिको
,,	९	निस्ते	निंस्ते
,,	१२		स्थौल्ये
१५	६	तगाति	तङ्गति
,,	७	संकुची	संकोचने
१६	३	तपेत (वा) तापयते	तपति (वा) तापयति
,,	११	तर्ज्जयते	तर्जयते
,,	१२	तर्व्व	तर्ब
,,	,,	तर्व्वति	तर्बति
१७	४	जिघांसायां	गतौ
,,	५	जिघांसायां	गतौ
,,	६	स्कन्दनेच	आस्कंदने च
,,	८	क्षमाय च	क्षमायां च
,,	१६	वातां	वार्तां
१८	२	समासो	कर्मसमासौ
,,	४	गतिवृध्रिवृत्तिहिंसापूत्तेंपु	गतिवृद्धिहिंसापूर्तेषु

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	१९	स्तृतौ	आवरणे
५९	४	तर्हने	तर्दने
,,	७	तुपति	तुम्पति
,,	११	भोजने	भोजनेन
६०	१०	चरणे	त्वरणे
,,	१०	तूर्य्यते	तूर्यते
६१	१	तर्प्पति (त) तर्प्पयति	तर्पति (त) तर्पयति
,,	१०		६
,,	१०	तृहति	तृंहति
६२	१०	ग्रहनिषेधेद्युतौ	ग्रहनिषेधे द्युतौ
६३	१	त्वक्ष्वति	त्वक्षति
,,	२	गतिकम्प्ययोः	गतिकम्पयोः
,,	१५	दघ	दघ
,,	,,	दघ्नोति	दघ्नोति
,,	१६	दण्डनीपातने	दण्डनिपातने
६४	१२	दश	दंश
,,	१३	दश	दंश
,,	१४		१
,,	१७	दंसयते गात्रं	दंसयते दंसति वा गात्रं
६५	६	आर्ज्जवे	आर्जवे
,,	८	वर्द्धकि	वर्द्धकि।

पृष्ठांक.	पङ्क्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६६	१३	मेतादशेच	म्रतादेशे च
६७	१२	सहज्ञाय	सयज्ञाय
,,	१	उंपतपे	उपतापे
,,	१०	आदाने	आदरे
,,	,,	१–१	१–१०
६८	१	द्दफ	द्दंफ
,,	,,	द्दफति	द्दम्फति
६९	१	निद्राया	निद्रायां
,,	४	द्राद्य	द्राघ
,,	,,	द्राद्यते	द्राघते
,,	१३	द्राहः	द्रोहः
,,	१६	द्रू	द्रु
,,	,,	द्रायाते. रात्रौ लोकः	द्रायति रात्रौ लोकः
७०	१	द्रूषति (वा) द्रूषते	द्रेषति (वा) द्रेषते
,,	६	२	३
,,	,,	श्रुद्धौ च	शुद्धौ च
७१	१	९	१
,,	९	अधारे	आधारे
७१	१२	हिसायां	हिंसायां
७२	१	कपेन	कम्पने
,,	४	केसरपुष्पंजातं	केसरपुष्पजातं

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	११	कुंकुमे जनः	कुंकुमेन जनः
७३	४	धर्पयते	घर्षयते
,,	८	कपार्द्दिनं	कपर्दिनं
,,	१६	उत्क्षेमे	उत्क्षेपे
,,	१७	ध्व्रणति	ध्वणति
७४	४	धाड	ध्राड
,,	७	गतिस्थैर्य्ययोः	गतिस्थैर्ययोः
,,	१९	धनुर्द्धन्वी	धनुर्धन्वी
७६	३	याञ्चोपतापैश्वर्य्यासीःषु	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु
,,	५	याञ्चोपतापैश्वर्य्याशीःषु	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु
,,	९	सचने	सेचने
,,	१३	न	नॄ
,,	१४		नॄ
,,	२०	पतं गोगगने	पतंगो गगने
८०	८	भापद्दार्थे	भापार्थे
,,	१४	क्लीशि	क्लेशे
८१	८	शिभुः	शिशुः
८२	८	भीप्म	भीष्मः
८३	७	पूण्पयति	पूण्ययति
८७	१	फक्काति	फक्कति
८८	२	वर्धते	त्रपते

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८८	१०	बर्व्वे	वर्वे
,,	,,	बर्व्वेति	बर्वेति
,,	,,	वर्धा दीप्तौच	वर्धे दीप्तौ च
,,	१४	दानवधनिरूपेषु	दानवधानिरूपणेषु
९०	११	भ्रूस	भ्रूस
,,	१७	भज्ज	भञ्ज
९२	८	दध्रिभांड	घाधिभाण्डं
,,	१२	भग:	भयं
९५	११	मञ्ज्ञ	मञ्च
,,	,,	मभ्राति	मञ्चाति
९८	१६	मार्ज्ज	मार्ज
,,	,,	मार्ज्जयति मार्ज्जारः	मार्जयति मार्जारः
९९	११	मेवाहिंसयोः	मधाहिंसयोः
१००	१७	आक्षेपप्रमर्द्दनयोः	आक्षेपप्रमर्दनयोः
१०१	१४	कंटकन वार्टी	कष्टकैर्वार्टी
१०३	३	मृद्नाति	मृद्नाति
१०५	७	देवपूजासंगातिकरःणदानेषु	देवपूजासंगतिकरणदानेषु
,,	१६	यछति पापात्साधुः	यच्छति पापात्साधुः
१०६	३	याज्ञायां	याज्ञायां
,,	१२	युछति	युच्छति

पृष्टांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	२०	युध्यत	युध्यते
१०७	१	यूपपते	यूपते
१०८	९	पाशंडी	पापंडी
,,	१४	रामश्य	रामस्ये
१०९	१२	रंहयति	रंहति
,,	१६	राधतेयुध्वायवीरः	राधते युद्धाय वीरः
,,	१४	संसिद्धौ	वृद्धौ
११०	९	रिक्तेरोगी	रिक्ते रोगी
११०	१०	कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसा-दानेपु	कत्थनयुद्धनिन्दाहिं-सादानेपु
१११	७	द्यूतौ	द्युतौ
,,	१७	गत्ालस्यास्तेयखोटे	गत्यालस्यस्तेयोखटे
११२	३	गाप्यः (यथा)	गोप्यः (अथवा)
,,	५	रुणध्मि	रुणद्धि
,,	१२	रोहनि मृतिकाया घटः	रोहति मृत्तिकाया घटः
११३	५	प्लुवे गतौ च	प्लुवगतौ
,,	१५		गतौ
,,	१६		गतौ
,,	१८	स्वादापने	आस्वादने
११४	८	भर्त्सने	भर्जने
,,	९	भर्त्सने	भर्जने

पृष्ठांक.	पत्तयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११६	१	श्लेषणविलसयोः	श्लेषणविलासयोः
,,	,,	लषति	लसति
,,	८	भर्गे च	भर्जने
,,	९	भर्गे च	भर्जने
,,	९	लांजते	लांजति
,,	१६	१	१०
११७	१३	लुंट	लुट
,,	,,	लुंट्यनि	लुट्यति
११८	२	लुंट	लुठ
,,	२	लुंटति (वा) लुंट्यति	लुठति (वा) लुठयति
,,	१०	लण्डयति	लुण्डयति
११९	१०	सूवलनेच	स्खलने च
,,	११	पूर्वभावे स्वने च	पूर्वभावे स्वप्ने च
१२२	८	इप्सायां	ईप्सायां
१२३	२	वद्ध	वर्ध
,,	,,	पूर्त्तिछेद्रोः	पूर्तिछेदनयोः
,,	,,	वद्धयति	वर्धयति
१२४	१४	सुखाप्तिगतिसवोसु	सुखाप्तिगतिसेवासु
१२५	३	वाछति	वाञ्छति
,,	११	विछ	विच्छ
,,	११	विछति	विच्छायति

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	१२	विछ	विच्छ
,,	१२	विछयति	विच्छयति
,,	१३	विवेक्ति	वेवेक्ति
१२६	१२	बिप्र	विळ
,,	१२	विवेप्रयति	वेळयति
१२७	७	वीरयति	वीरयते
१२८	६	वृण्टते	वृणुते
१२८	८	संभक्तो	वरणे
१३०	२	व्यचति	विचति
,,	१५	संस्कृतौ गतौ त्यागेच	मार्गसंस्कारगत्योः त्याग च
,,	,,	व्रि	व्री
१३१	७	व्रीनाति	व्लीनाति
,,	१४	शर्वति	शवति
१३२	४	संस्कारगत्योः	असंस्कारगत्योः
१३३	२	सबुः	शंबुः
१३५	५	शिग्ङ्गति	शिग्घति
१३६	१७	शुध्वः	शुद्धः
१३७	५	शुप	शुंप
,,	१०	सस्या नविनांवृ वाहं	सस्यानि विनांवृवाहं
१३८	२	जठन	जठन

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	१९	श्मील	स्मील
,,	,,	श्मीलति	स्मीलति
१४०	१०	श्रवत्यामध्यटाजलं	श्रुणोति
१४२	६	ष्वग	षग
,,	१०	सेचते	सचते
१४३	२	सघ्नोति	सघ्नोति
,,	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
१४५	४	भैस्ययोः	ऐश्वर्यदीप्त्योः
,,	६	प्राणि गर्भविमोचने	प्राणिगर्भविमोचने
,,	९	क्षेपे	प्रेरणे
,,	१०	क्षणने	क्षरणे
,,	१३	पूक्ष्यें (वा) शूर्ष्ये	पूक्ष्यें (वा) पूर्ष्ये
,,	१७	चालगत्योः	चलनगत्योः
१४६	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
,,	९	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
,,	१०	ष्टल	षुल
,,	१६	आर्द्रीभावे	आर्द्रीभावे
,,	१८	आर्द्रीभावं	आर्द्रीभावे
१४७	१	स्तौवि (वा) स्तुते स्ववः	स्तौति (वा) स्तुतेवः
,,	२	प्रसदे	
,,	७	ष्टेव	

पृष्टांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	७	ष्टेवति	ष्ठेवति
,,	१२	स्यसति	स्यस्यति
१४८	१६	गात्रप्ररक्षणे	गात्रप्रक्षरणे
,,	१९	र्घेमण	घर्मेण
१४९	८	सठ स्वठ	सठ स्वठ
,,	९	सन्तान क्रियायां	सन्तानक्रियायां
,,	११	सर्ज्ज	सर्ज
,,	,,	अर्ज्जने	अर्जने
,,	,,	सर्ज्जति	सर्जति
,,	१७	सर्व्व	सर्व
,,	,,	सर्व्वति	सर्वति
१५१	६	ऐश्वर्य्य दीप्तयोः	ऐश्वर्यदीप्त्योः
,,	७	सूक्ष	सूर्क्ष
,,	,,	सूक्षति	सूर्क्षति
,,	१०	सूत्रणे	सूत्रेण
१५२	६	आपवे उद्धते	आप्लवे उद्धतौ
,,	९	बाणरैर्ज्जुनः	बाणैरर्जुनः
,,	११	स्कुन्दते शाखा मृगोवृ-क्षादक्षान्तरं	स्कुन्दते शाखामृगो वृ-क्षाद्वृक्षान्तरं
,,	१२	विदारे	विदारणे
,,	१३	चथच लयोः	संचलने

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	१९	श्मील	स्मील
,,	,,	श्मीलति	स्मीलति
१४०	१०	श्रवत्यामध्घटाज्जलं	श्रुणोति
१४२	६	ष्वग	षग
,,	१०	सेचते	सचते
१४३	२	सध्नोति	सघ्नोति
,,	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
१४९	४	भैस्ययोः	ऐश्वर्यदीप्त्योः
,,	६	प्राणि गर्भविमोचने	प्राणिगर्भविमोचने
,,	९	क्षेपे	प्रेरणे
,,	१०	क्षणने	क्षरणे
,,	११	पूर्क्ष्य (वा) शूर्ष्य	पूर्क्ष्य (वा) पूर्ष्य
,,	१७	चालगत्योः	चलनगत्योः
१४६	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
,,	९	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
,,	१०	ष्टल	ष्ठल
,,	१६	आद्रीभावे	आर्द्रीभावे
,,	१८	आद्रीभावे	आर्द्रीभावे
१४७	१	स्तौवि (वा) स्तुते स्तवः	स्तौति (वा) स्तुतेवः
,,	२	प्रसदे	प्रसादे
,,	७	ष्टेव	ष्ठेव

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	७	ष्टेवति	ष्ठेवति
,,	१२	स्यसति	स्यस्यति
१४८	१६	गात्रप्ररक्षणे	गात्रप्रक्षरणे
,,	१९	र्घेमण	चर्मेण
१४९	८	सठ स्वठ	सठ स्वठ
,,	९	सन्तान क्रियायां	सन्तानक्रियायां
,,	११	सर्ज्ज	सर्ज
,,	,,	अर्ज्जने	अर्जने
,,	,,	सर्ज्जति	सर्जति
,,	१७	सर्व्व	सर्व
,,	,,	सर्व्वति	सर्वति
१५१	५	ऐश्वर्य्ये दीप्तयोः	ऐश्वर्यदीप्त्योः
,,	७	सूक्ष	सूर्क्ष
,,	,,	सूक्षति	सूर्क्षति
,,	१०	सूत्रणे	सूत्रेण
१५२	१	आपवे उद्धते	आप्लवे उद्धतौ
,,	९	बाणरैर्ज्जुनः	बाणैरर्जुनः
,,	११	स्कुन्दते शाखा मृगोवृ-क्षाद्दक्षान्तरं	स्कुन्दते शाखामृगो वृ-क्षाद्वृक्षान्तरं
,,	१२	विदारे	विदारणे
,,	१३	चथच लयोः	संचलने

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१८३	३	स्तृणुतेया ससा देहं	स्तृणुते या ससंदेहं
"	४	आछादने	आच्छादने
"	१४	संचयं–स्थाने	संचये स्थाने च
"	९	स्तृणानि	स्तृणाति
१९४	१०	स्फुर्तौ	स्फूर्तौ
"	११	स्फुर्त्तौ	स्फूर्तौ
१९५	२	विकशने	विकसने
"	३	विसरणे	विशरणे
"	४	विसरणे	विशरणे
"	८	विकशने	विकसने
"	१०	स्फुंटयति	स्फुंटति
"	१२	स्फुर्ज	स्फूर्ज
१९६	६	स्पन्द	स्यन्द
१९६	६	स्पन्दत	स्यन्दते
"	७	६	१
"	"	ध्वनने	शब्दे
"	८	स्यभ	स्यम
१९७	९	स्रेकते	स्लेकते
"	११	पयोयतिः	पयो यतिः
"	१७	केशं कुंकुमेने नारी	केशान् कुंकुमेन नारी
१९८	१	आतके	आतंके

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	७	त्विष्वि	त्विषि
,,	८	हट	हठ
,,	,,	हंटतिराजा	हठति राजा
,,	१०		
१६९	३	चोर भयान्नर:	चोरभयान्नरः
,,	९	हावकरणे	भावकरणे
,,	१०	दानादनयोः	दानादानयोः
,,	१२	सवप्रंलयाग्निः	सर्व प्रलयाग्निः
,,	११	वेर्णच्च	वरेण च
१७०	३	हृश्यति	हृष्यति